राजस्थानी संस्कृति रा
चितराम

राजस्थानी संस्कृति रा
चितराम

जहूरखाँ मेहर

लेक्चरर, इतिहास विभाग

जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

राजस्थान साहित्य मन्दिर

सोजती दरवाजा बाहर, जोधपुर-३४२००१

(The author acknowledges with thanks the financial assistance provided by the University of Jodhpur, for the publication of this book under the University Grant Commission's Scheme of "Publication of Learned Research Works including Doctoral Theses")

पैलड़ी छपाई जनवरी, १९८१

मोल २५ रुपिया

प्रकाशक
सुखवीरसिंह गहलोत द्वारा
राजस्थान साहित्य मन्दिर
सोजती दरवाजा, जोधपुर-३४२००१

मुद्रक
कमल प्रेस
६/५८६६, सुभाष मौहल्ला २, गली १,
गांधीनगर, दिल्ली-११००३१

म्हारा जी-सा अर उणा जेडा सगळा
राजस्थानी साहित अर सस्कृति रा
हेताळुवा ने घणै मान सू अरपण

बानगी

चितराम सामी है। रेखावा रा, रगा रा चितराम नीं है। अे चितराम है सबदा रा। केई सबदा रा चितराम अेडा हुया करै जका सबद री सीव मे रिया करै, अर की चितराम सबद री सीव ने तोडै, सबदा ने नवा अरथा सू भरै, नवा मरम देवै। सबद खुदोखुद चितराम रा उणियारा ने उजागर करै अर चितराम सबद री आतमा नै।

श्री जहूरखाजी मेहर रै उकेरियोडा सबदा रा वेइज चितराम सामी है। बारह चितराम गिणियोडा। पण गिणियोडा चितरामा मे अलेखू चितराम। सबदा रा अेडा चितराम फेर कठैई लिखीज्याव नी, म्हारी देखणी मे कोनी आया। सबदा रा नवा-नवा अरथ, नवा-नवा मरम गैरा अर फेरू गैरा उघडता इज जावै। इचरज व्हे क राजस्थानी भासा सू इदकी ताकत कोई दूजी भासा मे व्हे सकै काई जिणमे सबदा रा अेडा फूटरा चितराम उकेरीज सकै ?

रीत री रायतो अगेजता ओळखाण मे जहूरखाजी राजस्थानी भासा ने दीरिजणिया ओछा मोसा रा पडूत्तर दिया है। चितराम लिखण मे, राजस्थानी भासा रै खिलाफ समै-समै जित्ती बाता कैईजती री है, वारी थोडी-घणी वसक लेखक रा मन में री व्हैला। पण, इण सू ई इदकी बात आ जरूर री व्हैला क मायड भासा रै सिवाय अे चितराम किणी बीजी भासा मे इत्ता सातरा लिखीज ई को सकैनी। मनै लखावै क जहूरखाजी चिन्येक अमरख मे इज आ बात कैई है—

"म्हू दूजा रै मिस बाफरो नी काड रियो हूँ। म्हारै तो साचाणी अे चडका चिपता-चिपता जीव अमूभण ढूक गियो है।"

मनै लखावै क अै चितराम जहूरखाजी रै मन मे वाणै बाळपणै रू उघडण लागा हा। आपरै जोसा री आगळी पकड'र कदैई जोधपुर री कचेडी गिया व्हैला अर सर प्रताप री मूरत देख'र वाणै मन मे कोई चितराम उघडण लागो व्हैला। जी-सा री बतायोडी बाता, हथायां माथै चालता सर प्रताप रा किस्सा अर इतिहास री पोथिया पलटता-पलटता उणा रै हीयै मे सर प्रताप रै चितराम रा कित्ताई उणियारा घर कर

लियो व्हैला। कदैई जुद्ध मे जूझतै जूझार रा, कदैई कुरीता, सदियोड़ी अबखी रीता-रिवाजा ने खतम करण सारू खपतै जूझार रा अर कदैई-कदैई राजस्थानी भासा अर मा बाड री सस्क्रति रै मोद मे गेळीजियोडै जूझार रा अलेखू चितराम उण अेक चितराम मे अघडता इज गिया व्हैला। जद जाय ने वे लिखियौ—

"सर प्रताप कोरा रणखेतर मे जूझणिया इत्तेवडा जूझार इज नी हा। सागैई सामाजिक कुरीता मिटावण खातर जूझिया सो दोवडा जूझार हा। इण दोवडो जूझारी रै सागैई सर आपरी रीत-पात री चोखाया री रुखाळ सारू ई जूझिया सो साचाणी सर ने तेवडो जूझार कैय सका।"

लेखक रै विगतवार कैवण री अेडी बानगी है क अेक-अेक चितराम बाचणियै रै मन मे उतरतो जावै, उण रा नवा-नवा रूप उघडता जावै। अेडो इज अेक चितराम 'बापडो कसाई है। कसाई सबद रो सीधो साधो अरथ हुवै जिनावरां ने छुरी सू हलाल कर'र मास बेचणियो मिनख। पण होळै-होळै ओ सबद कीकर नवा-नवा चितराम उकेरण लागो आ बात इण लेख ने पढिया टाळ समझ मे अगेई नी आवै।

कसाई ने घणो चडाल, जुलमी, नाथावती करणियौ, बहू-बेटी, भाई-भोजाई अर सगळै आपरा ने कूटण अर सतावण आळो समझण री रीत नुवी कोयनी। इण खातर कसाई सबद रा चितराम मे जिनावरा ने काटणियै जुलमी रो चितराम ई उघडै। उण रो नाव गाळ बन ग्यो। लेखक री दीठ कसाई री कळप अर कसक तांई पूगी। अेक मेनती मजूर री उपमा जुलमी सू देवण आळै समाज सारू लेखक ने खीझ उठी अर कसाई ने आपरी पूरी ताकत सू अेक मेनती मजूर रै रूप मे उकेरियो अर उण रै नाव रै सागै जुडियोडी गाळ ने मिटावण री जोरदार कोसिस करी। लेखक रै माडियोडै कसाई रै अेक-अेक चितराम मे नवो रूप अर चोखै मिनख ज्यू जीवण री भावनावा रा नवा-नवा साच उजागर हुवै। लेखक अपा री मया जगावण सारू कैवै—"ऊची-ऊची जाता रा मिनख राज री खातरी खातर भगी भील बिणण ने त्यार पण बापडो कसाई अजै ताई आपने कसाई कैण सू डरै। कैठी कद अर कीकर उण रो लारो छूटैला अर जमारो सुधरैला।"

ऊट'र राजस्थान री धोरा धरती रो घणो नेडो नातो है। पण ऊट लेख पढिया पछै रेगिस्तान री पूरी सस्क्रति सबटीज अर ऊट मे मिळियोडी लखावै। विदवान लेखक री जाणकारी अर उण्डी पूग इण लेख मे बात-बात रै समचै दीसै। राजस्थानीज काई बीजी किणी भासा रो इण गत री इत्तो सातरो लेख म्हारी निजरा सामी अजै तो नी आयो। श्री जहूरखाजी परम्परागत सू अेडै घर सू जुडियोडा है जको सुत्तर रो वेजाड पारखी है। ऊट रा अेक सो सू बेसी न्यारा न्यारा नाव उण री चालढाल, साजगी-मादगी, आडिया, मुहावरा कवित्त अर साड, कुरियै अर ऊट रै सभाव सू जुडियोडा सैकडा सबद इण लेख ने राजस्थानी साहित री अमोल अर अमिट थाती बणा दियो। ऊट रै अेक चितराम मे लेखक उकेर दिया है राजस्थानी सस्क्रति रा रग-बिरगा अलखू चितराम। लेखक री आ बात साव साची दीसण लागै—"मरुखेतर रै टाबरा लुगाया, म [illegible] ।र अर बूढै-ठाढा री जीवारी रै साथै ऊट काठो किड'र जुडियोडो। साचाणी

मरूखेतर रै अगनवोट री कोथळी री पुडदा मे वळेटियोडी है थळो रै मोथा री जुगा-जुगा री करणी।"

अठै फेरू आ वात पाछैऊ खराय दूवै अे चितराम लेखक रा मन मे बाळपणै सू उघडन लागा व्हैला। जदैई तौ ऊट रै चितरास मे लेखक ने दीसै आपरै जी-सा रो वाडदो पकडियोडो चाचियो ऊट, कठैई दीसै चीबी (उछल कूद) करतै कुरियै (ऊट रै छोटे वचियै) साथै नाचता-कूदता नाना टाबरिया अर कठैई निगै आवै चिलमियो ऊट। राजस्थानी सस्क्रति मे पूरा लुथ-पुथ हुया टाळ इण गत रै चितराम री आवरती हुइज नी सकै।

राजस्यान रै गाव-गाव मे तरै तरै री रम्मता लोग जुगा जुगा सू रमै। हरेक जागा री आपरी रम्मत, हरेक रम्मत रा जेडा खेलणिया वेडी रम्मत। देसी रम्मता रो अेडो सजीव चितराम अठैइज देखण मे आयो। राजस्थानी रम्मता रा नाव गिणावतो लेखक चौखड खेल रो पूरो अर रसीलो चितराम उकेरै। अेडो लागै जाणै आखिया रै सामी चौखड रो खेल चलण लागो व्है। केई रम्मता सागै जुडियोडा बोल अर रमती वेळा काम आवण वाळा सबद किणी सबदकोस मे कोनी लाधै पण वैरो उपयोग कियां बिना वै रम्मता रमीजै कोनी। भासा ने ताकत देवण मे अर उण रो विगसाव करण मे लेखक री इण लगन अर मेहनत री जित्ती तारीफ की जावै वा थोडी है।

धिन प्रिथीराज रग प्रिथीराज, बाल्मिकी अर वेदव्यास रो मारवाड, पदमणी, राजस्थान रै इतिहास माथै भूगोल रो असर, राजस्थान रो पैलडो रयात लिखारो नैणसी जेडा सोध-खोज रा लेख होता हुया ई साहित्यिक निबन्ध रूप मे आदरीजैला। हरख री वात है क पैली वार राजस्थान री सोध राजस्थानी मे करीजी है। विद्वान लेखक आज ताई लिख्योडी सामग्री रो खूब अध्ययन-मनन कियो है अर केई विचारा रो खडन या मडन कियो है। लेखक री नीजू मानतावा भी है जिकी उण रै गैरै अध्ययन रो फळ है अर आवता दिना मे प्रमाण ज्यू हवाला रूप मे दिरीजैला।

कळा साहित अर हथाई रा लेख ई राजस्थान री सस्क्रति री अमोली छब दरसावै।

लेखक मूळ रूप सू इतिहासकार है। पण असल मे तो लेखक लेखक इज होवै। सो घणकरा लेखा मे खोज-सोध री नवी सू नवी साच उकेरी है पण वाणै माय सू अेक साथै केई केई चितराम उघडै है। इतिहास अर साहित री द्रिस्टी अेकमेक व्हेगी है। कदैई लागै लेखक इतिहास रा साच सुणावै है अर कदैई लागै साहित रा साच, सुन्दर अर सिव रा दरसाव करावै। चितराम मे आ जोवणो मुसकल लागै क कठै साहित रुकै न कठै इतियास चालु व्है। चितराम मे साहित अर इतिहास अडोअड चलै पण देखणियै ने आ नी दीख सकै क ओ इतिहास है अर ओ साहित। चितराम री आ लूठी सफलता है। अेक चितराम मे अलेखू चितराम अर अलेखू चितरामा मे अेक चितराम उघड-उघड अर अेक इज वात बोलै—

"म्हे मरुधरा रा चितराम हा।"

आ पोथी मरू सस्क्रति रो चितराम है। सावळ गूथीजियोडी राजस्थानी भासा,

अखूट मुहावरा सवेटियोडी होळै होळै आपरै चितराम में उपड़ै अर तद लेखर ने मोखा देवणिया, राजस्थानी भाषा माथै आगळी उठावणियों रो बद छोटो अर ओछो लागै।

श्री जहूरखांजी री इण मू लूठी सेवा माँई हो मर्ण म वे अपाणी सस्कृति रा चितराम साच, सुन्दर अर सिव म सजोय'र दर्साया है। मरुधरा, राजस्थानी भाषा, राजस्थानी साहित अर राजस्थान रा इतिहास रै वास्तै वाणी कलम रो लगातार चालतो रेवणो जरूरी इज कोनी पण लाजमी है।

चितराम आप रै सामी है। अपाणी गरव करा जेही सस्कृति रा अे अमल चितराम अपाने अपाणो विगत दरसावै अन आगै चलावै। माथो ऊंचो उठा'र चितराम न देख'र अपा चाला आगै अर भळै आगै।

—तारा प्रकास जोसी, IAS

ओलखाण

किणी पोथी री खरी ओळखाण तौ उण ने पढ़िया पछै इज हुय सकै। टकै री मटकी ने ठोक-पीन्ज साव्रळ बजा-बजा, ठोलै रा ठौड-ठौड टचीड़ा दै दै, कित्ती वार निरखा-परखा अर पछै अगेजा कै सुगावा। कुमार रै कैया थोडीजमाना। हाथ मे भिलि-योडी, पढ़ीजण रै मतै सू खुलियोडी पोथी सू ओलख कोई बीजौ क्यू करावै, नाई-नाई वेस कित्ताक, कै मूण्डै आवै है, जडी बात लखावै। पण, रीत रै रायतै री, भावै कै नी, अेक सबडकौ ई लो, पण लेवणौ तौ पडैइज। जुगा सू पडियोडी रीत रा गीत तौ सगळा ई गावता आया है। कोई गीतारौ व्है जिकौ तौ खेंखारा कर-कर सावळ माण्ड-माण्ड अर अै गीत गावै अर किताक ने रीत री रुखाळ खातर अणचायौ ई अगेरणा पडै। आरती मे भिळिया पछै प्रसाद ने सूगावणिया काला भगवान अर बामण रै सागै भक्ता ने ई आपरा वैरी बिणाय लेवै। उठै पूगां पूठै तौ हाथ पसारिया इज छूट व्है।

पोसाळ मे भणीजता थका तौ वौ अबखाई नी आई। सगळा ई म्हारै माभणै रा इज हा सो दावै ज्यू राजस्थानी बोल बोलाय बाता रा धडिन्दा उडायवौ करता। वास रै आडू भाटा विचै वी लखावण जोग बात हीज कोयनी। उवा रै पाण तौ आछी अचू-करी रम्मता, आडिया अर कित्तीक बाता सीखी। उण वेळा तौ इणा-उणा, अठै-उठै, अेथ-ओथ, अठी-उठी, इया-ऊवा अर इथियै-उथियै दावै ज्यू ई बोल जावता। अेक बीजै री थोळख ओळखाण मे की अबखाई आवती कोयनी। स्कूली भणाई रा दिन ई ज्यू-त्यू करता काड दिया। पण कालेज मे पूगा तौ हुवा इज बन्द हुगी, धणी मूण्डी हुई, मूण्डौ खोलणौ ई भारी पडण ढूकगौ। हम तुम करणिया अर अग्रेजीबाजा री बातां सुणी कै फलाणियौ तौ साव बारलू है अग्रेजी बोलै तोई लखावै जाणै राजस्थानी बोले है। ठा पडगी कै अपा घोख घोखा अर परीक्सा मे नम्बर मार ला तोई उच्चारण मे कठैई गडबड है। इण वेळा इण अग्रेजीबाजा रै लिखियोडी अग्रेजी मे तौ म्हैं सतरै खोटां काड देतौ। बोलण मे ई अे घणा सावळ को हानी दावै ज्यू गप्पड-सप्पड बोलता। पण उच्चा-रण री काई करतौ। हम तुम करता कठैई अणफै मे कोई राजस्थानी रो आखर

वड जावै तो कदेई स, दा, प री ठोड स् बोलीज जावै । मतैई कदेई ळ वाळै उच्चारण री कोई आखर बोलीज जावै । आड्, भाटा, थळिया, मोधा, गावडी अर वारतू कंईजण मोसा बोल सुणण अर मसकरी जोग बिणण बिचै सुरकार ई नी करण री धारली । मोको पडियां हा, हू कर, डिचकारी देय ने कै धाटकी आकी-बाकी कर धकावणो पडतो । हिन्दी अग्रेजी लिखीजै तो परी पण मूण्डो राजस्थानी रै हेवा पडियोडो, घणा जूना सस्कार छूटै तो छूटै कीकर । चोखो हुवो कै हाठ भीचण सू गैल छूटगी । गई इण सारू हुगी कै गुटकी देवती वेळा राजस्थानी रा दो आखर इज जी-मा रै मूण्डै वारै आया व्हैला । राजस्थानी आखर खुदियाडै कळियै सू पंलपात वों पिलाईज जावतो तो कंडीक सागैडो हुवतो । राजस्थानी म लिखण री रीत घरा मे सिखावै कोयनी इण सारू बचत हुगी । हिन्दी अग्रेजी मे लिखण सू परीवसा तो पार पड जावै । आछो हुवो कै राजस्थानी मे लिखण रो बख ठंट सू नी लागोडो नीतर तो खावण-कमावण सू ठोकियो रेवतो ।

घणै दिना ताई मसोटता-मसोटता सेवट मन ढोळै पडियो । जीवण सारू जाईजै जित्ता हिन्दी अग्रेजी रा बोल होटा बारै निकलण ढूका । करता-करता टंट हमै जावला होट अग्रेजी हिन्दी सारू फरा-फरा हिलण रै हेवा पडिया । पण घर मे अजु-ताई राजस्थानी सू गैल नी छूटी । मैं तो हो पाल लियो कै बडेरा री करणी तो आपा न भुगतणीज पडैला । पण टाबरा ने तो कीकर ने कीकर थळिया, मोधा अर असभ्य नी बाजण देवणा । घणा टक्का खरच अर 'अे फोर अेपल' आळी भणाई री ठोड मेल दिया । टाबर स्कूल म खटै किताक । टाबरा री मा रोयलै गाव री मोधी हम तुम उण सू करीजै कोयनी । बास रै बीजै टाबरा री रम्मता तो हमै अपटूडेट है पण घसकाई रा री बोली अजुताई अपटूडेट हुईज कोयनी । सो स्कूल सू 'अे फोर अेपल' रटाई कर ने आवै जित्तो ई पाछो पातरै । अेकूको मईनों अेकूकै आखर मे गळै तोई काठा दात भीचियां धूड बाळू । इत्तै ऊपर ई टाबर फरा-फरा राजस्थानी बोलणो सीखता जावै है । मनै लगावै जाणै अे गावेडी अर असभ्य वाजण री त्यारी मे लागोडा है । बास, न्यात अर बास रै टाबरा सू गैल छोडावण खातर बापोती रो घर-बार छोड कठैई हम तुम अर 'अे फोर अेपल' आळा रै पाडौस मे रैवण रा ई बिचार आवै । पण धा अर रोयलै आळी मोधी तो छोडीजै कोयनी । मूण्डो ले अर गिया ई पार तो पडैला नीं । सो है जठैई पडियो हू । बावो कामळ छोडै तो काई कामळ बावै ने छोडै जद पार पडै ।

इण गताघम मे दिन काडता अेकर आपोआप ने राजस्थानी रा हेताळु बतावणियै अेक भलै मिनख ने कैंवता सुणियो कै राजस्थानी तो कोरी सामन्ती भासा ई रैई । भलै मिनखा ने कुण समझावै कै पाच बडेरा रा नाव जी सा सू सुणिया जित्ता तो ऊठ खडता कै सुत्तर सवार हा । पछै म्हारै घर मे आ घरनो कीकर दियो । भासा रा सवाल उठा-वणिया रै मूण्डै आ ई सुणी कै राजस्थानी तो गावडा मे बोलीजै सेरा रा मिनख तो इण ने मूगै ई कोयनी । कुण बतावै के गावा रै कीडीदळ मानखै रै पाण इज राजस्थान री आबादी साढी तीन किरोड नेडी गिणीजै । अठै आ ई बतावण जोग है कै म्हैं रोयलै री कोयनी । जी मा अर दादो-सा ताई तो जोधपुर रै मज्झ मे जलम लियोड़ा हा । कोई इण ने जोधै री ढाणी बताय अर वारतू बिणाय दे तो वा भला ।

राजस्थानी बोलणिया री गिणती रा लेखा करणिया ने कैवता सुणिया कै इया सिखडा, त्रिस्टाना अर मीणा ने तो म्हारा टाळ दो। अे तो पजाबी, अग्रेजी अर उडदू बोलै। अखबारा रै सम्पादकीय अर विद्वाना री बतळ मे उवा ने इण गताधम मे अळ-जियोडा देखिया कै राजस्थानी भासा है कै नी है। लिखारा रो काळ है। चोखी पोथिया देखण मे ई नी आवै। गद्य लिखारा रै तो लापो इज लाग गियो। अेकाधो लाई खुणै खोचरै पडियो टसकै तो काई पार पडै। राजस्थानी मे भात-भात रै विसया माथै गद्य कठै ? नुवी वाता रो तो अगेई टोटो। आप राजस्थानी मे भात-भात री वाता नै गूथण जोग आखरा रो इज टोटो। राजस्थानी रो जमारो कित्तोक इण मे सावळ नी तो काट करीज सकै, नी काचडा व्है, नी मोसा बोल (सटायर) लिखीजै, नी मस्करिया री वाता लिखीजै, नी मस्का मारीजै। हिन्दी अग्रेजी मे दाळ नो गळै जिको लिखारा अठी उछरै सो आछी अचूकरी सरावण जोग बाता तो लिखीजै कोयनी अर कोरा उलथा दीरीजै। कोई मरतो खपतो लिखै परो तो बाचणिया कठै। आजादी पछै रै बरसा मे राजस्थानी तर तर मोळी इण सारू पडै कै इण रा हेताळु लिखै तो कम अर वारै कोसा वाली बदळै आळी बात ने झठी पटकण सारू कोरा ढूढाडी, हाडौती, मारवाडी म अेकठपणो जताबण मे अळूभियोडा है।

म्हू दूजा रै मिस बाफरो नी काढ रियो हू। म्हारै तो साचाणी थे बडवा चिपता-चिपता जीव अमूभण ढूक गियो। अमूझ रै गोटा सू तर-तर तीखी हूवती हीयै री हूम इण पोथी री असल ओळखाण है। राजस्थानी री भात भात री अबोट कडिया जाणता-बूझता इण पोथी मे राखी है जिणसू घणी चुवती बाता रा पडूत्तर दिरीज सकै। बारा कडिया माय सू अेक ई राजस्थानी गद्य मे तुसियै जित्ती ई गिणीजगी तो म्हैं तो भरपायो।

सिवाणची दरवाजै रै मायलै पसवाडै,
सिन्धिया रो बास,
जोधपुर

—जहूरखा मेहर

श्री जहूरखा मेहर री इण पोथी रै अेकूकै चितराम ने मैं सावळ नेठाव सू परखियो है। राजस्थानी सस्कृति सू सराबोर आ पोथी राजस्थानी गद्य री धकली पात री टाळकी पोथी है। मठार-मठार अर माडियोडा चितराम हत्तूका सामा ऊबा, मूडै बोलता लखावै। अेकूकी टाळमो आखर आपरी ठावकी ठोड बीडीजियोडो दीसै। लिखारै उण्डी-उण्डी मरम री बाता रै ठेट माय बड ने सावळ टटोळ टटोळ ने पछै लिखी है।

राजस्थानी भासा री जाणकारी रै सागैई सूझ आळी दीठ, खरी परख, अचूकरी उपज, इतियास री पूरी पकड अर राजस्थानी सस्कृति न रू-रू मे रमाया टाळ इत्ती सातरी पोथी लिखीजै इज कोयनी।

पद्मश्री सीताराम लाळस
मनीषी, साहित्य भूषण, डी० लिट्० (मानद)
सकलनकर्ता एव सम्पादक 'वृहद राजस्थानी सबद कोस'

विगत

ऊंट

ऊंट मरुखेतर रो अणमोल गिणीजै। इण रै पेट री कोथळी में जुगां सूं केवटियोड़ा पिनापित भरियोड़ा पड़िया राजस्थानी भासा री सेठाई रा साबूत। इण लेख में ऊंट सूं जुड़ियोड़ै सबदां रो लेखो लेखण री चेस्टा करी है। रेगिस्तानी धाता साख राजस्थानी री मरोड़ अर टरको ई न्यारो। आ सबदां सूं सड़ालूम्ब घणी राती-माती भासा है।

इदकै सूं इदकै अर नवै सूं नवै 'साइन्स' सूं जुड़ियोड़ै मुद्दा सारू राजस्थानी मे आपरै सबदा रो टोटो तो की फिटकारै जोग बात कोयनी। लारलै पचास बरसां सूं राजस्थानी है ऊठै ई पडी है अर बूढकी पाकोटी पीढी रै खिरण रै सागै इणरी जाणकारी तर-नर निबळी पड़ै। नित भूंडो व्है। पढिया-पढिया समन्द रै मूसै। समै मुजब सबद माजण री निबळाई सूं राजस्थानी नै गळनियो हुगो अर उणरो जोईजतो बधापो नी व्हे सकियो तो इणमें इचरज ई काई। पण, आज आठो गळतियो इण बात मे पड़ै धाड़ो आवै कै मोटियारपै री वेळा राजस्थानी घणी जोरावर अर राती-माती भासा ही। अर ही काई अजे ताई नो या भाव धरतिया को आई है नी। जोग रचोजण सूं पंडो सबदा री निन हूवती छीजन रै तो भारी भागगो अर तर-नर हुवा हुवता जि भासा भाव सूं बच्या-कुच्या लागा सबद तो अमर पळ चाग लियां। इण धोंगर ऊपर जे हमें धापमा मेन्दाणा दपटीजै, जाणै नवां सूं नवी याता नाना-भात रै मुद्दा मायं मदागीजै तो आ नो पंगे गवीतम्य हुजावै कै सबदा सूं इणी गहलूम्ब इण रै जोड री बीजी भासा जोवणीज भारी पड़ जावै।

इण लेख में मरुधरा रै थेक जीव ऊंट सूं जुड़ियोड़ै सबदा रो लेखो करता थका आ बात जताबण री खातर करी है कै पखो रै जीवा अर बाता

सारू राजस्थानी भासा री मरोड अर ठरकौ ई न्यारौ । इण रै सबदा री दडवौ इत्तौ अणूतौ है कै बीजी कोई भासा इण रै जोड मे ऊभण री मसाई नी कर सकै । जे आपरी भासा रै गरब मे गेळीजियोडौ अर राजस्थानी री मालदारी सू अजाण कोई हेकडी पादतौ बीजी भासा नै राजस्थानी सामी लाय ऊभावै तौ कुजकोई नै ई कैणौ पडै कै कठै तौ राजारी रेवाडी अर कठै नाई री छातीकूटौ ।

ऊट मरुखेतर री अगनबोट कैईजै अर वो पेट आळी कोथळी मे पाणी सच सकै । केई-केई दिन कोथळी मे केवटियोडै इण पाणी रै पाण आपरी धाकौ धकाय सकै । इण बात सू तौ हमें ताई आधी राड रा ई कान पाकण ढूक्गा । इण सू धकै वध अर देखा कै इण अगनबोट सारू राजस्थानी साहित, इतिहास अर बाता मे काई बखाण लाधै तौ इचरज सू बाकौ फाडणौ पडै । अगनवोट री इण कोथळी मे पिलापिल भरियोडा, जुगा सू केवटीजियोडा लाध सकै राजस्थानी री सेठाई रा सावूत ।

हिन्दी उडदू मे ऊट अर अगरेजी मे कैमल सू धकै काली भीत । मादा ऊट सारू लाई हिन्दी उडदू वाळा ऊटनी लिख अर गाडौ गुडावै तौ वापडा अगरेजीवाजा नै 'She Camel' अर 'Cameless' सू ई धाकौ धकाणौ पडै इण री जोड मे जे राजस्थानी मे ऊट अर उण सू जुडियोडै सवदा री लेखै लैण बैठा अर उवा सू ओळख करा तौ मत्तैई गिनार हुजावै राजस्थानी रै लाठाई रौ । वडैरा सुत्तर सवार अर ओठी हा अर नानाणिया रै छोटा-मोट ऊट-साडा रा टोळाई हा । इण सारू टावरपणै मे ई ऊट रा ती-वत्ती न्यार न्यारा नाव अर उणरी साजगी-मादगी अर चालढाल सारू कित्तो ई वाता रै जाणकारी ही । सीतारामजी रौ सवदकोस, डिगळ कोम, मुहावरा कोस राजस्थानी साहित सग्रह, नैणसी रै नाव सू चावी है जिकी ख्यात, उमर काव्य, सूरजप्रकास अर राजस्थानी री जूनी पोथिया मे ऊट रा की नवा नव नाव ई सामा आया । अवार ताई नीजू जाणकारी अर साहित सू ऊट सारू वरतीजणिया जिका नाव सामा आया है वै औ है—

जाखोडौ, जकसेस, रातळौ, रवण, जमाद, जमीक्रवत, वैत, मईयौ मरुद्विप, बारगीर, मय, वेहटौ, मदघर, भूरौ, विडगक माकडाभाड, भूमिगम पीडाढाळ, धैंधीगर, अणियाळ, रवणक, फीणनाखतौ, करसलौ, अलहैरौ डाचाळ, पटाल, मयद पाकेट, कठाळक, ओठारू, पागळ, कछौ, आखरातवर टोरडौ, कटकभ्रसण, करसौ, घघ, सडौ, करहौ, कुळनारू, सरढौ-सरडौ

हृडवचियौ-हृडबचाळौ, सरसैयौ, गघराव, करेलडौ, करह, सरभ, करसलियौ, गय, जूग, नेहटू, जमाज, कुळनास, गिडग, तोड, दुरतक, भुणकमलौ, वरहास, दरक, वासत, तम्बोस्ट, सिन्धु, ओठौ, विडग, कठाळ, करहलौ, टोड, भूणमत्थौ, सढढौ, दासेरक, सळ, साढियौ, सुतर, लोहतडौ, फफिडाळौ, हाथीमोलौ, सुपथ, जोडरौ, नसलम्वड, मोलघण, भोळि, दुरग, करभ, करवळौ, भूतहन, ढागौ गडक, करहास, दोयककुत, मरूप्रिय, महाअग, सिसुनामी अमेलक, उस्ट्र प्रचड, वक्रग्रीव, महाग्रीव, जगळतणौजत्ती, पट्टाभ्रर, सीघडौ, गिडवध, गूघलौ, कमाल, भड्डो महागात, नेसारू, सुतराक्स अर हटाळ।

मरूखेतर रै मोथा सारू ऊट घणौ जोईजतौ जीव री जडी। इण सारू राजस्थानी इतिहास मे साढा रै टोळा सारू कठैई पावू अबखतौ लाधै तौ साहित मे कुवरसी साखलौ जूझतौ दीसै। कठैई ढोलै नै मरवण ताई पुगावणियै ऊट रा बखाण लादै तौ कठैई महेन्द्रौ मूमल री मेडी पूगण सारू ऊट चढियौ दीसै। रा० सा० स० रै लिखारै ऊट रौ बखाण करता थका लिखियौ—"ऊट किण भात रा छै? थापवी तळी रा, सुपवीनळीरा, नाळेरा गोडारा, बीलफळ इरकीरा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी बगलारा, घाट बाजोटरा, बाथमैं काधैरा, कस्तूरिया पटारा, कौरवै कानरा, टामकसै माथैरा, लोकवै नाकरा, तजियै होठरा, क्वाडिया दातारा, उधरै पीडरा, परघळा आसणारा, कागरै थूवरा, मोटै पूठैरा, छोटै पीडारा, भामरै पूछरा, भुवरियै रूरा, चोळमैं रगरा, लाघियै सिंह ज्यू लका चढिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाट करता थका, वेस्या ज्यू भाला करता थका, मातै हाथी ज्यू हुकारा करता थका—इसा ऊट भाखजे छै।"

ऊट रै गुणा माथै लट्टू हूय'र राजस्थानी लिखारा उण रौ घणौ ई बखाण करियौ। आपोआप ऊट तौ घणौ व्है गोरबन्द लुम्बाळौ ताई अवार ई घणै ठरकै सू गाईजै। घणा रग-विरगा ऊट तौ व्है आप इज कोयनी पण भूरौ, रातौ, भड्डौ अर थोडै काळासमैं रग रौ व्है जिकौ तेलियौ वाजै। मिनखा दाई केई केई ऊट ई ऊदै ढाळै पडजा। अेक अमलदार रौ ऊट चिलम रै हेवा हडगौ। अमलदार गेळ मे होळै-होळै चिलम रा सुट साचतौ जद ऊट नेडौ मूडौ घाल अर धूअै रा गोट मूगर्यौ करतौ। अमली नै ई कैठी की मवाद आवतौ जका चिलम रौ सुट ग्याच'र पाछौ धूओ ऊट रै मडै माथै इज विखेरतौ। करता-करावता ऊट नै चिलम री लत पडगी। कठैई चिलम रा

झपेटा देतौ मिनख निगै आयौ अर चिलमियौ ऊट धूग्रौ सूगण सारू मूडौ नेडौ लेजावण री हर करी । वतळ करतै चिलमदारा रै ग्रोळौ-दोळौ टिक्तौ रैवतौ । श्रेक चिलमदार नै वेठौ देख ज्यूई ऊट नेडौ जाय अर मूडौ घालियौ कै अणसेंदी मिनख हडवडीज अर बेठौ हुगौ । ज्यू ज्यू वौ लारै सिरकै ज्यू ऊट ई नेडौ-नेडौ जावै । सेवट डरियोडौ मिनख न्हाटण ढूकौ तौ ऊट ई लारै उडियौ । श्रेक जगौ थोरियै रै ग्रोळा-दोळा चन्नारा काटीजण ढूका । थोडी ताळ सू ऊट रौ धणी अमलौ आयौ अर हावौ करियौ कै चिलम नै फकौ परी आगी वाळौ फुडती सू । ऊट रै धकै-धकै थोरियै रा वळाका काटतै हाण-फाण हुयोडै मिनख चिलम नै ज्यूई आपरै हाथ सू अळगी फकी अर ऊट झट उण रौ लारौ छोड अर धूड मे पडी चिलम कनै पूग अर उनै सूगण ढूकगौ । पछै तौ ग्रौ चिलमियौ ऊट चौथाळै चावौ हुगौ ।

नेनौ हौ जद री श्रेक बात हमार दाई याद है। किणी वैयौ कै फलाणजी आळौ तेलियौ भार तौ घणौई उखणै पण भूडी लत पडगी । कठेई माचौ ढळियोडौ देखै अर उण माथै बैठण री हर करै । ऊट अर माचै माथै बैठण री हर ! कैडी कुजरबी लत । ढळियोडौ माचौ दीसियौ अर फलाणजी मूरी खाचणी सरू करी । ऊट ई पछै नकटौ पण नकटौ । नित सुरटीजतौ तोई लत छोडी नी । सेवट श्रेकर कैठी कीकर वख लागौ कै वेफार रा फलाणजी वारणै माचै माथै आडा हुयोडा हा अर तेलियौ पूगगौ । मूतोडा माथै जाय अर झकीजग्यौ । डुक्लौ इत्तौ भार कठेऊ झेलै । ईसा अर ऊपळा तौ भागा सो भागा फलाणजी ऊट हेटै दवगा अर पासळिया मम्मोसीजगी । कूका सुणिया पाडोसी पूगा-पूगा जितै तौ फलाणजी आखिया तिरायली । पाटा पीड गणी कराई पण की कारी नागी कोयनी । हरदम जीव घमटीजतौ । सेवट आठमे दिन मरणौइज पडियौ ।

जिण ऊट रा होट ग्रोछा व्है अर दात बारै निकळियोडा दीसै वौ चाचौ या चापलौ ऊट कहीजै । चाचौ धणीमार रै नाव सू ई ओळखीजै । रोई मे कदेई बग्र लागौ नी अर चाचै धणी नै मुरडियौनी । चाचै री इण खोड सू उण रौ मोल तौ मोळौ व्हैइज समझणा मिनख उनै मोलावता ई भिचकै । जाखोडौ खरीदण जोग ठरकौ व्है जका मरियाई चाचौ नी धारै । आपरै वाळपणै मे म्हारा जीसा श्रेकर ऊट माथै ऊभ अर उण सारू झवरा तोडता-तोडता नीमडै रै डाळै माथै चढगा अर खपाखप झवरा तोड-तोड हेटै न्हाकण ढूका । वे तौ झवरा मठोठण मे अळूजियोडा हा अर घसकाई रै

चाचियै अणफै मे हडवच घाली। वाउडौ डाचै मे भिलियौ जिकौ अधर लिटकगा। मारग बेवतै मिनखा छोडाया छोडाया जित्तै तौ अन्दाळी आयगी। घणी पाटापीड कराया सावळै तौ परा हुया पण वाऊडै री कोई रग तूटगी कै मुरडीजगी सो जीवणै हाथ री व्यारू आगळिया अेडी-वाकी हुई वै आज ताई पाछी सवी कोयनी हुई। इण धणीमार ऊट सारू मरूखेतर मे ओ ओखाणौ चावौ है—

ऊट री खोड ऊट खोडावै,
चाचियौ ऊट धणी ने खावै।

चाचै जेडौ घर खाऊ ऊट तौ हजारा मे एकआधौ व्है। मरूखेतर रै मानखै री अवखाया ऊट बिना कैठी कित्ती भारी हुजावती। मरूखेतर मे मानखै रौ वासौ ऊट विना टूवतौ ई कोयनी। कोसा सू लच्चा-लच्चा पाणी लावै ऊट, हळ वावै ऊट, गठौ चारौ उखणै ऊट, वार चढै ऊट, जुद्ध मे जावै ऊट, मजूरी करै ऊट, सवारी करावै ऊट अडियै-वडियै सगळा काम काडै ऊट अर आकडै ने टाळ धकै पडै जिकौ ई ठोक पीन्ज ने धुड्ड हुजावै ऊट। जीवारी रौ की बीजौ आसरौ नी व्है तौ अेक ऊट घर रै भारीगरै रौ भार ज्यू-त्य खाच लै। सीव सू ऊट माथै गठौ चारौ भेळौ कर लाईज जावै। ऊट समैत ठरकै वाळा रै वडियौ विणिया ई टक टाळीज सकै। की तजवीज नी वेठै तौ कतारिया वणिया सू पेट पाळीज सकै। ऊट री जट ई विक जावै कै गदै भासलै सारू अरथ लाग जावै। ऊट नै सीव मे चराय अर ज्यू-त्यू परवारौ धपाईज सकै। सो ऊट अडियै-वडियै थाकोडै घर नै केवट सकै। सवारी सारू ई ऊट री मेहमा कम कोयनी। ठेट कावुल सू महाराजा जसवतसिहजी री सुणावणी ऊट सवार ई मारवाड पूगती करी ही। धरमत रै जुद्ध मे रतनसिघजी रै सेत रैण रा वावड ई सुत्तर सवार ई पूगता करिया हा। ठेका देवतै हुमायू री दो जीवायती बेगम रौ घोडौ मरुखेतर रै अेन मभ मे जीव छोड दियौ जद ऊट ई आडौ आयौ अर हमीदा वेगम नै उमरकोट पूगती करी जिण उठैई अकवर नै जलम दियौ। सो मरूखेतर री भरोसैजोग असवारी ऊट टाळ बीजी कोई नी। मरूखेतर री विरहणिया री धणी सू मिळाप री आस ई ऊट—

अरै म्हारा लुटण करिया,
भौयडली भीनी रा घरै आव।

मादा ऊट रा कित्ताई न्यारा-न्यारा नाव तौ है जिकौ **हैइज**। सागैई

बूढी ग्यावण, जापायती, वाजडी, कागवाजडी अर भळै कंठी किसी भात री साढा सारू न्यारा-न्यारा नाव ई मिळै। मादा ऊट नै साढ, टोडड़ी, सांयड, सारहली, टोडकी, माड, साईड, अमाळी, सरढी, ऊटड़ी, रातल, करसोडी करहेलडी, रातळ, कछी अर जैसलमेर मे डाची केवै। साढ जै टळती उमर री व्है तौ डाग, रौर, डागी, रोडी, खोर डागड जेडै नावा सू ओळखीजै। साढ जै वाज व्है तौ ठाठी, फिरडी, फाडर अर ठाठर वहीजै। लुगाया ज्यू वागवाजडी व्है अर अेकर जणिया पछै पाछी कदेई आख पडेइज कोयनी ज्यू साढ ई अेकर व्याया पछै दोजीवायती व्हैइज कोयनी तौ वावड कहीजै। इण कागवाजडी साढ वावड नै कठैई-कठैई खाखर अर खाखी ई केवै। पेट मे वचियौ व्है जिका साढ सुवर वहीजै। जिण साढ रै सार्थं साव चिन्योक कुरियौ व्है वा सलवार रै नाव मू ओळखीजै। कदेई जै कुरियौ हूवताई मर जावै तौ वळाप कर कराय अर कोई सायड नै दूहीजण रै हेवा पटकै। विना कुरियै री आ साढ हुतवार कहावै।

ऊट री साव नेनौ वचियौ कुरियौ कहावै। कुरियौ तर-तर मोटौ व्है ज्यू उण रा वीजा नाव ई हूवता जावै। पूरौ ऊट विणण सू पैला ऊट रौ वचियौ कुरियौ, भरियौ, भरगत, करह, कलभ, करियौ अर तोरडौ कहीजै।

जगत री बीजी कोई जोरावर सू जोरावर भासा ई अगनवोट री कोथळी रै इण दड्वै हेटै किचरीजण सू कीकर वच सकै। जद उडदू, हिन्दी अर अगरेजी रौ वठै थाग लागै। कोई तुमार लै तौ ठा पडै कै वठै तौ राजस्थानी रै सवदा रौ हिमाळै अर वठै बीजी फदाक मे डाकीजण जोग टेकरिया। कठै भोज री पोथीखानौ कठै गगू री घाणी।

अेक नामी वकील साव मे अेकर कुजरवो घणी हुई। आप वकील साव आज ताई जोधपुर वकालत करै। वात सवा सोळै आना खरी। वकील साव रै मूडै म्हारै आपरै सुणियोडी। सगळा अता-पता अर नाव-धाव गिणावता वकील साव हसता-हसता बात सुणाई। फलाणै गाव सू कोस डोडेक री भौ एक चौधरी री ढाणी। मावल रात रा अेकर चौधरी री सलवार सायड रै फोग पडी। पंखडौ खोल'र कोई चोर वाडै मे वधियोडी साढ ले परौ गियौ। दिन सवा हा सो थोडी ताळ पछैइज चौधरी री आख खुली अर मूती सारू वाडै मे गियौ तौ साढ नी। गाव मे पूग मिनख भेळा करिया अर रातौरात वार चढी। आप चौधरी चौथाळै चावौ पागी।

गोज-खबर करता, भाख फाटा ढीकड़ै गाव री पुळस चौकी जाय पूगा। चौकी आगली नीम्बडी हेटै साढ भकोजियोडी ओगाळे अर कुरियौ कनै वीवी करै। पडताल करिया ठा पडी के सलवार लायौ जको वटाऊ घडीक पैला चौकी पूगी अर बिसाई सारू अठै ढबियौ पण अमल री डोडी मनवारा मे अळूजगौ। सीव मे कठैई धकै पडतौ जद तौ ठोक पीन्ज ने अड्डा कर काडता अर साढ पाछी परी ले जावता। पण चौकी री तौ गत ई न्यारी। चोर पकडण री मारग पडियौ जस चौकीवाळा कद छोडै। छिनेक पैला भेळा वैठा अमल री डोडी मनवारा करता हा जिका इज चोर रा भीटिया झाल'र सागेडी हुडवडायौ। रपट दरज हुई। साढ वरामद करीजी। केस कचेडी पूगी। चोर रै ई लारै पख्वौ भारी सो सै'र सू अेक चावौ वकील कर लाया। हाकम साव सामी पेस व्हिया डरूफरू व्हियोडै चौधरी आपरी वात वताई। कोट-कचेडी चढण रौ औ पेलडौ काम ई पडियौ सो चौधरी काठौ हळफळीजियोडौ। वकील साव ठाण ली कै कूडमूड ई चौधरडौ उवा री आसामी नै फन्दाणी चावै सो घुदा-घुदा सवाल पूछ-पूछ इनै बघनौ कर देणौ। हुडवडाट मे डफळीजियोडौ चौधरी सायड तौ अेकर ई वोलियौ नी पण वता दियौ कठै तौ उण री सलवार ही, कीकर ऊनै सलवार री चोरी री ठा पडी अर कीकर सलवार सागै चौकी कनै चोर पकडीजियौ। वकील साव रै तौ ओळूम्वा चढता इज हा, चौधरी वात पूरी करी जित्तै-जित्तै तौ फटाक देती ऊवा हूवता धड़ूकिया कै बता सलवार खोनखाप री ही, लठ्ठै री ही, साटण री ही कै खादी री ? वापडौ चौधरी पैलाई अधगावळौ हुयोडौ हो, कमरी ऊट ज्यू धूजतै री जाडी पडियोडी जिवान उथलौ ई खायोनी। जीव मे सायड रै लापौ वाळतौ अठै ऊ जिन छूटा सीरणी वोल दी। पण आ काई व्ही ? कचेडी मे मौजूद हा जका हसी माथै उतरिया पण उतरिया, सगळा खिल्ल-खिल्ल करण ढूका तौ ढवैई नी। सेवट हाकम साव हयोडौ वजा-वजा मिनखा री हसी नीठा ढावी। वकील साव रौ आफरौ अजै पूरौ को भडियौ होनी अर नीस आपरी कालाई रौ गत्तूई गिनार व्हियौ हो। मिनखा री हसी ढवी जित्तै-जित्तै तौ पाछा कडकिया कै अरै कूड रा काका थनै सलवार रै गावै री ठा ई कोयनी जद थू आ तौ कद वताय सकै कै वा धोळी ही कै असमानी ? मिनख हसण लागा जित्तै तौ वकील साव खाता पडता भळै बोल गिया कै गावेडू चौधरी अर सलवार री तुक अगेई बैठै तौ वैठै कीकर ? थू तौ इत्तौ इज बताय दे कै सलवार रै पायचा कित्ता व्है ?

वकील साव री लारली वात तौ मिनखा री खिलखिलिया मे दवगी । मुछीजी री तौ हसता-हसता श्रेडी दुरगत व्ही कै सेवट चसमौ उतार नै श्रामू पूछणा पडिया । श्राप चोर श्रर हाकम साब दुरादुर हसणिया मे भिळगा । कंइया हसता-हसता पेट पकड लिया श्रर किताब रै बाइटा पडण ढूका । चौधरी तौ वापडौ पैलाई रोवण काळौ व्हैगौ हो । हमकै वकील साव ई श्रवगावळा री कळाई हसणिया सामी जोवण ढूका । सेवट हाकम साव सगला री हसी ज्यू-त्यू रोकाई श्रर वकील साव नै कैयौ कै वडै मिनखा हमैं श्राप सलवार री म्यानी के नाडै रै बावत की पूछ मत लीजो । भलै मिनखा हमैं गई करौ । बापडै चौधरी री गैल छोडौ । सलवार रौ म्यानौ वा सायड व्है जिण रै सागै छोटौ बचियौ ई व्है । सो श्रा वचियै वाळी सायड री चोरी री वारदात है लठ्ठै खादी री सुथणी री चोरी री थोडीज है । वकील साव माथै जाणै परवाला पाणी ढुळ गियौ व्है श्रर कै जाणै सौ मण री सिल्ला माथै घरीजगी व्है । च्यारूमेर मुळक्ता मिनख डाकी व्है ज्यू दीसण लागा । चुळणौई भारी पडगौ । परायै ऊ झब्बाझोळ व्हियोडा हिमाळै चढण जेडा दोरा कुडमी ताई पूगा । पछै धकली कारवाई मे जाणै वकील साव रै मूडै मे डाट ठोकीजियोडौ व्है । चोर नै सजा बोलीजी श्रर चौधरी सायड ले'र जीवै जित्तै वकीला रै पानै नी पडण री श्राखडिया लेवतौ ढाणी पूगौ ।

रिन्द रोई मे घूमर नाचती ढेलडिया श्राळी कळाई साईडिया रा टोळा चरावता मरूखेतर रा मोथा श्रापसरी बतळ मे ऊट मू जुडियोडै सबदा नै श्रजैताई तौ खरा बरतता व्हैला । पण सगला श्राप श्राप री घडण भागण मे श्रळूजियोडा है किणनै पडी है मोथा री बतळ माथै गिनार करण री । हुमैं ताई नी-नी करताई थोडौ-घणौ सै'री श्रसर मोथा माथै ई पूगण ढूकौ श्रर श्राप ऊट माथै मोटर, श्रजण श्रर टेक्टर नित ताचकिया खावता उचकै है । तर-तर श्राप मोथा सारू ई ऊट रौ मोल मौळौ पडै है । सो च्यारेक पीढिया भळै खिरी नी श्रर श्रगनबोट री कोथळी मे ई भूश्राजी थडिया करण लागा नी ।

बुतोळियै रै वेग रातौ-रात बीसा कोस जमी काटण वाळा खाताळा ऊटा श्रर साव मडक्ल खोरा रै सागै ऊट री भात भात री चाला, चोखाया, खोडा-मादगिया, फूटरापै उण रै गाड श्रर डील सू जुडियोडा सबद मुहावरा श्रर श्रोखाणा इत्ता है कै किणमैं ई खिप्पण जोग गाड व्है तौ भलैई मरूखेतर रै श्रगनवोट री कोथळी माय सू सवद काड-काड श्रर छोटौ-मोटौ ऊट

कोस ई रच दै। इणा माय सू की सबद इण मुजब है—

१ चापलौ=वो ऊट जिणरौ हेटलौ होट दबियोडौ व्है अर दात बारै निकलियोडा व्है।

२ छठारीहाण=छ दात आयोडौ मोटियार ऊट।

३ छपरी=अेक खास जात रौ ऊट। धूजणियौ ऊट।

४ डोलण=वो ऊट जिकौ डावौ जीवणौ डोलतौ वेवै।

५ जडौ=अळियौ ऊट। वो ऊट जिकौ सवारी अर भार रै ढोळै नी पटकीज्यौ व्है।

६ झलण=ऊट री अक खोड। औ ऊट झूमती रैवै।

७ चढमौ=चढाई करण जोगौ ऊट।

८ चढ्ढोरौ=चढी सारु धारियोडौ।

९ तिसालौ=इण ऊट नै कोई-कोई तिबरसोई कैवै। औ ऊट पदरै दिन तौ खडोखम्ब रैवै अर पदरै दिन मादौ पड जावै। पदरै पदरै दिन री साजगी-मादगी रौ औ इकातरौ तीन वरस ताई रैवै। तीन बरस बीता घणकरा री मादगी खतम हुजावै। इण मादगी आळै तीन वरस ताई औ ऊट तिसालौ कै तिवरसौ कहीजै। सौ इण नै ऊट रै अेक रोग रौ नाव या इण मादगी मै भिलियोडै ऊट रौ नाव कैय सका।

१० डगरौ=अणूतौ बूढौ निकामौ ऊट, साव मरियल मुडदार ऊट।

११ गोडामार=जिकौ रात री वेळा गोडा ठोकतौ रैवै।

१२ दुगाळ=सियाळै मे खीज अर मस्ती मू ख-ख्ख-ख करता झागूडरै सागै दोनू गलफडा सू गळमूओ बारै काढै जिकौ ऊट।

१३ नैणझर=नित डोळा सू पाणी टपकै जिकौ ऊट। औ ऊट ई खोड आळौ गिणीजै। अेडै ऊट नै रातीडौ हुजावै। रात पडताई सूझणौ बन्द अर भीतम्भीत।

१४ नेसाळौ=वो ऊट जिण रै सगळा काणेटा आयगा व्है।

१५ इकलासियौ=बोलीजण मैं औ ऊट इकळायौ कहीजै। इण ऊट माथै अकलौ मिनख इज असवारी कर सकै। दो जणा नी बैठ सकै।

१६ रेतियोडौ=खोड आळौ ऊट। रेतियोडै रै मूतण-ठौड सोजौ आयोडौ रैवै।

१७ टसरियौ=अेक खास चाल वाळौ ऊट।

१८ ववाळ=अेक खास जात-भात रो ऊट ।
१९ पाकेटू=वौ ऊट जिण री उमर खासी व्है अर बुढापै रै नेडी आयगौ व्है ।
२० लागट=वो ऊट जिण रा आगला पग ईटर सू रगडीजता व्है । खोड आळौ ऊट ।
२१ पटैल=नस माथै घणी जट वाळौ ऊट ।
२२ वगरु=कानो वनै भरपूर गूगरिया कैसा वाळौ ऊट ।
२३ पासुभग=छोटी पासळी आळौ ऊट ।
२४ लुरियौ=अेक खास चाल सू न्हाटण वाळौ ऊट ।
२५ तळीकट=लारै तळी काड अर वैठै जिकौ ऊट ।
२६ वगली=खोड वाळौ ऊट । वैवती वेला खाक री रगा पेट सू रगडीज अर चादी पड जावै जिकौ ऊट ।
२७ अलाणौ=विना पिलाण कमियोडौ ऊट ।
२८ बुगदी=भार उचावण अर सवारी सारु घणौ सठौ ऊट ।
२९ रैतणौ=खोड वाळौ ऊट । भेकोज्योडौ व्है जद रैत सू रगडीज अर वीरज झड जावै जिकौ । थाकोडौ मडकल ऊट ।
३० अदन=मोटियारपै रा दात नी आयोडौ काचौ ऊट । इणनै उदत ई कैवै ।
३१ वक्रग्रीव=अळियौ वुचमादी अर आडी डोडी वेवै जिकौ ऊट ।
३२ फिराक=चोखी चाल सू हालै जिकौ ऊट ।
३३ रिकाव=सवारी सारु धारियोडौ ऊट ।
३४ विथूभियौ=दो थूम्बिया वाळौ ऊट ।
३५ पखाली=पखाल वधीजण सारु धारियोडौ ऊट । पाणी लावणियौ ।
३६ अलहैरी=अेक कूबड आळौ खास तरै रौ अरवी ऊट ।
३७ बुगर=दो थुई वाळौ ऊट ।
३८ वेळयौ=औ ऊट वैळास ई कहीजै । दो जणा सवारी करै पण अेल ई नी आवै जेडौ ऊट ।
३९ राफौ=खोड वाळौ । पग री तळी मे मोजौ आया रस्सी पड अर खोडावै जिकौ ऊट ।
४० अणियाळौ=घणौ खातौ न्हाटै अर हरमेस सगळा सू धकै वेवै जिकौ ऊट ।

४१ फिरणी=खास जात अर गुणी आळी ऊट ।

४२ मघरौ=होळै होळै न्हाटण वालो ऊट जिको न्हाटती वेळा ओठी रै पेट री पाणीई नी हिलण दै ।

४३ रडबौ=वृढो अर सूगलो ऊट ।

४४ बोदलौ=अेक खास जात रौ ऊट ।

४५ मईयौ=साढा रै टोलै साथै राखीजै जिको ऊट ।

४६ फरवौ=खाताळ ।

४७ पागळ=मोटियार ऊट ।

४८ तोडियौ=साव काचौ मोटियार हुवोडौ ऊट ।

४९ गोडाफोड=कुलखणो ऊट । ओ गौडाकूट ई कहीजै । भेकीजती वेळा घमीड उठावतो गोडै नै जमी माथै पटकै जिको ।

५० रदौ=लारलै पग रै उपरलै छेडै माथै खोड व्है जिको ।

५१ इरकियौ=जिण ऊट री इरकी (आगलै पग री साथळ रै मायलै पासै गोडै माथली निसाण या ईडर जेडौ निसाण) छाती सू रगडीज अर चादी पड जावै । औ ऊट ई खोड आळौ गिणीजै ।

५२ गूधलौ=सियाळै मे मचमचिया खायोडौ पण गळसूड नी काडै जिको ।

५३ कामडीकसौ=कामडी सू सुरडीजण रै हेवा पडियोडौ ।

५४ खाडाळियौ=जैसळमेर री खाडाळ नाव री ठौड री खास तरै री ऊट ।

५५ रगटळ=ओ रगटाल ई कहीजै । लारलै पग री नाड ऊची चढण सू पग सावळ नी टिकै अर खोडावै जिको ऊट ।

५६ गाजी=किणी खास जात रौ ऊट ।

५७ खोथलौ=खोड वाळो अैवी ऊट । जिण नै खोथ रोग लागोडो व्है । खोथ रोग मे ऊट री जट उडण ढूकै ओर वो सफाचट गजो हुजावै ।

५८ खीजियोडौ=मचमची चढियोडो ऊट ।

५९ खियाळ=अैबी ऊट । बैवती वेळा आगला पग उपर जोड री जागा रगडीजता व्है ।

६० कूटियऊ=पग वधियोडौ ऊट ।

६१ कूटियौ=अेक पग मोड अर वधियोडौ ऊट ।

६२ कुलचौ=जिणरौ लारलो पग उतरगियौ व्है अर खोडावतो व्है ।

६३ ईडरियौ=जिण ऊट रै ईडर मे गडबड व्है ।

.४ ओडियाळ = ईडर माथै पचियौ हुवोडो ऊट ।

.५ उखडियाडो = गाडै मे कसर व्है जिको ऊट ।

६ कमरी = पित पडियोडी जिण सू उठीजै-बैठीजै दोरो व्हौ ऊट । इण ऊट रा लारला पग घणा धूजै ।

.७ कासळरी = मचमची चढियोडो ओडो ऊट जिको आपरै दाता नै लग्गू आपसरी मे रगड-रगड अर किडकिडिया बोलावै ।

.८ चाचौ = घणामार अर नेस ऊट जिगरा होट सचमा व्है अर दात सामा दीखता व्है ।

.९ चीबी = कुरियै रै गदामस्ती मे अठी-ऊठी उछळ कूद मचावण रौ भाव । साढ रै मस्ती मे आवण रौ भाव ।

७० जट = ऊट रा केस ।

७१ जूण = (अ) ऊट रै लारलै पग री साथल रै धक्कै पाडै ईडर जेडौ, मोटै आईटाण दाई निसाण । (आ) भरीज्योडौ ऊट सागी-वाको व्है तौ सागडी जूण माथै होळैक ठोक्कर ठोकतौ 'जूण-जूण' बोलै अर ऊट थोडौ आगौ-पाछौ हुय अर सावळ बैठ जावै । (इ) ऊट री सेन्दाणौ जिणम जरख री मास ऊट नै खवाडीजै ।

७२ भुरकौ = ऊट री अेक खास चाल ।

७३ भै = ऊट नै भंकण सारू बोलीजणियौ आखर ।

७४ भंकणौ = ऊट नै बैठावणौ ।

७५ भौक = ऊट नै भंकण री जायगा । ऊट रौ वाडौ । ऊट भेकियोडौ व्है उठै मडियोडा निसाण । साढ रौ ब्यावणौ जाणै आ साढ तीन भौक व्यायोडी है ।

७६ ठसियौ = ऊट री अेक मादगी जिगमे ऊट घडी-घडी धासण ढूकै ।

७७ डाणणौ = ऊट माथै बैठण सारू उण माथै तापडियौ कै गादी बिछावणौ ।

७८ ढाण = ऊट री तेज चाल ।

७९ ढिरियौ = ऊट री अेक चाल ।

८० तवडकौ = चारू पग सागै-सागै उछालता नाठणौ ।

८१ तापड = ऊट री अेक चाल । लारली टाग सू लात वावणौ ।

८२ तापौ = चारू पग सागै सागै उछाळणा ।

८३ तैखळ = ऊट नै बाधण रौ ढग जिणमे उण रौ अेक आगलौ पग

लारलै पग रै सागै बाधीज जावै ।

८४ तरापणो=ऊट री अठी-ऊठी पुदड़का करता उछळ-कूद करणो ।

८५. थूबी=थुई । ऊट रै मौरा माथै कगूरै ज्यू ऊचो आयाडो हिस्सौ ।

८६. टूटी=ऊठ री आख मे हूवणकी गाठ जिणसू आख जात्ती रैवै अर ऊट नै काणो व्हेणो पडै ।

८७. रपटक=ऊट री अेक खास चाल ।

८८. रळी=ऊट री खास चाल अर इण चाल वाळो ऊट ।

८९. टोरडो=बीजो री बिगाड करण वाळी अळियो अर निकामो ऊट मोसा बोला मे तोरडो कहीजै ।

९०. रस=ऊट रो अेक मादगी जिण मे ऊट रै पगा सू जहरी पाणी निकलण ढूकै ।

९१ लखाणो=ऊट रो साढ सू मेळ कराणो ।

९२ लीलड=मादगी जिण मे मळ साव पतळो हुजावै ।

९३. लड=ऊट री पतळो भिस्टो या मळ।

९४. वादीवाय=ऊट री मादगी जिण मे वो हालणो ई बद करदै ।

९५ वीख=अेक खास चाल । ढाण अर पडछ सू धीमी चाल ।

९६ बुग्गी=ऊट री थूबी माथला केस ।

९७ मसी=ऊट रै भरै जिको मद ।

९८ पाचू=ऊट रै डील मे हूवणकी अेक गाठ जिण मे कीडा पड जावै । रस्सी निकलण ढूकै । इण गाठ मे खील निक्ळै जद आ सावळ हुजावै । घणकरी आ गाठ ऊट रै लारलै पग मे उपडै ।

९९ पातडी=ऊट रै नाक माथै घुम्मो लागण सू हूवणकी गाठ ।

१००. पाळै=साढ रै ऊट सू भेटकै सारू रवै आवण री गत ।

१०१ पिणछीजणो=ऊट रै लारलै पग री गोडै सू हेटलो हिस्सै माथै सोजो आवणो ।

१०२ पोटी=ऊट रै धकलै पग माथै हूवणकी गाठ ।

१०३. फरडो=लारलै पग सू ठोकीज्योडी लात ।

१०४. फळीजणो=साढ रै पेट (गरभ) ठैहरणो ।

१०५. फिरत=ऊट ने हेवा घातण खातर फेरणो । हेवा पडियोडै ऊट री चाल ।

१०६ फोग=ऊट री चोरी ।

१०७ अचर=जहरीली चीज खाया पछै ऊट री चारो-पाणी लेणी वद हूवणी ।

१०८ आदू=ऊट रा आगला पग डील सू जुडै जिकी ठौड । ऊट री खान्दौ ।

१०९ आतेलौ=ऊट माथै धरियोडै भार री अेकण कानी घणौ झुकणी ।

११० आगळणौ=ऊट री कूदणौ ।

१११ आडपिलाण=पिलाण माथै दोनु पग अेकण कानी राख'र बैठणी ।

११२ पचसदी=पाच सौ ऊटा री धणी ।

११३ पडछ=ऊट री चाल जिण मे वौ ढाण सू तौ धीमौ पण बीख सू गातौ न्हाटै ।

११४ पटौ=ऊट री नस अर माथै री जट जठै सू मद निकळै ।

११५ पाखरणी=ऊट नै सजाय सजूय अर त्यार करणौ ।

११६ पाखळणौ=अेक आगलै अर अेक लारलै पग नै वाधणौ ।

११७ पलाणणौ=ऊट माथै पिलाण कसणौ ।

११८ आडणौ=किणी पीड सू ऊट री डाडणौ ।

११९ अलावणौ=मूडौ हिलावणौ ।

१२० इरकाणी=ऊट रै आगलै पग री साथळ ।

१२१ ईडर=ऊट रै नीचै पगथळी दाई निसाण ।

१२२ अपल्हाणी=विना पिलाण रौ ऊट ।

१२३ ओडी=ईडर माथै पचियौ हूवण री रोग ।

१२४ ओछीढाण=अेक खास चाल ।

१२५ साळू=मियाळै मे खोजियोडै ऊट रै मूडै सू निकलणवाळी गळसूड ।

१२६ सारसी=ऊट री मस्ती ।

१२७ सिमक=लारलौ पग तर-तर पतळौ पडण ढूकै अर ऊट खोडौ हुजावै ।

१२८ ओटीजट=ऊट री जट, कतरियोडी जट ।

१२९ ओठा=साढ री दूध ।

१३० कपानोडी=ऊट रै माथै मे हूवणवी गाठ, ऊट री खोड ।

१३१ कागवाव=ऊट री अेक खास मादगी । इण मादगी मे झिलियोडौ ऊट वैचेनी सू घडी घडी ऊठै अर वैठै ।

१३२ कूकडौ=ऊट रै माथै री अेक मादगी ।

१३३ कूची=(अ) ऊट रौ पिलाण । (आ) ऊट री मूतण ठौड ।

१३४ वूटणी=गोडै सू मोड अर ऊट री अेक पग सेठी बाधणी जिणसू सीव मे चरतौ-चरावतौ घणी आगी भौ नी जा सकै ।

१३५ कूकडौ=ऊट री अेक घणी खारी मादगी । इण मादगी मे ऊट रै कठ मे जैरी छाळी हुजावै अर ऊटरी सास घमटीजण ढूकै । इण मादगी मे भिलियोडौ ऊट घणौ दुख पावै अर सेवट मरिया छूटै ।

१३६ खग=ऊट रा काणेटा । चारौ इण दाता सू इज खाईजै । खग ऊट रै धकलै दाता अर दाडा रै विचमे व्है ।

१३७ खीजणौ=सीयाळे मे ऊट रौ मसती मे आवणौ अर मडै सू फफीड काडता वडग-वडग री आवाज काडणी ।

१३८ खोय=ऊट री मादगी जिणमे जट खिरण ढुकै, डील माथै ठौड-ठौड खीडा पड जावै अर ऊट गजी हुजावै ।

१३९ गळतियौ=ऊट री एक मादगी जिणमे ऊट तर-तर थाकै अर गाड वायरौ हूवतौ जावै ।

१४० गाठडौ=ऊट रै पेट मैं हूवणकी मादगी ।

१४१ गोग्रौ=मसती मे आय'र खीजै जद ऊट रै मूडै सू निकळण की गळसूड ।

१४२ गोटीजणी=ऊट री हाजमौ विगडण रौ रोग ।

१४३ गोडी=ऊट रै आगलै पग नै वाकौ मोड अर वाघण री अटकल ।

१४४ घमचोळ=ऊट री अेक खास चाल ।

१४५ साडियौ=साढ रौ असवार ।

१४६ मारवाण=सूत्तरसवार । ऊट रौ असवार ।

१४७ सारणौ=ऊट नै सवारी रै हेवा घातणौ ।

१४८ छीकी=सियाळै मे खीजियोडै ऊट रै मूडै माथै वाधीजण वाळी वाटकी जैडी जाळी जिण सू ऊट किन्नेई डाचौ नी भर सकै ।

१४९ जजायळ=ऊट माथै लादीजण वाळी अेक लम्बूत्री वन्दूक ।

१५० झबू=ऊट री खालडी सू वणियोडौ कूडियौ ।

१५१ झूडौ=ऊट रै नग रै सागै लिटकवौ करै जिकौ सूत रौ फून्दौ ।

१५२ टालौ=ऊट माथै लादीजै जिकौ गठी कै घास रौ भारौ ।

१५३ टोवण=ऊट रै नाक आळी लकडी रै दोनू कानी बधियोडी नाकी जिण सू मू'री वाधीजै ।

१५४ तग=ऊट रै पिलाण नै कसण वाळौ चामडै रौ पटियौ ।

१५५ तागण=ऊट सू हळ जोतीजती वेळा हळ रै लम्बै डडै सू बधीज अर ऊट रै गळ मे पैराईजै जिकी रस्सी ।

१५६ तापड=ऊट माथै पिलाण धरीजण सू पैला धरीजै जिकौ तापडिय रौ टुकडै के छोटी राली।

१५७ नकतोड=ऊट री नाक मे पैराइजणकी अेक वाळी ।

१५८ नकेल=ऊट री नाक मे वधियोडौ घोचौ जिकौ मू'री बाधण मे आडौ आवै ।

१५९ नुखत=ऊट री मू'री नुखत अर नुखता ई क्हीजै ।

१६० नेसाळ=ऊट रै पिलाण नै थडा सू बाधै जिकौ डोरी ।

१६१ नौळ=ऊट रै पगा नै आपसरी मे बाधण सारू साकळ जिणमे ताळौ ई ठोकीज सकै । इण मुजब वधियोडै ऊट नै चोर नी ले जाय सकै अर चरतौ-चरतौ ऊट घणौ आगौ ई नी जा सकै ।

१६२ थडौ=ऊट रै पिलाण रौ तकियौ ।

१६३ दाण=ऊट रै घक्लै पगा रौ वधणौ ।

१६४ रोमचरमौ=झबू, ऊट रै चामडै रौ ठाव ।

१६५ लाडणौ=ऊट रै तग रै सागै लिटकणियौ झूमकौ ।

१६६ लाद=ऊट माथलौ भार, चारौ वोरा कै पूळा।

१६७ लादौ=गठौ, ऊट माथै लदियोडी लकडिया ।

१६८ लाल्हरियौ=अेक खास वाठकौ जिण नै ऊट सवाद ले ले'र खावै ।

१६९ लूव=पिलाण रै ओळी-दोळी टेरीजै जिकौ चिरमिया कै कोडियौं रौ झूमकौ ।

१७० वाडलौ=चरण सारू छोडता ऊट रै पगा रौ वधण जिण सू वौ मरतौ-गुडतौ हालै तौ परौ पड न्हाट नी सकै ।

१७१ वारौ=साढा रै टोळै रै झेकीजण री ठौड ।

१७२ वेळचौ=ऊट री नकेल रै दोनू पाडै वधीजणकी डोरी ।

१७३ भाकलौ=गदौ, ऊट री जट सू वणिजियोडी दरी ।

१७४ भारपिलाण=ऊट माथै भार लादण सारू कसियोडौ अेक खास पिलाण ।

१७५ भोगरी=ऊट चरै जिकौ घास । औ घास जैसलमेर टाळ कठैई नी व्है ।

१७६ मेढ=ऊट वाधण सारू जिम्मी मे गाडीजणियौ खटौ ।

१७७ मो'री = मू'री, ऊट नै हाकण सारू रस्सी।

१७८ मो'रौ = मोरखौ, फूटरापै खातर ऊट रै मूण्डै माथै लगाईजणकी जाळी।

१७६ पाठौ = पिलाण रै दो डडा माय सू अेक।

१८० पीडी = आगलै पगा रौ बधण।

१८१ आठियौ = ऊट माथै कसीजणकी मोटै मूण्डै री बन्दूक।

१८२ पखाल = चामडै रौ मोटौ थेलौ जिकौ ऊट माथै लादीज अर पाणी लावण रै काम आवै।

१८३ पिलाण = कूची, ऊट रौ चारजामौ।

१८४ साजपिलाण = सवारी सारू फूटरौ पिलाण।

१८५ पलाणियौ = हळ जोतीजती वेळा ऊट री पीठ माथै कसीजै।

१८६ पाखडौ = (अ) ऊट रै पिलाण री वाज री लकडी,
(आ) ऊट रै धकलै पग नै खूटै सू बाधण री साकल।

१८७ पागडून = ऊट री रकाव रौ बधणौ जिकौ पिलाण सू बधीजियोडौ रैवै।

१८८ आरावा = ऊट माथै लदीजण वाळी अेक नैनीक तोपडी।

१८६ ऊटकटाळी = कटारा नाव सू ई ओळखीजै, झाडकौ जिनै ऊट घणौ सवाद ले ले'र खावै।

१६० ऊटगाडी = छकडौ।

१६१ ऊकठौ = अकटौ, ओकडौ, पिलाण कमण सारू चामडै रौ पटियौ।

१६२ ओठियौ = ओठी, ऊट सवार।

१६३ कटाळियौ = भारपिलाण।

१६४ कतारियौ = घणै ऊटा रै सागै-सागै आपरै ऊट सू मजूरी करै जिकौ मिनख कतारियौ कहीजै।

१६५ कनडाळी = ऊट री सजावट सारू कौडिया रौ झूमकौ।

१६६ कसवी = पिलाण कसण सारू निवार या जाडी रस्सी।

१६७ कटाळ, कटाळौ = अेक काटा वाळौ घास जिनै ऊट चाव सू खावै।

१६८ कूची = पिलाण, चारजामौ।

१६६ कूडियौ = ऊट रै चामडै रौ मोटौ घडौ।

२०० कूटी = ऊट रै पगा रौ बधणौ।

२०१ गदौ = ऊट री जट सू वणियोडी दरी।

२०२ गळनग=पिलाण कसण सारू ऊट री नस मे वधीजै जिकौ कस।

२०३ गुराब=ऊट सू खचीजै जिकौ तोप।

२०४ गोरबन्द=सजावट सारू ऊट री नस री गैणौ।

२०५ सलीतौ=छाटी, ऊट माथै भार भरण सारू जूट रौ मोटौ बोरौ।

२०६ नाळ=ऊट नै माडाणी ओखद पावणौ।

२०७ कडैछट=घणकरा मूति करता ऊट मसतो मू आपरी पूछ नै घडी-घडी ऊची-नीची पटक्वौ करै। यू पूछ हिलावणौ कडेछट कहीजै।

२०८ चसळकतै नेस=मसती मे आयोडै ऊट रै दात किटकिटावण री आवाज करणौ।

२०९ पडचियौ=सजावट री झल। जाडै गावै री झूल माथै सीगोडा वीजा कोरीजै। ऊट री थूवी री जा'गा झूल मे थीडौ करनै पैराइजै।

२१० हर=ऊट रै माथलै भार रौ अवण कानी घणौ झुकणौ।

२११ हाण=ऊट रा मोटियारपणै रा दात।

२१२ हानौ=पिलाण रौ धकलौ हिस्सौ जठै चीजा लिटकाईज।

२१३ गाळ=पावणौ (अधसेर) लूण घोळ नै नित सिज्यारा ऊट नै देणौ।

२१४ नाळ=लक्डी कै लोह री नळी सू ऊट नै ओखद देणी।

२१५ डाण=(अ) ऊट री घाटकी सू झर्णियौ मद,
(ब) ऊट री घाटकी रौ वौ हिस्सौ जठैऊ मद झरै,
(स) ऊट माथै कसीजणियौ तापडियौ।

२१६ डाणियोडौ=तापडियौ कै राली कसियोडौ ऊट।

२१७ सडीतोड=सीव मे चराइजै वो ऊट।

२१८ आलावणौ=ऊट री औगाळ जद कै नेस चसळक-चसळक वाजता रैवै।

२१९ इकलाण=इकलाळियौ इक्लास, इक्लायौ, इकलासियौ—अेक जण री सवारी रौ ऊट।

२२० सुत्तरखानौ=ऊट बाधण री ठौड।

२२१ सुत्तरनाळ=ऊट माथै राख'र चलाईजै जका छोटीक तोप।

२२२ सूडी=ऊट रै मूण्डै री बणावट।

२२३ सेळौ=मटमैलै रग रौ ऊट।

२२४ सरडकौ=ऊट री अेक खास चाल।

२२५ सिघोडौ=ऊट रै पलाण रै हेटै लगाईजणकी गादी।

२२६ हाडौ=अेक मादगी जिणमे ऊट रै लारलै पग री हाडको उपस जावै।
२२७ हूवी=ऊट री पगथळी मे गाठ उपडण रौ रोग।
२२८ रुक्ता=अडियल ऊट।
२२९ हुसरडौ=वो ऊट जकौ बैवती बेला मो'री खावण सू ई नी ढबै।
२३० हिचकी=ऊट री अेक खास मादगी जिणमे ऊट चारौ-पाणी छोड दे।

मरुखेतर रा मिनख यू तौ साव भोळा भटक पण ऊट री पारख मे पाटक पडिया है। केई ई ऊट रौ अेकर भपकौ पटकदौ अर खट्ट करतीरा उण नै परख लै। पैला मिनख टोळै मुजब ऊट रौ मोल करता। न्यारै-न्यारै टोळा रै ऊट रौ मोल ई न्यारौ-न्यारौ। सगला मे ठावकौ जैसलमेर रै नाचणै रै टोळै रौ ऊट गिणीजै। नाचणै रै टोळी रौ ऊट घणौ हिम्मती, घणौ सारू जीव जोखम मे नाखणियौ, अणूतौ खातौ न्हाटण आळौ अर दीसण मे चावकियौ व्है ज्यू युवकौ नाखा जेडौ फटरौ व्है। बारोठिया अर धाडवी नाचणै टाळ बीजै टोळै रौ ऊट मरिया ई नी धारै। फलाणै धाडवी नै रातौ-रात सौ कोस पुगाय अर ऊट कैडी मडदानगी बताई अर ढीकडै रै ऊट धाधी वाजती ही जद गोळिया रै उठतै भचीडा बिचाळै ऊ धरैधणी नै कीकर काढियौ इण गत री अलेखू बाता चावी है। सो ठरकौ व्है जिका तौ नाचणै रौ ऊट इज धारै। फलोदी रै पागती गोमठ रै टोळै रै ऊट री साख ई नाचणा आळै रै डावी-जावणीज है। गोमठियौ ई घणमोलौ गिणीजै। न्हाट-कूद, मडदानगी, खाताळ अर फूटरापै मे गोमठियौ नाचणै रै टाळै रै ऊट सू थोडाक उगणीस-बीस व्है। सो नाचणै रौ ऊट खिपिया पछै ई हाथ नी लागै तौ गौमठ रौ ऊट सवारी सारू मोलाईजै। गुडै रै टोळै रौ ऊट फूटरौ तौ व्है अर भार ई खासौ उखणै पण मडदानगी, सामधरमी अर खाताळ मे नाचणै अर गोमठ रै ऊट सू मोळौ गिणीजै। केरू रै टोळै रौ फूटरापै, सवारी अर चारौ गठौ उखणगू मे खासौ भलौ गिणीजै। अठै रै ऊट नै बिचली रास रौ गिणै। पाल रै टोळै रौ ऊट भार उखणणू मे ठीकटाक कहीजै पण सवारी जोग कायनी व्है। जाळोर रै टोळै रौ ऊट साव धाधस तडडाळ अर ओछै मोल रौ गिणीजै। जाळोर आळौ नी तौ काम मे चौढौ, नी भार उठावण मे सठौ अर नी सवारी जागौ। वीकानेर रै टोळै रौ ऊट भार लदण म सठौ घणौई पण गुस्साळ अणतौ अर अळियौ अडौ कै वख लागताई धरै धणी सू धात करतौ जेज नी करै। मेवाडी टोळै रौ ऊट दीखण मे सूगलौ अर साव मुडदार, थोडोक भार घातीजियौ अर टै बोल जावै इण सारू किणो ऊट री निबळाई

देख अर कोई मोसा बोल बोलै जद कैवै "आछो मेवाड़ो लायो रे।" सिन्ध रै टोळै रौ ऊट दीसण मे रोडौ पण धापडै आगै रौ। जाडा पग भारी नस, वूचिया कान नसकानी चिपता लखावै। सिन्ध रौ धापड पग्गौ खातौ मरियाई नी वेवै पण भार उखणण् मे सगळा सू इक्कीस।

करसा अर मजूर काम-काज सारू मातै लठ्ठ ऊट री चावना राखै इण सारू आ कावत घणी चावी है—

ऊट न लीजै दूबळा,
वळद न लीजै माता।
ऊचौ खेत नी चाहीजै,
नीचौ न कीजै नाता।

मरूखेतर रै मानखै सारू ऊट री मेहमा ई न्यारी। चीवी करतै कुरियै नै देखण सारू टाबर-टीगर उण रै ओळी-दोळी टिवणा व्है ज्यू राचवौ करै जाणै उठै की हिम्माणी गाडियोडी व्है। ज्यूई कदेई कुरियो चीबी करण ढकै अर टाबर-टीगर अधगावळा हुजावै। बोछडला व्है जका तौ आप ई भेळम्भेळ उछल-कूद माड दै। रमती वेळा ई ऊट-ऊट री रम्मत टावरा रै मन घणी भावै। मोटियार आठू पौर ऊट सागै हीचा खावै तोई मन भरीजै नी। भँकीजियोडै ऊट नै दुबकी कै चीखड डाकणौ। फिरमे पेच रौ गोळ पोतियौ पैर, ऊवोडै ऊट रै ईडर रै माथौ टैक अर ऊट रा चारू पग 'अे हैओडा' करता अधर करण जेडी अवखी होडा करीजै। ऊट री दौड तौ मेळै-खेळै हूवती सो हूवतीज ऊट रै पगा अर धाटकी रै घूगरा बाध अर उण नै रम-भम, रम-भम करतै नै गोळ कूण्डाळियै मे नचावण मे ई अणूती साव आवै। ठरकौ हूवतौ जका ऊट पोलौ ई रमता। गीतारा नै गोरवन्द लूवाळी ऊगेरण मे पछै कैडोक सवाद आवै अर काई लटका करता मोथा गोरवन्द गावै कै सुणता जीव ई को भरीजैनी।

ऊट सू जुडियोडी अलेखू आडिया अर ओखाणा मिनखा नै मूण्डै याद। ऊट माथै बैठण रा काण-कुरब सगला सू न्यारा। धणी आपरी लुगाई नै लारलै आण बैठावै अर आप धकलै आण वैठै। आपरी बीन्दणी टाळ बीजी वोई लुगाई व्है तौ मिनख लारै बैठै अर उण लुगाई नै धकलै आण वैठावै।

गीत-ओखाणा तौ ऊट सू जुडियोडा है जिणमे धणी की वत्ताई कोयनी पण होळी रा फाटा गीत गाळिया अर सीठणा नै आडिया इण वात री साख भरै कै ऊट मरूखेतर री सस्कृति मे च्यारूमेर काठौ घळियोडौ है। दो-तीन

आडिया जका घणीज चावी है इण मुजब है—

(१) ऊट आळा ओठी थारै धकै बैठी
जका थारी बैन है कै थारी बेटी।
नी तौ है म्हारी बैन अर नी है बेटी
इन्नी सासू नै म्हारी सासू सग्गी मा बेटी।

आ आडी तीन तरै सू खोलीज सकै। पैलडौ अर साव सोरौ पडूत्तर तौ ओइज है कै ओठी सागै बैठी जका लुगाई ओठी रै बेटै री बीन्दणी है। इण आडी रौ दूजौ खुलासौ औ है कै आ लुगाई ओठी री मामै सासू (ओठी री बोऊ रै मामै री बीन्दणी) है। इण आडी रौ तीजौ पडूत्तर औ है कै लुगाई ओठी री साळी रै बेटै री बीन्दणी है। कदेई जै घणोज खाच पजै अर होड लाग जावै जद दूजोडौ पडूत्तर जिणमे लुगाई ओठी री मामै सासू ठैराईजै, तौ खरौ गिणीजै अर बीजा दोई पडूत्तर खोटा मानीजै। इण बात री दलील मे कहीजै कै ओठी ऊट माथै उण रै सागै बैठोडी लुगाई स आपरौ गन्नौ यू बतायौ—

नी तौ है म्हारी बैन अर नी है बेटी,
इन्नी सासू नै म्हारी सासू सग्गी मा बेटी।

इण मे लुगाई री सासू रौ हवालौ पैला है अर पछै ओठी री सासू रौ, अर धकै मा पैला अर बेटी पछै कैयोडी है सो लुगाई री सासू मा है अर ओठी री सासू बेटी। इण सारू लुगाई ओठी री मामै सासू टाळ बीजी कोई नी व्है सकै। जै ओठी आपरी सासू रौ बखाण पैला करतौ ज्यू—

नी तौ है म्हारी बैन अर नी है बेटी,
म्हारी सासू नै इन्नी सासू सग्गी मा बेटी।

हमकै लुगाई ओठी रै बेटै री बीन्दणी हू सकै अर वा ओठी री साळी रै बेटै री बीन्दणी ई हूय सकै क्यू कै हमकै ओठी री सासू मा है अर इण लुगाई री सासू बेटी है। सो आडी नै थोडीक फेर नै बोलताई पडूत्तर की रौ की हुजावै।

(२) ऊट आळा ओठी थार धकै बैठी
जका थारी बैन है कै थारी बेटी।
नी तौ है म्हारी बेन अर नी है बेटी
इन्नी मा नै म्हारी मा सग्गी मा बेटी।

इण आडी रौ खुलासौ ई दोवडौ। ओठी भाणेज अर लुगाई मासी तौ

खरी खुलासी अर ओठी मामौ अर लुगाई भाणजी भी व्है सकै पण आडी यूं फेरणी पडै—

म्हारी मा अर इन्नी मा सग्गी मा वेटी ।

कोई-कोई आडू भाटा इण आडी रौ अेक तीजौ पडूत्तर वताय अर अड जावै । तीजै पडूत्तर मे ओठी बेटौ अर लुगाई मा ।

(३) मूवौ ऊट ओगाळे ।

घणी माथौ खपाया ई जद आडी रौ सार नी काडीजै अर घडी-घडी ओइज वैम हूथवौ करै कै मरियोडौ ऊट कीकर ओगाळ सकै ? सेवट जिनै आडी घालीजै वौ थाक'र हेटौ पडै जद ऊट री गाड मे लाल मीगणौ अगेज लै । यू वोलण रौ म्यानौ औ हुवौ कै उण आपरी हार मान ली । जद वताईजै कै काला मरियोडा ऊट ई भळै आगेई कदैई ओगाळ करी ही । ओगाळौ तौ साचोरी मे चारणा रै अेक गाव रौ नाव है । सो इण आडी रौ म्यानौ है कै ओगाळे नाव रै गाव मे अेक ऊट मर गियौ ।

राजस्थानी सस्क्रति मे ऊट मागेडौ रळियोडौ अेकमेक हुयोडौ । साहित रा जाणकार मानै कै मिनखा रै मूण्डै लागोडा ओखाणा अर आडिया सस्क्रति रा आरसी व्है । ऊट सू जुडियोडै ओखाणौ रौ लेखौ लेण वैठा तौ ठा पडै कै भात-भात रा आछा अचूकरा वैठा कित्ता मोथा रै मूण्डै वात-वान मे वोलीजै । चावै जिण घसक री वात व्हौ उण सारू घटोघट बेठै जेडौ ऊट सू जुडियोडौ मुहावरौ त्यार । यू तौ अे मुहावरा ठेट धोरा विचली ढाणिया, रोई म अर कैठी कठै-कठै वोलीजता व्हैला सो सगळै मुहावरा रौ लेखौ लेणौ तौ किन्नेई वस नी । इण गत रा जका मुहावरा म्हारै हाथै पड सकिया वे इण मुजव है—

१ कागला रै सराप ऊट कद मरै = मिनकी रै चाया छीकौ कद टूटै

२ काचौ कुपौ ऊट कौ, या मे मीन न मेख
वामण के सिर चढ्यौ, सगत का फळ देख
= चोखी सगत रौ फल ई चोखौ

३ काल कसूमै ना मरै, वामण वकरी ऊट
वो मागै वा फिर चरै, वो सूखा चावै ठूठ
= थोडै मे काम धकावणिया बिखै मे जीव सकै

४ क्या पर ल्याया कचनी, क्या पर ऊट पचास
गेणै मे ल्याया भालरौ, च्यारू भाई साथ

=अणूतौ दिखावौ

५ चारौ चरै मीगणा करै, ऊट कौ वाणियौ के करै
=अेक चीज मगळी जागा चोखी नी व्है

६ छानी बुलाई ऊट चढ आई=अणतौ दिखावौ

७ जट खोस्या किसा ऊट मरै=चिन्येक घाटै सू नी घवरावणौ

८ जाट को पचोळ अर साड को लखाव छानौ कोनी रेवै
=नी छिपण जोग वात सारू

९ जान मे कुण-कुण आया, वीद अर वीद को भाई
खोडियौ ऊट अर काणियौं नाई
=जिण जान मे मिनख कम व्है उण सारू

१० गधेडै री हुकहुकी तौ ऊट री लुटलुटी=जैडै ने तेडौ

११ चुस्सै के बिल मे ऊट कद मावै=वात पचावण री तागत नी व्है जिण सारू

१२ ऊट वाजै अर बिलोवणो वाजै=धापोडी, दाठीक गवाडी सारू

१३ आगम सूझै साडणी, दौडै थका अपार
पग पटकै वेसै नही, जद मेह आवणहार
=ऊटणी अठी-अठी दौडै, पग पटकै अर बेठै नही जद समभणौ मेह आवला

१४ ऊट खोज्या तो मेरी टोपी उतार लेई=भारी घाटै री अेवज मे ओछी भुगताण

१५ ऊट चढै ने कुत्तौ खाय उणहोणी कौ के उपाय=होणी अटल है

१६ ऊट पर सू पडै भाडेती स् रूसै=आपरी कमजोरी दूजा रै गळै न्हाखणौ

१७ ऊट वडौ हावै ज्यू लारनै मूतै=भूण्डौ सेठौ व्है ज्यू-ज्यू घणी वुराई करै

१८ ऊट मरियौ कपडै के सिर=वठै री कसर कठैई काढणो

१९ ऊटा टेटा टेगडा गुड गाडर गाडा
अतरा मे दुख ऊपजै जे मीडक वोलै नाडा

२० विना मू'री री साड अर नातै री राड न्याल कोनी करै

२१ पावली साड नारनोल कौ भाडौ=रोगीली ऊटणी अर घणी आगी भी री भाडौ, सरदा टूटोडी अर काम अणतौ अबखौ

२२ ऊट रौ वावळियौ सगौ = ऊट रौ गन्नौ (रिस्तौ) वबूल सू वेतुक्की बात

२३ ऊट उसा ने पूछ टूका, ऊट ऊचै न पूछ टूकै
=ऊट लम्बौ न पूछ छोटी

२४ पावली साड पकवान री भूखी = रोगीली लौ साड अर पकवान भावै, आपरी ओकात स बत्ती इन्छा

२५ सोरै ऊट पर दो चढै = भोळै-भाळै ने सगळाई तग करै

२६ हारयोडौ ऊट धरमसाळा कानी देखै = थाकोडौ मिनख घर री हर करै

२७ हाथी हाथ ऊट घोडा बीजा सै चितराम थोडा = जे हाथी हाथ ऊट अर घोडे रा चितराम नी उकेरीजै तौ बीजा चितराम कोरण सारू फाया खावणी विरथा है

२८ पावली साड वनाती कूची = पावली साड माथै चोखौ पिलाण नी फबै

२९ छोड्या टोडा टोडडी, लाग्या नदी वणास
आडोवळौ उलागियौ, छोड घरा की आस

३० ऊवा ऊट ई क्दैई पिलाणीजै = अणूती खाताळ करिया काई सावौ लागै

३१ ऊट आगेऊ बैठे नै लारै ऊ ऊठै = जिणरी सगळी बाता ऊन्दी व्है उण सारू

३२ कदैई तौ ऊट भाखर हेटै ऊ वेवैला = कदैई तौ सेर नै सवासेर मिळसी

३३ बात ऊट रै लारलै आण आयगी = वात विगडती, बात गत्तूई खतम हुगी

३४ ऊट ऊठतोई तीन हिलोळा ठोकै = भडौ ठेट ताई भूडाई नी छोडै

३५ विना मौ'री रौ ऊट = मनमौजी, मत्तौ पडै जठी मडौ करलै जिण सारू

३६ ऊट साथलौ कावलौ = (अ) घडाई सोनै सू मगी पडणी
(आ) विणनै ई फादण खातर फालतू दिखावौ

३७ ऊदी इदरी ऊट री स्वारथ सीधी होय
= (अ) सगळी बाता मे स्वारथ वडियोडौ व्है
(आ) स्वारथ आगै भूडा चोखा विण जावै

३८ ऊट री खोड ऊट ई भुगतै = करणी जैडी भरणी
ऊट री खोड ऊट नै खाय = पापी रौ पाप आप पापी नै इज डकार
ऊट री खोड ऊट नै वोवै जावै

३९ राईकाणी ही डाकण हुई = (अ) बुरे री बरा लागा घणी बुरी विण ऊटा चढ-चढ खाय जावै

(आ) अणूतै विगाड वाली चीज

४० ऊट री खोड ऊट खोडावै = आप-आप री डफली आप-आप री राग

४१ ऊट वाळदी करणी = अणमेळ जोडी, मोटी लुगाई री उण सू उमर मे छोटै मिनख सू व्याव

४२ नगारै री ऊट = धीट, लाजवायरी ।

४३ ऊट मरे धणी री गीठ व्है गिद्धा रै = अेक रै घाटै सू वीजै रै लाभ

४४ ऊट रा हाड गळनाई जैज लागै = घणी धन खुटती-खुटती खुटै

४५ ऊट री गाड मे लाल मीगणी = हार मानणी, थारी गऊ हू रै वापूडा

४६ ऊट वैठै ई दो वेळा = दोराई अेकली नी आवै

४७ अेडोई राड रा भाडेती अेडई राड रा अै = (अ) आपरी भूल वीजा पैला ती वेयो कोयनी ऊट वे वेळा वै रै गळै मडणी

(आ) जिण अवखाई री मोडी ठा पडै

४८ ऊट रै गळै मे मत्तोरी = होडा होड गोडा फोडणा

४९ अरै-अरै ऊट मीगणा करै = जिकी हारती लखावै ऊण सारू

५० कवै ऊट रै वाचा देवै जैडी = अणनी हुसियार लुगाई सारू

५१ छत्तो ऊट खाती पाळी येवै

५२ ऊट आव री माळी, ऊट आव री दाचो

= जिकी दीखण मे सैंठी पण साचाणी साव सोरी भागै जैडी व्है

५३ ऊट री गाड मे वडणा सोरी नै कडणी दोरो = पैला सोरो पण पछै अणती अवखी

५४ ऊट री टोवण मोलावणी सोरी पण ऊट धारणो दोरी

= सगाई ती सारी पण व्याव दोरी

५५ हैकडी—ऊट रै मीगणी जेडी = दिखण मे ठीगणी, भैन्टी अर काळी व्है जिण सारू

५६ ऊट री पूछ रै भाटी = चमकावण सारू करियोडी काम

५७ मायड रै कान म गूथली = चमकावण सारू करियोडी काम

५८ ऊट अरडा नै पाच फरडा = इदकी वात, ममझ मी आवण जोग वात

५९ ऊट री माथी वादीवाळै नै भावै = सगळा सारू सुम नी व्है जिण सारू

६० ऊट मरै नै कूडियौ मिळै=जिकौ आपरै चिन्येक फायदै सारू बीजा रौ घणौ कुफायदौ विचारै उण सारू

६१ कद ऊट मरै नै कद कूडियौ मिळै=मिनकी रै विचारिया छीकौ कद तूटै

६२ ऊट रौ भाकलौ सी नी आडै पण धीई नी आडै=गुण औगुण सगला मे व्है, जिवण मे गुण व्है उणम की औगुण ई व्है, अेक चीज अेक जागा फायदौ करै तौ बीजी जागी वाइज कुफायदौ कर सकै

६३ सायड रौ दूध नी जमैं नी जमावै=अडियै वडियैई आडौ नी आय सकै उण गत्तूई निकामैं सारू

६४ थाकोडै ऊट रौ कर्क तरवार रौ काम करै=विखौ पडिया दूजौ नै अणता दुखी करै उण सोरू

६५ ऊट रौ पाचवौ फरडौ ईडर रौ काम दे=घणी चीज तौ अरथईज आवै

६६ ऊट ऊठ उदैपुर जावै भं-भं करतौ जैपुर जावै=भपकौ पडै जित्तै म काम हूवणौ घणौ चरकौ अर खाताळ व्है उठा सारू

६७ कमरी ऊट व्है यू=डरूफरू होय अर धूजण ढूकै उण सारू

६८ ऊट व्है ज्य=(अ) डीगौ तडौ व्है उण मिनख सारू
(आ) लम्बी डगा भरतौ बेवै उण मिनख सारू

६९ ऊट नाथ रौ सामी=दीसे तौ कीकर अर निकळै बीजी चीज ई

७० गागडता ऊट पिलाणीजै–माडाणी रै विरोध सू की सादौ नी लागै आपरै जिम्मै रौ काम तौ करणौई पडै

७१ ऊज्जड गाव म ऊट आयौ=(अ) डूवतोडै नै डोकै रौ ई आसरौ
लोग जाणै परमेसर आयौ (आ) नी रूख जठै इडियौ ई रूख

७२ के कड बैठै ऊट–अजै तौ धकै भळै ठा नी काई काई व्है

७३ ऊट री पीठ नी लदै सौ गलै वधै, ऊट रै चड नी सौ मडै=पाती आयौ काम भलैई दोरौ करौ अर सोरौ करणौ तौ पडैई

७४ ऊट री पूछ सू ऊट वधियोडौ=आपरै गन्नै वाळा री करणी सू दोराई आवै जद

७५ ऊट रै वाल्हौ ऊट सू ई दिरीजै=आप आप री हैसियत मुजब काम सगळा कर सकै

७६ ऊट री पाद धरती रौ नी असमान रौ=जिकौ किन्नै ई आडौ नी आवै

७७ ऊट रै सागै मिनकी=कैणौ कीं अर करणौ की

७८ ऊट रौ मत्तौ साजी सारू=ऊदबुद चावना
७९ ऊट री रोग रैबारी जाणै=गवार री बात गवार ई जाणै
८० ऊट लावौ तौ पूछ छोटी=की-न-की कसर सगळा मे व्है
८१ ऊट ग्राळी पकड=काठी पकड
८२ ऊट व्है तौ भै भै करा=साधन व्है जिका इज ग्रापरी चावना पूरी कर सकै
८३ ऊटा रै कुण छप्पर छाया=वीजा री ग्रास नी रखणी
८४ ऊट रै गळवाणी सू काई सादौ लागै=ठोकणपीर व्है उण सारू
८५ ऊटा रै व्याव मे गधेडा गीत गावै=ग्रेक माजणै रा मिळै जद
८६ ग्रोठिया नै पोठिया मोळावै=ग्रापरी जिम्मेदारी वीजा रै खवै नाखणी
८७ ग्रोठा ग्राथणिया ना मिळै, ग्रोठा ई वदै जावण पडै, ग्रोठाई कदैई ग्राथणिया जमिया=जिकौ की ग्ररथ नी ग्राय सवै
८८ ग्रोठौ हौ ग्रोखर हिळगौ=भूडै सू ग्रतई घणौ भूडौ हूवणौ
८९ ऊट री हौट कद खिरै ग्रर कद खाईजै=नासमझी री भागदौड सदा ई विरथा जावै
९० कागला रै सराप ऊट थोडाई मरै=कमीण रै चाया तुरी नी व्है
९१ काणौ ऊट ककेडा कानी देखै ज्यू=मजबूरी री निजर
९२ कूजडै रौ ऊट मरै ग्रर तेली भद्दर व्है=लोग देखावौ करणौ ऊपरलै मन री ग्रपणास जतावणी
९३ कूजडौ ऊट रौ पेट भूखौ नी रैवण देवै तौ मौर ई कोरा नी रैवण दे =मजूरी री ग्रेवजी मे मजर री पूरौ कस काडणौ
९४ गमियौ ऊट घडै मे सोधै=नुकसाण हुया ग्रणूती सावचेती वरतै, दूध सू बळियौ छा रै फूका ठोकै
९५ भागोडौ ऊट व्है ज्यू=(ग्र) काम करण मे ग्रणूती ढीलगौ व्है उण सारू
(ग्रा) उग्गड-दुग्गड चाल व्है उण सारू
९६ ऊट कद पिलाणीजैला=रवानगी किण दिन व्हैला
९७ ऊट चढ्यौ है कै पाळौ=(ग्र) ग्रणूतौ डीगौ व्है उण सारू
(ग्रा) कैडा हाल है, सोरौ है कै दोरौ
९८ मैय्यौ न्हाटै ज्यू=घाटकी लावौ कर नै न्हाटै उण सारू
९९ ऊट सारू पाबूजी रौ ग्रोवण (ग्र) वडेरा रै सचियोडौ घन

(आ) ऊट री चराई सारू खालसा जमी

१०० सौ ऊट अर नव ठूठ=अणहोणी बात

१०१ अकल विना ऊट ऊरवाणा फिरै=बळ कित्तोई व्हो अक्ल टाळ की काम री नी

१०२ ऊट अरडावता ई लदै (अ) वेजा हाकाहू कीया की सारी नी लागै
(आ) कट आयो काम तौ करणौ इज पडै भलेई रोऊ-रोऊ करो

१०३ अरडावै ऊट डामीजै गधौ=करै कोई भरै कोई

१०४ आघी नासेट गिया रो धणी घडा मे ऊट जोवै=कुफायदौ मिनख नै वगनौ करदै

१०५ ऊट ऊट री सूघ नै रहसी=जद लखण बायरा रौ साथ व्है

१०६ ऊट खोडावै गधौ डामीजै=करै काई भुगतै कोई

१०७ ऊट किसी कड वैठै=आगै देखौ काई-काई व्है

१०८ ऊट तौ कुदैई कोयनी अर बोरा पैलाई कूदण लागै=बीजा रै गाड रै पाण बूकिया बजावणा

१०९ ऊट नी कूदिया बोरा कूदिया=(अ) वेजा हेकडी पादणौ,
बोरा मायला छाणा कूदिया (आ) बीजा रै बूथै माथै बूकिया बजावणा

११० ऊट अरडावताई लदै=वेजा हाका करिया गैल नी छूटै

१११ ऊट गमजा तौ कामळियौ खोस लोजौ=मोटी गलती सारू चिन्नीक सजा

११२ ऊट गमजा तौ मनै फोट कैदीजौ=दिखावै सारू जिम्मेवारी

११३ ऊट घी देता ई अरडावै अर फिटकडी देता ई अरडावै
=(अ) आपरै फायदै कुफायदै रौ ई गिनार नी कर सकै उण सारू
(आ) हरमेस ई हाकाहू करण रै हेवा पडियोडौ

११४ ऊट चढ्यौ भीख मागै=आपरी हैसियत स फोरौ काम करणौ

११५ ऊट चढै नै कुत्तौ खाय=करमठोक रै नी व्है जैडौ कुफायदौ हु जावै जद

११६ ऊट चढयै नै दो दीसै=कुडसी मिळिया घमड आवै ई आवै

११७ ऊट चढ्यौ गुळ खावै=आपरै बडापणै रौ डडोळौ पीटतौ फिरै उण सारू

११८ ऊट चढयं रौ अर डोकरी रौ काई साढौ=ठरकै वाळै अर गरीब रौ काई मेळ

११९ ऊट चढया सं उचकं=मोटौ ओदौ मिळिया सगळा ग भोपणा तणीज जावै

१२० ऊट छोड्यौ आकडौ नै बकरी छोड्यौ काकरौ, ऊट छोड्यौ आक अर बकरी छोड्यो ढाक=(अ) ठोकणपीर, खावण मे सै की ठोकठोकाय अर धुड्ड हु जावै
(आ) रिस्वत टाळ सगै बाप रौ काम ई नी करै उण सारू

१२१ ऊट लदण मू गयौ तौ काई पादण सू ई गयौ=अबखौ काम नी कर सकै जकौ गत्तूई नाजोगौ नी व्है

१२२ ऊट डूबै जठै गाडर री काई थाग=औकात सू बारै हेकडी पादै उण मारू

१२३ ऊट नारेळ गिट गियौ=खोसणियं नै हजम नी व्है जैडी चीज

१२४ ऊट नै ऊठताई ढाण नी घातणौ=अणूगी सातावळ सू बात बिगडै

१२५ ऊट पछडा सू माखी नी उडा सकै=सगळा मे ई की न-की कसर व्है

१२६ ऊट, बटाऊ पावणौ ज्यू खाचै ज्यू जाय=(अ) कैया घणा करडा पडै
(आ) कैवौ ज्य ज्य ऊदौ करै

१२७ *ऊटमरिया कप्पड सिर बोझ*=(अ) खावै सूर कूटीजै पाडा
(आ) आपरौ घाटौ बीजा सू वसूल करणौ

१२८ ऊट मरै जद मारवाड सामी मूडौ करै=मरती वेळा मुलक नै याद करणौ
ऊट मरै जद आयूण कानी जोवै=मरती वळा मुलक री याद

१२९ ऊट मरै जद लका सामी जावै=(अ) (मरतौ ऊट आपरै भरखा (लका) सामी जावै) भूख सू मरै उण सारू
(आ) (सिंध मे लक्यं नाव रै गाव मे पैलपात अरब सू सायरौ बागाणी ऊट लायौ। उठैऊ पाबूजी तेड लाया) मरती वेळा मुलक नै याद करणौ
(इ) घरघटियौ व्है उण सारू

१३० ऊट मरै जद चीचडा ई मरै=अेक दातार री मौत कैया री मौत व्है

१३१ ऊट बळद रौ काई जोडौ=अणमेळ ब्याव, अणमेल जोडी

१३२ ऊट विलाई ले गई हाजी-हाजी केणो = माडाणी री मस्केवाजी

१३३ ऊट वेच्यो कितरै कै लायो जितरै = करियो जंडो भरियो, चोर रै घर मोर

१३४ ऊट मे सीधापणो काई दीसै, वो तो मूतै ई टेडो = कमीण सू चोखी ग्रास करणो विरथा व्है

१३५ ऊट मोटो व्है ज्यू-ज्यू लारै मूतै = उमर सागै चोखा-भूडा लख्खण ई वधै

१३६ ऊट रा गुल्ला स्याळियो कद खावै = नासमभी री न्हाट-दौड विरथा जावै

१३७ ऊट री किसी कळ सीधी = कुटळा मे को चोखो नी व्है

१३८ ऊट री गौड ऊट ई पावै = भूण्डै री भूण्डाई ग्राप भूण्डै नै ई दुख चाचियो ऊट घणो नै खावै देवै ग्रर वीजा नै ई सतावै

१३९ ऊट री लावी गावड काटण सारू थोडी व्है = घणो धन लुटाइजै थोडीज

१४० ऊट री लावी गावड कोई दो वेळा नी वाढीजै = घणो धन लुटाईजै कोयनी

१४१ ऊट री चोरी ग्रर छानै मानै = कोजी वात रो फळ तो मळसी'र मळसी

१४२ ऊट रै पेट मे जीरै रो वघार =
ऊट री जाड मे जीरै रो काई थाग लागै
ऊट री जाड मे जीरै रो काई पत्तो पडै
(ग्र) घणखाऊ सारू
(ग्रा) जिण री चावना घणी वढी चढी व्है ग्रर जिनै थोडो-घणो तो दायई नी ग्रावै

१४३ ऊट री नस वाकी कै पाधरो कठै मू है
ऊटथारी नस ग्राटी है कै माजी सवो काई है
= वुराई रो घर व्है उण सारू

१४४ ऊट रै गळवाणो स काई सदै = फालतू रा उपाव, की ग्राडो नी ग्रावै जका चीज

१४५ ऊट नै गुलगुला भावै = उदवुद चावना

१४६ भूखो ऊट ग्रोडै कानी दोडै = जरूत सगळा सू भारी व्है

१४७ म्वीजियोडो ऊट व्है ज्यू = मूडै ऊ ग्रावळकावळ वकै उण सारू

ओ तो ओठो जवरजग
छठे नेस वाळे रग
भलो साईड जायो है
ओठो नाम मेवायो है
ऊट नस तार्ण है
जगजी माया मार्णे है
देवी कागज लिखियो है
चवदे सो मे विकियो है

ऊट री इण भात री चावना रै पाणई सगळी धरती रा ऊट मरूखेतर मे आय पूगा। १९६६ री सरकारी मरदमसुमारो रै मुजब राजस्थान मे साढी छ लाख नेडा ऊँट है। आ ओळी बीजै किणी मुलक रै ऊटा री तादाद सू घणी भारी पडै। ऊट री वेबट अर बधापै रा जतन गाव, ढाणिया अर टोळा मे तो व्हैइज है, १९५९ मे बीकानेर मे 'अखिल भारतीय ऊट प्रजनन केन्द्र' थरपीजियो जको आसै भारत मे इण गत रो अेकाअेक केन्द्र है।

इण मुजब मरूखेतर रै टाबरा, लुगाया, मोटियारा अर बूढै-ठाढा री जीवारी रै साथै ऊट काठो किड'र जुड़ियोडो। साचाणी मरूखेतर रै अगन-थोट री कोयळी री पुडदा मे वळेटियोडी है थली रै मोथा री जुगा-जुगा री करणी।

मोदीलौ जूंझार

लेख राजस्थानी संस्कृति मायं गरव करणियं सर प्रताप री करणी री लेखो-जोखो है। आज जद आपूणी संस्कृति भारत रै रीत-पात मायं आपरो रग चाढण खातर उण सू थापिया आयोडी है सर प्रताप जेडै मोदीला री याद आपंई आय जावै।

कमध हुवाई जूझ नी छोडी जूझ्यो करया अर इण जूझारी रै पाण घिन कमायौ, वडेरा ताई नै जम दिरायौ जिका तो जुगा सू जूझारा रा जूझार गिणीजता ई आया है। मायड भोम री रुखाळ खातर जूभिया अर माथौ ऊचौ राखण रौ मोल आप माथोइज दे काडियौ उणा री जूझारी टकै आगली खगै। छाती घावा सू बीदायदी पण मोरा माथै वैरी रौ चिगदोई नी पडण दियौ व्हेई जूझार कैईजै अर कंडजवो करैला। मैं'ल-माळिया, मखमली पथरणा अर पाचू पकवाना रा बीमू थाटा नै ठोकर ठोक, सौ-मौ सोराया ने सुगाय मुनतग्ना खातर अलेख अवखाया उसणण री अगेजी व्हेई जूझार। साम-धरमी पाळना घाटकिया दे काडी वे, अर आपरी छीया आयोडै री रखाळ करता कुळ नै होम दियौ व्हेई जूझार। क्षात-धरम री खेव खातर जूझिया व्हे मगळा ई जूझार गिणीजता आया है। काई तो चारण-भाटा, काई साहितकारा अर काई इतिहास लिखारा इणा री करणी ने घणीऽसराई। इणा जूझारा री करणी रै पाण कित्ता रा ई हीया खुलिया अर गुमेज सू भरीज्या। अेक समौ हौ जद इण जूझारा री करणी सू मोदीज अर मिनखा ने इणा जेडा करतब करण री सीख मिळती। उण वेळा मुलक री रखाळ, उण ने मुनतर करावण खातर अर कै पछै वैरिया रै हम्ला सू बचावण खातर अेडा हीयौ हथाळी लेवणिया जूझार इज आडा आय सकता हा। रण-खेतर मे अजुताई उणारी जूझारी ऊडी रै ऊढी जोईजै। इण सारु मिनख रैवैला जद ताई इणा री जूझारी ने सरावणी पडेला। राजस्थान री धोरा धरती अेडा

जूझार जणण सारु घणी उपजाऊ रैई। इण सारु इज राजस्थानिया री माथी अजुताई गरव स ऊंची हुयोडी है। क्षात्र-धरम री रुखाळ सारु माथा देवणिया जूझारा रा लेखा लिरीजताई अचाणचक अणफै मे मतैई हाथ मूछा माथै वट देवण खातर पूग जावै अर 'अह अह' ठसकै सू खखारा करीजण ढूकीजै।

पैला रजवट री रुखाळ सारु जूझणिया री घणी उडीग ही, जद सगळा लिखारा री आस्था इणा नै जोयवौ करती। सो बीजा कित्ताई जूझार जिका रण-खेतर सू आधा समाज मे वडियोडी कुरीता ने काटण-वाडण सारु जूझिया व्है खुणै खोचरै पडिया रैय गिया अर लिखारा री आख हेटै ई को आयानी। आपरी मायड भासा, रीत-पात, गैणा-गाठा, गावा लत्ता अर मायड भोम माथै मोद करता अर मात समन्दा रै पार पूगा ई आप री रीत-पात रै गरब मे गैळीज्योडा रैवता। ओपरी सू ओपरी जागा अणसेन्दै मिनखा विचै ई आपरी भासा अर पैरवास ने सगळा सू सानरा गिणता। जीव मे जीव रैयो जितै आपरी सस्कति री मरोड अर ठसकै री गैळ सू गैळीज्याडा रैया। आपरी सस्कति री चोगाया ने जग चावी करण सारु कोडाया-लाडाया जूझता रैया। आज रा माटियार यूरोप री सभ्यता मे रमीजण सारु डुळता लाळा पटकती दीसै। वैलबाटम, पैरैलून, पत्थर, नैरौ, काऊबॉय, नफारी गावा ठठाय आपनै कैठी की अर की गिणै। चाल-ढाल ताई मे वाग्ला री लटकी लायण री खप्पत करै। इण वेळा जद कै नुवी आयूणी सस्कति अठा री जनी सस्कृति माथै आपरो रग चाडण खातर उण सू बाथिया आयोडी है। अैक-अैडै जभार री करणी नै चावी करण री खप्पत चाईजनी है जिकौ जीवियो जिनै आपरी सस्कति माथै मोद करतो उण री चोगाया री रुखाळ अर उणाने चावी करण सारु जूझियो। इण मोदीलै जूझार री करणी रै पाण टेट विलायत तक मे उण री सस्कति रा डका बाज गिया अर अजैताई घमीड उठनाई जावै है। आ जूझार अेरण वानी आपरी सस्कति री चोगाया रै मोद मे फाटतो नी बीजै कानी उण री हिवडी आसर-मोसर, न्याता रा जीमण, टीकै, दायजै, बाळपणै रा ब्याव अर विधवा री रुळर सू टमरको सो इण जूझार नै दावडी जूझणो पडियौ। हाथा मे तरवार ले'र वैरिया सामा मचाभच मे जूझण सू घणो अवखो आपरा जिनै जुगा सू पडियोडी कुरीता छोडावण सारु जूझणो व्है। जुद्ध री जूझ दिराई जग री टीको अर कुरीता सू जूझण मे पाती आवै भूण्ड री टीकरो। आपरी जागावा अर ओपरै मिनखा विचै चोगाया चावी करण सारु अर आपरा विचै कुरीता छोडावण सारु दोवडै जूझतिरै नेत-भर

काळजै रै धणी मारवाड रै सर प्रतापसिंह राठौड री जूझ ने राजस्थानी रीत-पात रै हेताळुवा विचै चावी करण रौ जतन ओ लेख है।

मारवाड रै इतिहास, रीत-पात अर संस्कृति री कोई थोडोक भी जाणकार व्है तौ 'नेकिन-नेकिन' अर 'म्हारौ बेटौ' आखरा रै कान रै पडदा सू टक रीजण रै समचै उण सामी अेक भोळै-भटूक निस्कपट मिनख रौ चितराम आय ऊबै। ओ चितराम मारवाड री संस्कृति रौ सांतरौ नामून लखावै। थोडीक सूझ सू इण चितराम री ओळखाण करताई ठा पड जावै कै अठा रा टावर केडा भोळा, प्रकृति सू अखूट मोह राखणिया, चंचळ भणाई गुणाई सू भै खावणिया पण चकोर बाळपणै सू तरवार बन्दूक सू लाग राखणिया अर निडर अेडा कै जंगल रै जीवा सू छडा बाथिया आवता रत्ती-भर नी झिझकै। मा बाप अर भाया सू अेडौ बेलाग मोह राखणिया कै उवा री थोडीक् सोराई सारू भारी सू भारी अवखाया भेळण ने आठू पोर उतावळा व्है। इणीज 'नेकिन-नेकिन' अर 'म्हारौ बेटौ' तकिया कलाम आळै सर प्रताप रै चितराम मे दीसै मारवाड रै मोटियारा री सगळी चोखाया अर बडेरा रौ दाठीकपणौ। जै कोई मारवाड री संस्कृति री ओळख करणी चावै तौ उणनै अणूतौ पचणै री जरूरत नी, वो कोरै सर प्रताप रै जीवण री जाणकारी करलै। मारवाड रै सगळै इतिहास मे सर प्रताप स इक्कीस अठा रै मिनख रौ चोखौ रूप बीजौ कोई नी मिळ सकै।

सर प्रताप इण बात सू वाकिब हा कै टक्का खरच अणूतौ माथौ खपाय अर अंग्रेजी, फारसी कै, दावै जिकी भासा ई सीखीज सकै। पण मायड रै दूध सागै जिकी भासा हीयै रम्योडी व्है उण सू सोरी सुवावणी बीजी मरिया ई नी व्है। काई तौ अणभणिया आडू अर काई भणियोडा सगळाई मायड भासा मे आप रै हीयै री वात सावळ कैय सकै, मायलै उजास ने चावौ कर सकै। थोपियोडी, माडाणी थरपियोडी भासा मे तौ कोरी रटाई सू चाटियोडा सबद पाछा उगळीज सकै। सर प्रताप मायड भासा नै राजसी काम-धाम री भासा बणावण खातर कित्ता जूझिया, इण बात री ओळख सारू सर प्रताप अर उणा री करणी सू इज बीजै ओदैदरा रै हुक्मा री नकला गिणाइज सकै जिकी अजुताई गजेटियरा मे मंडियोडी पडी है।

४ मार्च, १६०८ नै ओ हुकम काढियौ "सारा ओदैदारा नै हिदायत की जावै है कै मारवाडी जबान मे लिखा पढी किया करौ। हाल ताई ओदैदारा मारवाडी मे इजार फैसला लिखणा सरू नी करिया है जिण सू फेर हिदायत

की जावै कै उडदू, फारसी आखर काम मे मत लावौ अर मारवाडी मे काम करिया करौ।"

१ सितम्बर, १९१० "ओ हुक्म हू चुकौ है कै फैसला, इजार व आपमरी लिखापढिया मे मारवाडी सबद काम म लाया करै। पण ओदैदार नितनवा उडदू, फारसी, अरबी सबद काम मे लावै। जिण सू विचारा करसा अर निगिया-पढिया मिनख भी नी समझै। सो इण बाबत आम हुक्म जारी हो जाणौ चाईजै कै मारवाडी सबद काम मे लाया करै। खास कर पुलिस अर फौजदारी वाळा विचारा करसा वगैरा रा इजार मारवाडी मे नई लेणा सू, ने फौजदारी मारवाडी सबदा मे नी देणैं सू उणा रौ कैणौ उणा री समझ म नी आवै जद केई झगडा पड जावै। सो उणा ने हिदायत हो जावणी चाईजै सो जिण किणी नै पूछै वो मारवाडी मे पूछै अर वे केवै उणी सबद मे लिखै जिण सू झगडौ किणी किसम रौ पडै नी।"

५ अक्टूबर, १९१२ "जे कै पैला रै हुक्म माफक कुल कारवाई मारवाडी मे व्हैणी सरु व्हैगी। पण हमार थोडा अरसा सू कुछ कारवाई उडदू मे होणी सरू व्हैगी ने लोगवाग भी उडदू मे अरजिया दे देवै है। सो पैला री हिदायत माफक हर खास आम ने इत्तला दी जावै कै मारवाड मे सगळी कारवाई मारवाडी मे व्है। सगळै महकमा ने इत्तला दी जावै कै इणरी पाबन्दी राखै। इण सारू हुक्म हुवौ के मारवाड मे आ हिदायत साया करदी जावै।"

ऐ सगळा हुक्म सर प्रताप रै नीजू भासा सारू जूझण री साख भरै है। अबार ताई राजस्थानी रा हेताळू जठै-तठै इण वैस मे अळूज्योडा आफळिया सावता दीसै कै राजस्थानी भासा है कै नी। पण घणा बरसा पैला सर प्रताप नै आपरी मायड भासा माथै अणतौ मोद, भरोसौ अर गरब हौ। सर प्रताप कोई घडी-घडी रग बदळणिया किरकाटिया तौ हा कोयनी, सो दिखावौ उवा रै नैडोइज को फटक सकतौ नी। ऐ हुकम कोई हाती-दात दाई थयोथौ नाख अर वाह-वाह रा लावा लूटण सारू को हा नी सो इत्ता जतना पूठै ई जद फारसी उडदू अर बीजी भासावा री तीन बीसी मिसला सर प्रताप सामी पूगी तौ रीस सू वाटकिया भरता इणा ने भीर भीर कर बिखेर दी अर 'मारवाडी मैं लिखियोडी व्हैणी जोइजै मारवाडी मैं' य हाका करण ढूका।

सर प्रताप री मारवाडी भेळ री अग्रेजी मुलका चावी है अर अजुताई

वतळ करता हुयाईवाज 'गोडा-गोडा वाटर इन दी वूण्डिया' करता दीसै। आ कीकर व्है सकै वै वोसू' वरसा ताई मुसाहिब-ग्रै-ग्राला ग्रर रीजेन्ट रैवणिया, ग्रापरी सूझ सू ग्रलेखू प्रसासनिक सुधार करणवाळा, राजपूत समाज री कित्ती ई कुरीता नै मिटावण सारू जूझणिया, ग्रफगानिस्तान, मिश्र, तुर्की ग्रर चीण जेडा मुलका मे ग्रापरी जूझारी रा डका वजावणिया सर प्रताप मरिया जठै ताई 'गोडा-गोडा वाटर इन दी वूण्डिया' सू धकै अग्रेजी नी भण सकिया। इण मू कोरी ग्रेक वातइज सामी ग्रावै वै सर प्रताप नै अग्रेजी भणवा री जच्चीज कोयनी। कदाम वै इण ने विदेसी भासा गिणता। इण सू इज मरिया जठै ताई सर प्रताप अग्रेजी नै को ग्रगेजी नी।

मारवाडी भासा ग्राळी क्ळाई सर प्रताप नै मारवाडी पैरवाम माथै ई ग्रणूती मोद ही ग्रर वै मारवाडी पैरावै नै दुनिया-भर रै पैरावा सू फूटरी गिणता। महारानी विक्टोरिया री जयन्ती मे भेळा हूवण खातर सर प्रताप विलायत गिया जद री कित्ताई वाता ग्रजुताई चावी है। डोकरा रै मूण्डै ग्रक ग्राई वात घणी चढियोडी है कै मिश्र पूगा सर प्रताप जहाज सू उतर गिया। खुस्की रै मारग फिरता भटकता तुर्की, ग्रास्ट्रिया ग्रर फ्रास दखता लन्दन पूगा। करणी कुण देखी, सर प्रताप तो लन्दन पूगा परा, पण वो ग्रगनबोट जिण मे गावा-लत्ता ग्रर सगळो ग्रसवाय हो मारग मैं इज ग्रडड्घप्प करतो गपिन्दा खावतो समन्दर मे डूब्यो परो। जयन्ती रै उछव सारू जिका गावा मारवाड रै ठावकै दरजिया सू सीवाया, वैई गपिन्दा खावतै जहाज भेळा डूव गिया मिनखा कित्ताई निवरा करिया, भात-भात री पोसाका सामी लाय पटकी। पण नीजू पैरवास रै गरव मे गेळीजतै मोदीलै मिनख नै बूट-सूट टाई कीकर भावती। सो सगळा कळाप विरथा गिया, ग्रर सर प्रताप टस-ऊ-मस नी हुया। घडी-घडी वाइज् रट कै जाऊला तो जोधपुरी विरजस ग्रर जोधपुरी कोट मे इज जाऊला, नीतर 'जयन्ती ग्रापरी ठौड ग्रर म्हैं म्हारी ठौड।' भलै मिनख नै घणो समझायो कै लन्दन मैं जद जोधपुरी विरजस ठावै जैडो टेलर कठै पडियो हो। पण 'मरै जिन्ना घर सर, वीजै गावा ने मगैई नी।' ग्रा कैडीक भूण्डी हुई। अग्रजी सरकार रा अग्रेज चाकर सर प्रताप नै समझावता-समझावता थाक ग्रर हेटा पडिया। सेवट लॉर्ड रोजवेरी री मैम कनै मीनखाप रा गावा हाथै लागा। लन्दन रा ग्रेक टेलर ने पकड, कनै वैठाण, समझा-वुजा ग्रर सर प्रताप रै मारवाडी पोसाक ठाईजी। उण टेलर रा भाग जाग गिया। लन्दन रा केई रईस सर प्रताप जैडी बिरजस रै

ओडाया उण टेलर कनै पूगण ढूका। अठै इज वा नी हुई। लन्दन मे जोधपुर रै नाव सू फैसन चल गियो जिको अजुताई चावौ है। आज ई प्रताप री जूझारी रै प्रताप सू इगलैण्ड मे किताई अर्ल, ड्यूक, पीयर्ल अर लॉर्ड बिरजसा ठठायोडा निगै आवै। भारत मैं रैवता थका विलायती गावा नै ठोकर ठोक-णिया तौ घकै आवता वेई हुवा। पण अंग्रेजा रै राज रै ठेट मभ मे पूग महाराणी रै उछब नै सूगावण-आळा आपरै पैरवास सू अंडी लाग रागता मोदीला जूझार तौ जोयोडाई को लादै नी।

प्रिन्स ऑफ वेल्स भारत आयो जद लाट साब सर प्रताप ने उण रौ अ०डी०सी० मुकर करियौ। सो सर प्रताप सदा प्रिन्स रै सागैई रैता। लखनऊ रै नवाब प्रिन्स री गोठ करी। गोठ मे अळगी-अळगी भोम रा राजा नवाब भेला हुया। डीनर री वेला सगळाई करडाधज हुयोडा डीनर सूट भिडायोडा। सर प्रताप बैठ्या तो प्रिन्स रै अडाअड डावै पासै, पण डीनर सूट नी। रातौ चट्ट जोधपुरी कोट अर बिरजस ठठायोडा कडाजूड हुयोडा। सर प्रताप नै टोकण जोग, कै मस्करी उडावण जोग अजवो तौ कोई री ई मायड खायौ को होनी। पण तोई नवाब अर बीजा केई टुकर-टुकर अेक बीजै सामा जोवता टमरका करण ढूका। आपोआप प्रिन्स थोडसोक मुळक दियौ। इतौ खटाव कठै, खट्टदेणी रा ऊबा होय'र कोट नै अेक हाथ सू बतावता थका मोद सू सर आपरी अंग्रेजी मे धडूकिया, "आई अेम जोधपुर, आई अेम जोधपुर।" सग तौ कैठा कैणौ चावता कै मैं जोधपुर रौ हू अर आ जोधपुरी पोसाक है। पण मनै लखावै जाणै सर भोळापै सू साव साची बात कैई। साचाणी इण जूझार ने मारवाड री सस्कृति रौ प्रतीक गिण सका।

मायड भासा अर नीजू पैरवास रै गरव मैं मोदीज्योडै इण जूझार रै जीव मे मायड भोम मारू अखूट मोह हब्बाहोळ भरियोडौ हौ। महाराजा जसवतसिहजी रै कुटिल सलाहकारा माथै खीज अर सर प्रताप अचाणचक घोडौ खिडविडावता जयपुर जाय पूगा। उठै महाराजा रामसिहजी अणूती खातरी करी, अर अछन खमा करता। पण सर रौ जीव तौ मारवाड मे अटकियोडौ। सर ने सिगमिणौ देख रामसिहजी सिकार री मनादी उठवाय अंग्रेज पावणा ने सिकार करावण रौ काम सर रै खादै नाख दियौ। जयपुर री कौंसिल मे मिळण री झोडी मनवारा हरमेस करवौ करता। लाख री आमद आळी लालसोट री जागीर कैठी किती वार थोरो। जागीर री हा'करावण सारू रामसिहजी अणतौ जोर देवण लागा। जद सेवट सर प्रताप

हीयैं री बात होटा लाया कैं "आखिरकार म्हू हू तौ मारवाड री जीव अर सेवट तौ कदेई-न-कदेई मनैं पाछौ जाय अर मायट भोम री चाकरी मे लागणौ पडैला।" साचाणी १८७७ ई० मैं मारवाड रैं मानखैं री दोराया अर जसवतसिंहजी रैं चाटुकारा री अणूती कुटिळाई रा बावड पूगताई झट रीस थूक जयपुर री सगळी सोराया न त्याग अर सर प्रताप मारवाड श्राय पूगा। राज री ढाचौ सावळ जमावण सारू जूझण लाग गिया। जिण वेळा पिता तखतसिंहजी प्रताप ने जाळोर इनायत करण री इच्छा करी तौ प्रताप कैंयौ, 'जै श्राप मनैं जाळोर परगणो बख्सा दिरावोला तौ अेक तौ म्हारैं बीजे भाया रैं मन मे गाठ पड सकै अर इण सू मारवाड राज नैं धक्कौ पूगैला। क्यू कैं उण री अेक घणौ महताऊ परगणौ उण सू न्यारौ फट जावैला।" साचाणी मारवाड, राजस्थान रैं सगळैं रजवाडा म, सगळा सू मोटौ इण सारू इज हौ कैं अठैं कवरा ने परगणा बख्सण री रीत कोयनी ही। जोगा होवता जिकैं नुवी ठोड जीतता। जैं प्रताप नी नटतौ तौ मारवाड री किरचिया-किरचिया करावण री भूण्ड प्रताप रैं गळैं मडीज जावती। श्राप मारवाड टूटताटूटावता चिन्योक होय ऊबौ रैवतौ क्यू कैं श्रेकर नुवी रीत पडी अर पडी। मारवाड री चाकरी सारू ईडर री राज सुणावणियौ प्रताप जाळोर खातर मारवाड रा भट्टा बैंठावण री हामल भरिया ई कीकर भरतौ।

आज, कैई मिसन धाडायतिया ने धाडा छोडावण सारू जूझै है। सर प्रताप जाळोर, सिव अर साकडा रैं १६८ धाडायतिया अर बारोठिया रा सस्तर नखाया। धाडायतिया जीवै जितै धाडा नी पाडण री श्राखडिया ली। राज रैं बुलाया हाजरी देण री हामळ भरी, अर सर प्रताप उणा नैं खेती सारू पेट पाळण जोग जमीन दिराई। सो धाडायतिया ने भळै भलैंमिनख री जूण में लावण सारू सर प्रताप घणा पैलाई घणा जूझिया।

श्रापरी मायड भासा, परबास अर मायड भोम रैं गरव सू गैळीज्योडै मोदीलै जीव रैं हीयैं राजपूत समाज मे घर करियोडी कुरीता ने देख देख अर सटीड उठता हा। सो न्याता रैं जीमणा सू लैंणा मे कळीजतैं मिनखा रा बिखा देख श्रोसर-मोसर रैं खातमे सारू जूझिया। छोरिया ने मारण री रीत नैं छोडावण सारु भाटैं री सीलाडिया माथैं खुदायोडा हुकम नवकोटी मारवाड रैं गढा री पोळा माथैं लगवाया। टावरा री भणाई सारू स्कूला खोलाई। मोटैं ठिकाणा रैं सागैई खेतखडियैं अर सिपाई रैं टावरा सारू भणाई री सरजाम करियौ। दहेज री रीत रोकावण सारू खप्पत करी। जाखन रैं

लछमणसिंह भाटी री कवरी सू व्याव री वेळा रीत मुजब सासूजी सू र
मागण री छूट मिळी जद पचास रिपिया माग अर मिनखा ने इचरज मे
दिया। नवकोटी मारवाड रै धणी री कवर पचास रिपिया दहेज ग
दहेज रै हामिया रै भोगनै मे सूकोडै खारडै रा फटीड-फटीड अलेखू प
धर दिया।

अेकण कानी ओ मोदीलो जूझार जूझियौ आपरै रीत-पात रै ग
लौ वीजै कानी कळपतै काळजै सू जूझियौ आपरै भाई-भनीजा अर व
वावा सू जुगा सू जुडियोडी कुरीता नै छोडावण खातर। सो इकेवड
दोवडो जूझार हौ।

गूगोला विला मैं गूजै अर डेडरिया वेरा-वावडिया मे पटिया
टर करै। आप री मायड भोम स धणी आगौ अजाणी ठोडा अर अ
मिनखा विचै पूग अर जूझ माडण री गाढ सगळा मैं नी व्है। सर प्र
जूझिया अफगानिस्तान मे पूग'र पठाणा सू, फ्रास मे पूग'र जर्मनी रा
रै हिमायतिया सू अर ठेठ चीण मैं पूग अर जूझारी झाडी। सर प्रता
जोड री साठ-पैसठ वरस लीया जठै ताई जुध-खेतर मैं जूझणियौ जूझा
कैठी कितरै जुगा सू अेक-आधो ही'ज जलम लेवतौ हुवैला।

सो सर प्रताप कोरा रण-खेतर मे जूझणिया इकेवडा जूझार इ
हा। मागैई सामाजिक कुरीता मिटावण खातर जूझिया सो दोवडा जू
हा। इण दोवडी जूझारी रै सागैई सर आपरी रीत-पात री चोखाया
रुखाळ सारु ई जूझिया सो साचाणी सर नै तेवडौ जूझार कैय सका।

जूनी रम्मतां

राजावां रै श्रोळा-दोळा तौ लिखारा ठंट सूं ई भवता श्राया है। ढोलियै रै कोटार ताई री श्रलेखू पोथियां श्रजुताई रुखाळीजै। पण पैला कुजकोई रौ कोई गिनार ई को करतौ नी। समाज रै हेटलै तबकै रै मिनखां रै मनबिलमास री रम्मता किसी-किसी ही श्रर कीकर रमीजती इण माथै कुण गिनार करै। करतां करतां जूनकी रम्मता हुवा हुवण ढूकगी। श्रजुलाई तौ कैठी गावडा श्रर ढाणिया रै पाडलै पातरतै पाणी रै नाडा नाडिया री पाळ माथै सींव मे चरतै लरडिया श्रर साईडिया रै श्रेवड श्रर टोळा रै पाडली खेजडिया री छींया, लू रै खेंखाडा रै बिचै, धोरा री टेकरिया माथै, भाखरा री जडां श्रर खोवा मे कित्ताई श्राड् भाटा रोई रै मोर श्राळो वळाई श्रापरी धुन मे मगन हुवोडा रम्मता मे श्रळूझियोडा रैवता व्हैला। सो इण लेख में तौ म्हारौ भेळ कीं कोयनी। रम्मता जुगा सूं जिका श्राड् भाटा रमता श्राया हे उवा री है श्रर उवा रा इज गूथियोडा है श्राछा श्रचूकरा बोल। श्राप म्हैं जिकी रम्मता बाळपणै रमी है उवा रौ इसारौ करता थका श्रेक चोखड नांव री रम्मत नै सावळ लिखो है।

नानौ गीगलौ हाथ-पग पटकतौ व्है जद मावड उणनै रम्मत मे लागोडौ गिणै। हीण्डी मे पडयौ टाबर गट्टा-पट्टा सू रमै। बाळपणै मे घरकूलिया, ढल्या श्रर भात-भात रै रमेकडा सू रमै श्रर डाकणिया सू डरावै नी जित्तै घणी रात ताई टाबर-टीगर रम्मत मे डूबोडा इज रैवै। ज्यू-ज्यू डील श्रर ऊमर वधै रम्मता ई बदळती जावै। बाळपणै सू लेय'र डोकरौ व्है जठै ताई साथीडा रै साथ, डील-गाढ बधावण, जस लूटण, हीयै री हूस, होड-कोड, श्रर श्रापोश्राप नै बिलमावण खातर नित रै कामकाज स् निवडताई मिनख रम्मत रौ श्रासरौ लेवै। न्यारी-न्यारी ठोडा री रम्मता ई न्यारी व्है सो इया रौ कोई छे है नी पार। कुण जाणै कैठी किसी-किसी श्रणदीठी, श्रणसुणी श्रर श्रजाणी रम्मता

वठै-कठै रमीजती व्हैला।

रम्मता नै इतिहास-लिखारा किणी समै रै मिनखा री करणी री आरसी गिणै। इण सारू सिन्धु घाटी रै समै रा मिनख किया रमता, आर्य अर मौर्य कीकर मन विलमावता इण रौ वखाण घणै चाव सू करीजै। राजस्थान मे मन विलमावण री रम्मता किसी ही इण रौ वखाण रयाता-वाता मे मिळै। 'अभिलक्षितार्थ चिन्तामणि' या 'मानसोल्लास' जिसी पोथ्या तौ कोरी मन विलमावण रै साधना सू इज भरी पडी है। समै रै हेलै माथै हाल'र लिखारा चौपड-पासा, सिकार, भीमरयोडै हाथ्या री लडाया, रथ-दौड, घुड-दौड, पाडा, भैसा, मीण्डा अर मिनख ताई री लडाया रा वखाण तौ घणाई करिया है। पण उणा राणियै-राईकै, भवरियै रजपूत, भीरमै-विस्नोई, लूम्बै-जाट, पीरियै-पिन्जारै, हासमियै-लवार, वळियै-भाभी, भीखियै-भील, कानियैधाची, मुक्नियै-मोची, गणियै-ग्वाळै अर करणियै-चारण माथै दीठ नी नाखी। घणी पैला री छोडौ दो-अेक बीसी वरस पैला ओमजी-भोमजी जिका रम्मता रमता वैई हमै लोप व्हैगी। आगला बीस वरसा मे डुगरियै अर धीगडियै रा टाबर जै इया रम्मता रा नाव सुण इचरज सू बाकौ फाडलै तौ की नुवी बात नी व्हैला। हमै त्रिकेट री कमैन्ट्रिया सुणताई को थाकैनी उवा रा वाप-दादा आपरै बाळपणै री वेळा जिकी रम्मता रमता ई को थाकता नी वे है चीखड, झुरती, दाळ सीजी कै भीजी, लूण खाळौ, उत्तर भोखा म्हारी बारी, मीया घोडो, टीलम टी लौ, हुडु मिरकली (चील-चील हुड्डी), इक्कड-बिक्कड, दडी-दोठा, मार-दडी कोईडौ, आधल घोटा, आवळियौ,लुक्का-लुक्की, पकडा-पकडी, चिरमी ठोला, आटी-टाटी, चट्टी-खावणी, क्वड्डी, ठीयादडी, मगरादडी, चट्टुमारौ, गिल्ली डडा, सुन्तोळियौ, चकचून्दिया, धुन्ना, चर्र-भर्र बाथळियौ, किलौ-लूटणी, अन्द-भ्रन्द राजा, चौपड, सितरज, गुळगुचिया, कोडिया, डबिया, गग्गा, छाया, लट्टू, अटकण-बटकण, अका-मूठ, आन्धौ-भैसौ, अडिदौ, आवणियौ-कुतावणियौ, आमियाजी-आमियाजी, कच्चौ-पक्की, खारियौ, कूची, कूता, दोठा दडी, मगरा दडी, कुचिया दडी, चुटिया दडी, कुत्ता मिन्नी, ठीया दडी, डू-डू, डोकरी, डेडरियौ, टूम-टूम-छल्लौ, टीगटिगोळी, नार छाळी, नव नागोरी, फदकण, बीसियौ-तीसियौ, धोकळ लकडी, ऊठ-बैठ, इल्ली मिल्ली, आलौ लिम्तर, माल दडी, भागियौ, मछीजी-मछीजी, वाडियौ कुवौ, भव्वा टी, राजा राणी, राई राई रतन तळाई, सात ताळी, सोळै काकरी, हुडदडौ, हुड्न्दौ, हूस-हूस, हुडकियौ-दुडकियौ, कुच कुच मीगडी, रैल रैल

वर्षं कनी, वूटियो बकरियो लोइडे री जू, भरी भरी बजार मे घक्कम धंया, आ-जा टीको लगा जा, चिट्टी आई, गूगरी-गूगरी, निसन्डी, घोडा चौक, दसा-वीसी, मोई डको, गजं फं, तीखा चन्द, तालाड, घाम धाम थडकौ, मिरची, मिसतन्गा, राजराजा खाखडी, कूरका, मिन्नी ढगा, मोरियं रौ पजौ, किर-कांटियाँ, घणी लुगाई भळै वैठी किसी-किगी अजाणी रम्मता । दाव लगाव-णिया रा खून्जा तो खालीज व्हैता पण सींव माय सू बोर, गुट्टा, ढालू-पीलू तोड लावता अका मूठ अर किणी न किणी रम्मत मे दस गुट्टा वं मुट्ठीक वोर लगा देवता । घणी चावी रम्मता वूकिया म गाढ रै पाण रम्मीजती । फदाव मारणी, घणी खातौ नाठणौ अर डील री गाढ धणखरी रम्मता रा औजार-हथियार हा । डाव आळी रम्मता मे रमाव कुण्डाळियं मे वैठ आप-आप रा दोई हाथा री हथाळिया जिम्मी माथै टेक देता । पछै किन्नेई रमणी नी हूवतो वो अडग-वडग वोल तो अकूकं हाथ माथै टचको देवतो यू बोलतो करतो—

अडग-वडग किल्ला कोट, बाजू वका ढाल पिलका
औका चौका कीडी मकोडी, भागी टूटी अे डक छूटी

जिण हाथ माथै टचको दिरीजतो वेला छूटी आखर वोलीजतो वो हाथ कुण्डा-ळियं म् आगो लिरीज जावतो । इण मे अडग जाणं अेक वडग दो किल्ला तीन कोट चार अर ठेट छूटी सोळै । सो सोळवौ आखर छूटी जिण हाथ माथै गिणती मे आवतो वो हाथ तो छूट जावतो । छूटणियै सू आगलै माथै होळैक टचीटी देवता पाछा अडग-वडग गिणीजण ढूकता अर छूटी आळौ हाथ भळै आगो । करता करता सेवट अेक हाथ उवरतो जिण मे डाई राखीजती । इण अडग-वडग ने ठीक आज-आळी 'म्यूजीकल चेयर' केय सका । फरक इत्तोइज है कं म्यूजीकल चेयर' मे सगळा सू छैली कुडसी दावणियो जीतै पण अडग-वडग मे जिन्नो हाथ लारै उवरतो उण मे डाव राखीजतो । थपडा-थपडी नाव री रम्मत मे तो औ लारै उवरणियोडो आरी-आरी सगळा री थपडा खावतो । औ पाळगोठी मार हाथ जोड वैठतो, ठोकणियो इन्नै सामा-साम उखडू अर वं पाळगोठी मार'र जचै ज्यूई बैठ सकतो । ठोकणियो दोनू हाथ लळकावतो-लळकावतो पटीड करतो जचै जद ठोक देवतो । मार खावणियो, ठोकण री वेळा जै आप रा हाथ ऊचा-नीचा कर चुकाय दे तो गळिया । सगळा ने गळावै जितै पटा-पट अणफं मे पटीडा वोलीज वोलीज मार खा खा अर हाथ राता चुट्ट हुजावता । कित्तीई वेळा कोई चेंठू ठोकणियो हूवतो तो लारोई को छूट-तोनी । मार खावता-खावता हाथ धूजण ढूक जावता अर सेवट रोया गैल

छूटती कै ठोकणियो आप थापतो जद गई हूवती ।

अडग-वडग गो ठोड इवाड विवरड ई टर्दई वदाम वोलणो सुकर करता जद रेत मे टिकियोड़ हाथा मार्थ धोडोर टिलो ठोरता दू वोली-जतो—

इवाड विवरड वम्वा वोळ
अम्सी वेटा पान फूल
ठस्स।

इण मे 'ठस्स' वोलीजतो वेळा टिचको दिरीजतो जिको हाथ कुण्डाळिये नू बारै । घडा-वन्दी री रम्मता (टीम गेम) मायं डाई अडग-वडग वं इवाड-विवरड सू वो रागीजतो नी । उणा मे तो लोग सूक करीजतो । विलं टरज जोग बात है कै टोक-पोल्ज री रम्मता मे दूहा सोरठा भेळा भिळयोडा हा टणा सू डाव गर्माजण जेडा भगडा राजी राजी निवडता । कित्तो मोह हो टावरा ने ई दूहा कविताया सू । क्यर्ड री पण ई नी जाणता जिका आटू भाटा रम्मता सू जुडियोडी अथगी अवगी कविताया घोल लेवता । इण वोला री टावरा रै हीयं कित्ती मोल हो इण री ठा इण सू लाग सकं । चार-पाच साथीडा निचै वैठो कोई होळेर पुमकी छोट दं । सगळा आप आप री कुणिया भीलना कुण पादियो रै, कुण पादियो करण उर्क अर गतई ठा नी पडै तो सेवट वोल वोली-जण लागं—

इण्डक मीण्डक टडाक ट
पादण वाळा तू रै त

अर लारलो तू हूवता जठै वोलणियं री आगली रवं उनै भूण्ड अगेजणी पडै । घणकरा पुसकी धरणिया तो छूट जावै अर मीठी-मीठी कुटळाई री मुळकाण सू टुगर-टुगर वोल सू पसियोडै सामा जोयवो करै । पण मगदूर है कै इण्डक मीण्डक कर अर भूण्ड टैरायोडो ना कर दे । सो वेरै वेठोडा दोया माय सू पादणो भलंई अेकई नी अगेजै पण वोल रै मडियोडी भूण्ड तो वोल रो मोल राखण खातर उरणनीज पडै । घणकरी चोखी रम्मता रै सागै की न की वोल जुडियोडा हा अर वोल नी आवता जिका रम नी सकता । रम्मत रै कोडाया टावर कंटो कित्ता दूहा-आडिया अर अवखा अचूकरा वोल घोख लेवता । सीधा घोडी सागै जुडियोडा वोल तो सगळा ई जाणं पण वीजी कंई रम्मता सागै ई वोल लागोडा हा—

मियाजी मियाजी घोडी बेचौ क्या,
हा,
कित्तै मे,
लाख मे, लाख है लखारा मे
सौ मे, सौ है सौनारा मे,
पाच मे, पाच है पिन्जारा मे,
बुढी घोडी लाल लगाम मीयाजी को
देवे अेक छदाम ।

मियाजी मियाजी क्या लाये
ढाऊ ढोकळा
किसकौ खिलाअोगै
घोडी कौ
नाम क्या
बागली
अप्पड म्हारी आगली ।

कबड्डी

कबड्डी धिन तारा ।
सैतान वीरु मारा ।।
कबड्डी धिन तारा ।
सैतान वीरु मारा ।।
हिल्ल कूदिया ।
भल्ल कूदिया ।।

कोइडा

आलौ लिग्तर लीलौ लिग्तर गीलौ लिग्तर ।
देखै जिन्नै पाछौ धिर गुदडी मे देऊ ।।

कुच मौंगणी

कुच कुच मीगणी कुचिया दाळ
हीडै री मा रान्दी दाळ

आ रै हाडा हान्डी फोड
म्हारी नी थारै साथीडा री फोड
वढी बोऊ री तीमणियौ तोड ।

हड्ड मिरकलो

हड्ड मिरकली ।
हंडिया चोर ॥
वाजै खिडकी ।
उडिया मोर ॥

छींयाळियौ

छीया छीया चक्री ।
वाप वेटा वकरी ॥

चिरमी ठोला

भीडू जी भीडू जी
डाव डन्कोळा
किसनै मारा
इसनै मारा ।

अन्टी

आ काई रै कन्ठी ।
थारै म्हारै अन्टी ॥
औ काई रै सूत ।
थारी म्हारी आटी छूट ॥

अचूकरा बोळ रम्मता सागै भिळिया तौ कैठी कीकर पण कराई करास
ाम सागेडी ठावता । बाता मे कैईजै कै राजस्थान रा घणा चावा धाडायती
गजी-जवारजी नसीरावाद छावणी मे फौज बळ रा वावड लेवण पूगा ।
ठै जाय आपरै अेक पिट्ठू रा पावणा वणिया । पण हरदम कोई-न-काई
ागै रेवै सो छानी बात-चीत री बख अगेई नी लागी । सेवट रम्मत माण्डी
ुण भेदियै अडग-वडग किल्ला कोट करता-करता विचै वावड पूगता

कर दिया—

अडग वडग किल्ला कोट
बाजू बका अडतिया मेडतिया
ढाल पिलका लका सका
ओका चौका फिरगी फोर
किडी मकोडी किडी मकोडी
भागी टूटी अेडक छूटी।

डूगजी-जवारजी नै बावड़ लाद ग्या। हरमेस आळै अडग-बडग रै सागै जिका नुवा बोल मिळयोडा हा उवा स ठा पडगी। नसीराबाद मे जिका मेडतिया अर बीजै रजपूता रा बेडा हा वै तो लकाऊ दिख मे ग्योडा है। थोडेक कीडै-मकोडी रै सागै फिरगिया री चार (फोर) टुकडिया छावणी मे है। पाछा आया बावडा रै मुजब त्यारी कर धावी बोलियौ अर फिरगिया नै कूटण री जस कमायौ।

राजस्थान रै गावडा री रम्मता माथै आज कैठी कित्तीक रम्मता रमीजण लागी। कोई जाणकार व्है तौ ठा पडै कै अमरीकी फुटबाल, जिका रग्बी नाव सू चावी है, अठा री हड्डु मिरकली रौइज नुवौ नाव है। फरक इत्तौइज है कै अमरीकी रमाड अब्तर बरत्तर बाध अर लबूतरी बाल माथै टूटै अर गोळ करै। अठै गावडा रै भील भाविया रा टाबर सूकोडै हाडकै नै तौ दडी करै अर धूड री ढिगली नै लूण (गोळ)। बाकी धरपटक दोना मे वा री वा। आवळियौ सौ टक्का आगै जावता हाकी नै जलम दियौ व्हैला। भलैई सावळ ठा नी है जिका हाकी रै जलम री जस पूना नै देवौ करै। ठीया दडी क्रिकेट अर बाथळ कूण्डौ या क्रिडियौ घकै जावता कबड्डी नावा सू चावा हुया। थोडाक कुरब-कायदा मुकर हुवा अर कैई जूनकी राजस्थानी रम्मता जाणै ठेट आज आळी रम्मता इज ही।

लूण खाळी, हड्डु मिरकली, चीखड अर आवळियौ सगळी धडाबन्दी री रम्मता ही। चीखड नै कैई-कैई ठौड खाळू नाव सू ई ओळखै।

चीखड आथूणियै राजस्थान री घणी चावी रम्मत है। सिझ्या पडिया मोटियार रम्मण ठोड भेळा व्है जावै। चीखड रम्मण री ठोड थोडी मोकळास आळी व्है। अणूतौ लाम्बौ-चवडौ तालर नी तोई थोडीक खुलासै री जागा इण रम्मत मे जोईजै। घणकरा बारतू गावेडीइज चीखड रमै सो रम्मत रै चौक मे रैतूड व्हैइज। यू तौ चीखड भलैई दो जणाई रम सकै पण आठ, दस,

कर सकै, जै किणी री टाग हाथ स पितळ'र छूट जावै तौ वो इण डाव रै पूरौ हूवण ताई गळियोडौ गिणीजै । अर उण नै अेकै पाडै बोलौ बोलौ ऊभ अर डाव पूरौ हुवण री वाट जोवणी पडै । डाव पूरौ व्है'ना कै तौ खाळ जाय'र डाई रै हाथ लगावैला जद, इण नै खाळपीवणौ कैवै, अर कै खाळ ने मामला रमाड गळा दे जद । सगळा रमाड जद इण मुजब त्यार हुजावै, अक हाथ नै लारै टाग पकडण मे लगाय अेक टाग माथै सैंसूदै डील रौ भार सम्भाळै जद मारधाड मचै । राणियै आळी हमनो करण की पाल्टी रा, खाळ रै ओळा-दोळा घेरो घाल'र अेकूकी टाग माथै फुदक फुदक करता आगै वधण लागै । कदेई जै सामला घणा लाठा व्है तौ खाळ नै घर्णी लारै आगी ई आगी राखै अर अेक-आधौ खाळ री रुखाळ सारू उण रै कनैइज फुदकवौ करै, वाकी ग सामला माथै धावौ बोल'र टूट पडै । औ धावौ जुद्ध रै हरावळ दस्तै रै धावै दाई मरण-मारण, गळण गाळण सारू व्है। छडै हाथ सू सामला माथै वार करै । डाई री रुखाळ मे लागोडा भवरियै रा भीडू कीकर ई मुकिनयै (खाळ) ताई पूगणी चावै अर राणियै रा रमाडी वानै खाळ कनै पूगण सू रोकै । धक्का धूमी मे जे किणी री ऊची उठायोडकी टाग हाथ सू छूट जावै तौ वो गळियोडौ गिणीजै अर उणनै रम्मत सू वारै गिणै । कैई कैई रमाड अेक टाग सू, ढचाक ढचाक उट दाई अैडा सपाट नाठै कै फोरा पतळा तौ छडियाई उवानै पकड नी सकै । साव मुडदल मिनमिनिया रमाक अठी-उठी फुदफुदावता आपसू घणै लूठै रमाड रै लारै जाय र डोढीकरयोडकी टाग नै पकडियोडै हाथ रै चीछडी ज्यू चेंठ जावै नै झटीडा दै-दै अर हाथ सू टाग नै छोडावण री खप्पत करै । टाग ज्यूई हाथ सू छूटी अर गळ्या । सो जोग रमाड आपरै लारै ई चौकसी राखै अर अेक टाग स् खटाखट डावा-जीवणा फुदक्वौ करै। सैठोडा रमाड सामला माय सू अेक नै टाळ'र उण माथै झपटै अर घाटकी री जड मे जठै घाटकी नीचै आवती छाती सू मिळै उठै हासली माथै आपरै छडै हाथ रौ अेडौ जोरदार थड्डौ देवै कै सामलौ हडवडीज जावै नै तागी खावतौ हेठौ पडै अर कै डिग्गू-मिग्गू व्है जिण सू लारली टाग हाथ माय सू छूट जावै । पडियोडौ अर टाग छूटियोडौ गळियोडौ गिणीजै । केई कुचमादी रमाड नेस्ती डाव लगाय लै, ज्यू सामलै रा भीटिया झाल लेणा, हडबच घाल अर बटकौ भर लेणौ, चूठियौ चमठाय देणौ, कुठ्ठोड गोडै रौ घमीड दे देणौ, सामलै री वगल कै पासळी मे गुलगुलिया कर देणा, आख मे घर भगावणी (पैंलडी आंगली) सू घोवौ घात देणौ । किणी री कळाया मे

गाढ व्है जिका सामनै री कळाई भाल'र सागेडी ळळको देवै ग्रर गोडा ढळ-
वाय दै, ग्रर भट देती बीजी वैरी मायै पूग जावै । कदैई-कदैई ग्राप रै भोट् नै
छोडावण खातर भिडणी पडै । इण भात घममाण जुद्ध मे घणकरा तौ खेत रैय
जावै है । कोई वैरी लडतौ भिडतौ खाळ ताई पूग जावै तौ खाळ रौ रखाळो
ग्रर खाळ ग्राप मिळ र उणनै ग्रावभगत करै । ज रखाळो इज गळ जावै तौ
खाळ उचक-नीचक, ग्रठी-उठी फुदक-फुदक सामलै नै पिदावै जितै घर रौ
कोई भीड् जीवतौ व्है तौ मदद मारु ग्राय पूगै । इण घमसाण मे कैया रा
मूण्डा भरटिया सू लबूरीज जावै, घणा मडकै नाठण री फिराक मे ग्रापैई
ताचक नै ग्रेडा ठोकीजै कै ढगलिया ताई उतर जावै । पुणचा मे जोर ग्रावतौ
ग्रर खुणिया नै हासलिया ताई उतरती दीसै । यू दोनू धडा रा रमाडी धा-धी
मे ग्रळूजियोडा व्है जद कदैई-कदैई खाळ नै डाई ताई पूगण रौ मोकौ मिळ
जावै तौ डाई रै छडियौ हाथ लगावताई खाळ हाका करण लागै 'खाळ पी ई
ईलो' 'खाळपी ई ली ई' ग्रर ग्रौ हाको सुलै रै सरा ज्यू ग्रमर करै । जिका ग्रेक-
बीजै री कळाया, गुदिया, लारली टागा कै हाथ ग्रर घाटकिया पकडयोडा व्है वै
'भट खाळ पी ई ली' सुणताई ग्रापरा वखा मे ग्रायोडा नै छोड दै । घणी ताळ
मू जिका जुच्च हुयोडा ग्रेक बीजै सू गैल छोडावण खातर ग्रवखता व्है भटा-भट
खुल छूट ग्रर सास खावण लागै । खाळ रै डाई रै हाथ लगावताई ग्रेक 'खाल
पी' गिणीज जावै, जाणै ग्रेक प्वाइण्ट वणियौ । विच्चै ई गळियोडा भाड-पूछ
कर'र हमकै विवणै खार सू त्यार व्है । खाळ पिवीजताई सगळा पाछा खडा
हुजावै ग्रर हाथ-पग पपोळ'र पाछै सू पैली दाई ग्राप-ग्राप री ठोड पूगै ग्रर
ग्रेकूकी टाग पाछी लारै पकडै नै पाछौ हमलौ व्है । खाळ हालताई पैला ग्राळै
मुकनियैरीज रैदैजा क्यू कै खाळ पी ली ही गळी कोहीनी । फरू खाळ रा
भीड् उण नै लडता-भिडता रखाळ'र डाई ताई पुगावण सारू हीयौ हथाळी
लेवै ग्रर सामला कोकर ई खाळ नै गळावण सारू जोर लगावै । लारली वार
गळणिया हमकै ग्रापरौ लारलो वैर लेवण सारू भिड पडै । भिडन्त मे जद
कदैई खाळ सामला रै धक्क चढजा ग्रर जे खाळ ने गळा देवै तौ 'खाळ मरगी ,
'खाल गळगी' रा हाका व्है ग्रर सुलै रै सरा ज्यू भगडौ ठण्डौ । दूजै नै खाळ
चणावै ग्रर पैला ग्राळी खाळ हमैं धकला रमाडिया सागै मिळ'र नुवी खाळ नै
वचाय ग्रर डाई ताई पुगावण रै जतना मे ढूक जावै । लडता-भिडता खाळा
पीवता ग्रर गळना पडता पैलै घडै रा सगळा भोड् ग्रेकूकी वेळा खाळ वणै ।
इण सग्ळै भीडवा मिळाय'र जित्ती खाळा पीवी व्है वै यू समभला जाणै

राणियै रै धडै वाळा इत्ता प्वाइण्ट वणाया। हमैं बीजोडो धडो हुमनावर वणै अर पैला ग्वाळ लेवणिया डाई री रुखाळ सभाळै। दूजोडै धडै वाळाई सगळा ग्वाळा वण वण'र गळ नी जावै जित्तै चीखड रम्मीज वोकरै। इणा जित्ती ग्वाळा पी व्है उणा री गिणती ई लाग जावै। जिण धडै सल्ली वेळा ग्वाळ पी व्है वो जीतै अर धिन कमावै।

आइज रम्मत चीखड नाव सू चावी है। कदेई-कदेई होड लाग जावै अर रमाड जीव हथाळी माथै राख'र अैडा ग्वारा भिडै कै वाह ई वाह। होड घणकरी यू लगाईजै कै घणी ग्वाळा पीवणियै धडै रा सगळा रमाडी हारणिया रै खन्दोलिया आय फलाणी ठोड सू फलाणी ठोड ताई चड्डी खावैला।

लारै जावता थोडै मे कैइज सकै चीगड धडा वन्दी री रम्मत (टीम गेम) है। इणमे गाद, फुडती, कूदणो, अेक टाग मू विना डिग्गू-मिग्गू हुया सपाटै नाठणो अर अेक हाथ मू जुद्ध लडणो पडै। बचाव अर हमलै रा जतन करणा पडै। अेक धडै रै रमाडिया मे अेकठपणै रा भाव जागै अगवाई करणरी नै हिळमिळ काम करण सू फलै री सीख मिळै। आज आळै आछै सू आछै गेम मे जित्ती चोखी अर गिणावण जोग वाता वताइजै वे सगळी अेक चीखड मे इज हव्वाहोळ भरियोडी है।

बापड़ौ कसाई

"घणकरी फिल्मा मे छोटी छोटी भूमिकावा मे अेक ठींगणं, भेंडे-भेंडं मोटं पेट आळै स्टाटिये अेक्टर ने राजस्थानी बतावै। हरमेश ई घणकरी फिल्मा रो ओ राजस्थानी बिणायोड़ौ बेरूपियौ बम्बईया राजस्थानी बोलै, सेठाणी सू धूजै दारूडियौ अर पातरियां रो पिट्ठू बताईजै। इत्तं मे इज वा नीं म्हे ओ माखी चूसं जेड़ौ कन्जूस, स्मगलर अर टकां रै खातर मुलक रै बैरिया सू साठ गाठ राखतो ई बताईजै। इण राजस्थानी रो रूप फिल्मा मे देखता देखता हमैं तौ फिल्म देखण सू डर लागण ढूकगो। राजस्थानी मिनख रो केडो खोटो चितराम अे फिल्मोलिया कोरता ई जाय रिया है। इणां ने टोकै कुण ? भला मिनख रोजीना राजस्थानी मिनख रै माभणं धूड नाखताई जावै है। आगो आगो भौं रा मिनख तौ हमैं ताई सगळै राजस्थानिया ने अेडा इज गिणण ढूकगा र्हैला। बरसा सू अेडी फिल्मा देख-देख किडकिडिया खाय रियौ हूं। मन मे जिकी झाटां उठ री है वे इण लेख री जड है। मोसा बोलां (सटायर) अर मस्करिया सू घणी ऊण्डी बात राजस्थानी टाळ बीजी भासावा मे इत्ती सांतरी कैठी कैईज सकै कै नो।

म्हे अजुताई साव चिन्योक हो, समझ ई सावळ को पागरी होनी। चेळै हुवोडी बैन सामी ठा नी किण सारू हाथ उगरोमियोइज हो के माजी री धाकल सुणीजी अरै अे कमाई सवासणी ने कूटी तौ थोरियै मे हाथ ऊगैला। वान हीयै उतरगी। जद पछै थोरियै ने देखताई लखावै जाणै किणी सवासणी ने कूटणियै कसाई रो हाथ है। पैला-पैला तौ म्हू सवासणी ने ठोकणियै ने इज कमाई समझण ढूकौ। पाडोसण रिडकनी रै घरधणी ने टोडा रो लत्त सो उफा रै हरमेस कजियौ रवै। गंळ मे कदेई कदास रिडकनी ने धमीड दै। टूटी माथै सम्पाडौ करता अेकर वास री लुगाया री वाता सुणी। थेपडिया थेप'र आयोडी अेकण हथाळिया मसल'र पोठै री वाटा उतारती थकी कैयौ,

"अे राण्डा बापडी रिडकली ने मरियौ कसाई रातै भळै कूटी।" कूण्डै मे पडी मैल उगळती राली ने धप्पड-धप्पड पगा सू खून्दती दूजी बोली, 'असल कसाई है कमसल बापडी ने अेडी कूटै कै देखीजै ई कोयनी।" इण वेळा ताई मनै आ उपजगी ही कै हमकै कसाई रिडकली रौ भाई तौ नीज है। पण कटण री बात तौ आपरी ठोड य री यू ही। सो अणूताई करै अर बीजा नै कूटै जिका कसाई व्है। सडकै खसोळी खाय अर खाली चरी लिया इज भठाभठ नाठणौ पडियौ। सदैई आळी कळाई पैला मे चुकलियौ भम्ला अर पैला म्हारी बारी है ने ले'र ठीकरा बाजण री वेळा आयगी ही।

कंई बरसा कसाई रौ ओ अणूताई कर बीजा ने कूटण आळी खाकौ मन मे रम्योडौ रैयौ। इण बिचै अेकाधी वेळा कसाई न देखण रौ जोग ई बैठौ। पण बुगदै सू भचाभच हाडका भान्गतै ने देख'र उन्नौ सिप्पौ बिवणो-इज हुवौ। उण वेला ज किन्नेई ठा हूवली तौ मनै डरावण सारू डाकणिया अर भूता री जरूत अगेई नी ही, कसाईज घणोई हौ। दिन सवा हा सौ नी तौ किन्नेई मारै माथै कसाई रै सिप्पै री ठा पडी अर नीज डरावण री उपजी। आज कदैई कदास विचार आवै, बाबै भूता अर डाकणिया सू टाबरा ने डरावण आळा माईत टाबरा रै हीयै कैडा-कैडा जाळ जभाळ गूथ दै। कैठो कद, कीकर अर कित्ता दोरा लाई टाबर इण जभाळा ने तोडै। कंई-कंई तौ हाफळिया खाय बो करै अर मोटियार व्है जित्तै अळूजियोडा इज रैवै। रात-बिरात सियाळै मे ई परायै ऊ भवाभोल हुयोडा, थर थर धूजता मिनखा ने आप ई कित्तीई वेळा देखिया व्होला जिको घुप्प अन्धारै मे आपो आप सू डरयोडा हा।

पौसाळ मे कक्कौ केवडी खरखौ खाजूलो करतौ जद ई अणूताई करणियौ म्हा सारू कसाई विण्यौडौ रैयौ। आ बात भळै तर-तर पक्कीज हुई। आप गू फोरा मडक्ला माथै नाथावती कर उणा ने गळटूपा दे र घी पिला-योटकी रगावग हुयोडी पेन्सला खोसणिया ने गुरासा आप कसाई कैय सडासड ली नी कामडी सू सुडता। थोडी ताळ तौ म्हू इण गतागम मे अळूझ जावतौ कै आप गुरा इज कसाया उपरला कसाई है कै नी।

अजैताई बारखडी पूरी ई को हुई नी, लल्ला घोडी लातपा अर सूवा बैन्गण बास्तै री घोखाई करतौ हौ जद अेक नुवी आडी आय पडी। नानीसा री किणी साथण मोचौ भाल लियौ। उन्ना सुख पूछ पाछा आवताई नानीमा कैण लागा बापडी रैमती कसायण तौ हमैं थोडा दिनीज काडती दीसै। म्हूँ

पैला तौ विचारियौ कै आप सू नानै बैन-भाया ने कूटण आळी, वीजी लुगाया ने घमीडण आळी अर कदास घरैधणी ने भूग्गळी चीपियौ कै धोवणै री थर-कावण आळी लुगाया कसायणिया बाजती व्हैला। नानीसा ने जद तीन वीसी ऊपर चवदवौ वरस बैवतौ सो इणा री वाळपणै री साथण रैमती ने चिमन्तरी नी तौ तीन वीसी ऊपर दसवौ वरस तौ खरोइज वैवतौ व्हैला। इण उमर मैं रैमती भळै अजैताई वीजा ने कूटै जैडी कसायण कठैऊ रैई व्हैला। नानीसा कसायण सारू इतै विचार मे क्यू। सामी हरख व्हैणौ चाईजै कै कसायण रै मूवा तौ कित्ताई सताईज्योडा री गैल छूट जावैला।

खैर घणौ मोडौ सूटा ढन्चा ताई घोखलिया जद जावता साच चावी हुई। कसाई अेक आखी जात इज है। गौस वक्रा, घेटा'र खाला री बिणज करै। पोमाळ पछै दसवी ताई राज री स्कूल मे भणीज कालेज मे पूगौ। अलेखू वेळा, सिनेमावा, छोटी मोटी कहाणिया अर स्कूली पोथ्या ताई मे कसाई री वो चडाल आळौ खाकौ कदेई कदास सामौ आयवौ करियौ। पोसाळ स् ले'र धकै जावता विस्वविद्यालै ताई मे भणीजणियौ कसाई सामौ नी आयौ। सत्ता है जै जुगा सू काळै पोतीजतै चापळ'र आपोआप ने किणी वीजै ढापै मे ढक लियौ व्है तौ ठा नी। आपोआप ने चबडे धाडै कसाई कैण आळौ तौ नीज दिरयौ। होळै-होळै कसाया मे ई चोखा-भूण्डा गोरा-चिट्ट'र काळा किट्ट, फूटरा'र सूगला, राता-माता'र मुडदार मिनमिनिया, गळतियौ हुवोडा मडकल'र पठ्ठ बजावता चकरकन्द, कडाका-काडता फाया खावणिया भूरखड'र टिर्डाट करता धापोडा, भीर-भीर चीथडा'र फाटोडा लिम्तर पैरियोडा अर भळाभळ करता गावा'र नुवी पगरखिया ठठायोडा सगळी तरै रा कसाई कसायणिया देखण मे आया। थोडोक नैडौ ग्या वैन-सवासणी रै अरथ सारू घर फूकणियां अर मोहमाह राखै जैडा सवावणा कसाई ई सामा आया।

कसाई ने घणौ चण्डाल, जुल्मी, नाथावती करणियौ वऊ-वेटी भाई-भोजाई अर सगळै आपरा ने कूटण अर सतावण आळौ समभण री रीत नुवी कोयनी। जुगा सू वापडौ कसाई अेडोइज गिणीजै। हूमैं तौ कसाई आखर कान रै पडदा रै टकरीजण रै समचै इण री अेक खास चितराम आख्या सामौ आय ऊवै। औ चितराम काळै डटीट मोटै पेट आळै, नळिया ताई ऊची चोक्डी आळी भांत री तैमद अर मिचळी वास्ती सदरी पैरियोडै भरती राफा रै गीड सू लथपथ पण मोटै-डरावै जैडै डोला अर डील माथै

म् सन्नाटौ छाय ग्यौ । मूण्डौ पीळौ पडण ढूकौ डील री सगळौ गाढ भोळौ करता बोल्या भलैं मिलग्वा हुमैं टसवणौ छोडौ, लडाया मे घाव तौ पडताइज आया है । हुमैं बोला री, राज थारी घणी सातर रागसी । थैं सगळैं मुगली राज माथैं किरयावर कर्‌यौ । राज री आस-औलाद थारा गुण गा सी, वैद-हकीम मेव करसी । था घणौ गरबजोग कारज साजियौ । मरता-खपता मेवातिया ने तौ परा ढाविया ।

दो च्यारेंक धकै आया जिया रा मूण्डा तौ सुरडीज्योडा गोडा अर घुणिया म लोई चिरै पण घणा ग्हारा घाव नी लागोडा । इसका भरतौ इया माय सू अेक जणौ माथौ हेटौ तिटकावतौ थकौ बोल्यौ कै धण्याणी भलैंई हाथी नीचै किचगय दै अर तोपा रै मूण्डै बधायदै । मेवातिया ने ढावणा म्हो रै बस नी । म्हानै देखताई वे तौ भूखै गिद्धा ज्यू टूट पड्या । पछै कुण कै व्याव भूण्डौ । भचा-भच मचगी । म्हे तौ बुगदा छुरिया पकड्या वाट देखा कै अेकाधौ नीचै पडै तौ छाती माथै गोडौ धर सवाळ हिचकी पक्ड मिणियै माथै छुरी घस दा । पण कमीणा अेडा कै अेक्ई हेटौ नी पड्यौ । आदत मुजब म्हे तौ हड्डी-गुड्डी माथै ठोकण री ताक करा जित्तै वे हरामजादा नौ कोई हड्डी देखै अर कोई गुड्डी दावै जठैई भचको बोलाय दै । मो भिडन्त हुताई सटासट हाथ कान अर माथा कट-कट पडता दीस्या । इण भचाभच मे म्हे तौ अेडा डफळीज्या कै किनेन्ई चिगदोई पाड नी सक्या अर उणा खटाखट हजारेक रा तिक्का कर काडिया । उबरिया जिका हळफळीज्योडा पडता गुडता पाछा नाठण ढूका । कमीणाई देखी साळा री कै ठेका दियाई गैल नी छोडी । लारै पडपड भचका बोलाया । दिल्ली री सीब रै काकड मे आया तोपा रा धडिन्दा उडण लागा । म्हे तौ पाछौ लारै घिर नेई नी जोयौ । मरता-खपता ठैट आय पूगा । जिका मेवातिया री मार सू बचग्या खाताळ मे पडता गुडता उणा रै गोडा-खुणिया अर मूण्डा मू लोई चिक्ण ढूकौ ।

महाराणीसा आ सगळी वीरगाथा सुणै जित्तौ, गाडा रै भराव, गाड कठैऊ जावता । आदेठैई अन्दाळी आवण ढूकगी ही । हथाळिया सू वनपठिया दवाय थोडा सैंठा रैया पण सेवट भव्वाटी खाय तडाच देती ठोकीज्या । चेतौ आया आख्या खुली जद राज रौ खास हकीम पागती वैठौ । आप अकबर सिराणै वैठौ लीलाड पतोळतौ । अकबर कैयौ आप जीव मे सोराई राखौ । दिन बद्यैं इज हिन्दाल खा रै हरावळ दस्तै रा हजारेक जूझार मोडसिंह री अगवाई मे आय पूगा हा । च्यारेंक तोपा दै अर उणा ने मेवातिया सामा वईर कर दिया ।

दिल्ली री सीव मे बडताई उणा मेवातिया ने भडाभड भून्ज काडिया ।

अेक जोधाबाई माथै अणतौ सिप्पौ होण सू बापडा माथै काई काई नी वीती ।साहितकारा अर सिनेमाआळा रै पाण आज ई लाई रै जीव मे सोराई कोयनी । काळजौ कळपै है अर बिजा रा भारा लीया फिरै। जोधाबाई ने तौ थोडौ घणौ भुगतणोई पडयौ कैठो पछै घणी पिस्ताई व्हैला । पण इणा साहित-कारा अर नाटकिया ने तौ कोई मोसौ देवणियोई कोयनी । अे तौ मत्तौ पडै ज्यूई मिनखा माथै कसाई रौ सिप्पौ बैठावताई जावै है।

आ बात मनै तर तर तीखी हू अर चुभण ढूकी कै इया सिनेमाआळा नाटकिया अर साहितकारा रौ बापडी कमाई अैडौ काई विगाड कर्यौ। अ सगळा इण रौ खिरणौ पकड लियौ। पीढी धर पीढी इणनै भूण्डण रौ गागत झाल ली। बाप है कै कसाई भाई है कै कमाई है अर अठै ताई कै मिनखपणै ने नजावण जोग कोई काम करदै तौ उण सारू कैईजे मिनख है कै कसाई। जाणै कसाई तौ कोई राखस, अगोरी, चडाळ डाकी कै अैडौ कुमाणस है जिनौ मानखी जमारै सू की लेण-देण इज कोयनी। बापडै ने रगदोळ-रगदोळ काळौ पोत पोत अैडौ बधनौ कर दियौ कै बीजा री तौ छोडौ आपोआप उण माथैई भूण्डाई रौ रग अेडौ चढ्यौ कै मिनखा विचै आ अगेजताई भिचकण ढूकै कै वो कमाई है। मिनख हसता मुळकता राज अर ठकराई छोडदी, सेठाया छोटा-वण मारू छापा पडण ढूका, सागडी धणिया सू छूटग्या, करमा लैणै सू छूटा पण बापडै कसाई री भूण्डीजणौ अजुताई नी छूटौ। ऊची-ऊची जाता रा मिनख राजरी खातरी सातर भन्ती भील विणण ने त्यार पण बापडो कसाई अजैताई आप ने कसाई केण सू डरै। कैठी कद अर कीकर उण रौ लारौ छूटैला अर जमारौ सुधरैला।

धिन प्रिथीराज रंग प्रिथीराज

इतिहास री पोथियां रै हवाला सूं टच इण लेख मे आ बात चावी करण रा जतन है कै प्रिथीराज रै जिका माळी पन्ना जडीजै वे खरा कोयनी। प्रिथीराज रौ साचो चितराम उगाडतां थकां लेख मे उण री करणी ने साच रै कांटै माथै परखी है।

इतिहास मे सपादलक्ष वस सू चावै,[1] साम्भर सू ऊठियोडै, चौहान वम रै प्रिथीराज तीजै रै, जिकौ राय पिथौरा ई कैइजै, इतिहास लिखारा इत्ता माळी-पन्ना लगाया कै सुण-सुण काना रा कीडा झडण लागै। किणी प्रिथीराज ने चौहान वंश रौ सूरज, बारवी ईसाई सदी रै सगलै राजधिराजा सू लूठौ भिड मल अर मरोड आळौ बतायौ तौ बीजा उणनै सैमूदै भारत नै बारला वैरया रै हमला सू बचावण आळौ ढाल मानी। बीजा उणनै लारलै छेडै रौ जोरावर हिन्दू राजा कैयौ। कैई-कैई अठा ताई पूग गिया कै पुराणकी बेळा, बारवी सदी सू पैला जित्ताई रजपूत राजा न्हिया उणा मे सगळा सू चतर लूठौ अर जोग प्रिथीराज ई हौ। इतिहास लिखारा रै कैया घणा मिनख बिलमीज प्रिथीराज नै भारी करत्ता-धरता समझण ढूका।

सोमेसर ११७७ ई० मै मर्यौ जद उण रौ पाटवी बेटौ प्रिथीराज इग्यारा बरसा रौ नानोक टाबरइज हौ।[2] राजमाता करपूर देवी राजकाज

---

१ (अ) दमरथ सरमा चौहान सम्राट पृथ्वीराज तृतीय और उनका युग, पृ० ६
(आ) इण्डियन ऐन्टिक्यूरी, १६, १२ पृ० १६६
(इ) आर्कियालाजिकल सर्वे रिपार्ट बाई कनिघम ६ प्लेट २१

२ प्रिथिराज रौ जलम जेठ १२ री सुभ घडी हुवौ। नखतरा री गिणती मू वि० स० १२२३ म उण रौ जलम अर सोममर मरियौ जद प्रिथीराज इग्यारा बरसा रौ हौ।
—पृथ्वीराज विजय, ७ पृ० ५०

देखण लागी।[1] चवदे वरसा री व्हैताई आपोआप प्रिथीराज कामकाज सभाळ लिया। थाळपणं सूं ई वो घणो चवोर अर सावचेत हो। फौज-बळ हाथ लाताई उण गुडपुर रै नागारजुन माथै कूच कियो। हमार रै हरियाणा रै गुडगाव नै जद गुडपुर कैवता हा। नागारजुन प्रिथीराज रै बडे बाप (ताऊ) विग्रहराज वीसलदेव रो वेटो हो। नागारजुन तौ को मरयोनी, कदैस वो जुद्ध सू भाग छटो, पण उण री मावड प्रिथीराज री वडी मा अर बीदणी अपडीजगी नागा-रजुन रै भीडू चौहाना रा माथा कट अजयमेरू रै फाटक माथै टागीज ग्या।[2] अठै आ कैणी घणाघणी नी व्हैला कै ओ नागारजुन दिल्ली जीतणियै, चौहाना रो जस वधावणियै वीसलदेव रो अेकाअेक वच्योडो वेटो हो। वीसलदेव रै मर्या पूठै उण रै मोटोडै वेटै अमर गागेय नै तौ प्रिथीराज दूजै इज मार दियो हो। इण दूजै प्रिथीराज रै लारै गुजरात रै सोनकिया री दोहितो कुवण सू सोमेसर उवा रै फौज-बळ रै बूतै गादी दाव ली ही। सो प्रिथीराज तीजै इण टटै नै मूळ सू इज काट दियो अर गादी माथै निसक राज करण ढूको। आ ही प्रिथीराज री पैलडी नाबालगी मे इज कीयोडी फतै जिणम उण आप रैडज कुळ री दो लुगाया ने पकडी अर कित्तैक काकै-वावा रा माथा भाज दिया।

चौहान इतिहास रा जाणकार प्रिथीराज री जिण दूजी घणी महताऊ जीत रा गुण गावताई को थाकैती वा जैजाक भुक्ति रै चन्देल राजा परमाल माथै हुई। परमाल रा हिमायती वनाफर आल्हा-ऊदल हा अर व्हे सकै गहड-वाळ जयचन्द ई की फौज परमाल री भीड मे मेली व्है।[3] प्रिथीराज राज जीत

---

१ पृथ्वीराज विजय ६, १-३४

२ (अ) द० सरमा चौ० स० पृ०, प० २१ २२
   (आ) पृथ्वीराज विजय १२, ९ ३८

३ (अ) आर्कियालाजिकल सर्वे आफ इण्डिया रिपोर्ट, १० प० ९६
   (आ) व्हाई, २२ प० १७३
   (इ) पृथ्वीराज रासो अर आल्हाखण्ड सू आल्हा-ऊदल री भिडमलाई रा बावड लागै।
   (ई) मऊ लेख सू ठा पडै कै मदनवर्मन रै समै गाडवाळा सू घणा मोहमाह रा सम्बन्ध हा सो परमाल री वेळा ई दोना वसा मे आछा सम्बन्ध व्हैला।
   (उ) द० सरमा, चौ० स० पृ०, प० २३

ग्यो य मानीजै । इण वात री सावळ खाच-तांण करा तौ ठा पडै कै आ जीत ११८२ ई० स पैंला-पैंला व्हैगी ही, क्यू कै इणीज निथि रै मदनपुर लेख मे इण रौ बखाण है । ११८४ ई० रा परमाल रा लेख महोबा अर कालिंजर सू मिळिया है जिणा सू ठा पडै कै इण वेला वो किणरीई दबैल को होनी अर मुनतर रूप सू राज करतौ हौ ।[1] जयचन्द रौ राज ११९४ ई० रै चन्दावर जुद्ध सू खतम हुयौ । पछै प्रिथीराज जीतियौ कीकर । जँ वो जीततौ तौ जिम्मी साखू आपरै काका-वावा नैं खेत राखणियौ, परमाल ने जीवतौ, अर बुन्देलखण्ड नै सुततर कीकर छोडतौ । ११८२ ई० सू पैला हुयोडै इण जुद्ध री वेला प्रिथीराज पन्दरै बरमोऊ बतौ को होनी । इण जुद्ध मे पन्दरै बरसा रै प्रिथीराज कैडीक बहादरी बताई आ तौ किणी साधन सू ठा नी पडै, पण आल्हा-ऊदल रौ त्याग-वीरता अर जस अजुताई घर-घर चावौ है । सो यू लखावै कै 'हिळी-हिळी लाकडी अडक मतीरा खाय' आळी हुई । गुणपुर दाई बुन्देनखण्ड माथै पुगा पण हमकै चोबैजी दुबैजीज हूय ऊवा रैया ।

प्रिथीराज री अेक भळै जीत भदानका माथै हुई । कैई दिना तौ इतिहास लिखारा खपता रैया भदानका रौ राज जोवण मे इज । सेवटस्कन्द पुराण अर राज सेखर री काव्य मीमासा रै आसरै भदानका रौ मुलक पकड मे आयौ ।[2] हमार रै सेखावटी रै कनै अहीरवाटी कैइजणियै खेतर मे भदानका या अहीरा माथै आ फतै हुई व्हैला । पण अहीरा रौ राज जिण रौ बखाण ई न्यारै राज रै रूप मे सावळ को मिळैनी कितोक मोटौ व्हैला । प्रिथीराज रै ताऊ वीसलदेव रै बीजोळिला लेख मे तौ यू मण्डियोडौ है कै बीसलदेव भदानका नैं जुद्ध मे घणा खारा कूटिया ।[3] व्हे सकै भदानका प्रिथीराज नैं फोरौ जाण'र पाछौ माथौ ऊचौ कर्‌यौ व्है अर प्रिथीराज उणा नैं सागैडा घमडका दिया व्है । तोई हुई 'वावौ माउ माथै मोटी' आळीज । सो अणजाणी ठोड रै चिन्येक राज रै पैलाई कूटीजियोडै निन्नावै भदानक राजा नैं भळै पछाड अर बूकिया वजावण मे तौ की घणौ गाड को दीसैनी ।

---

१ (अ) अेपिग्राफिका इण्डिका, ५

(आ) अे० अेस० आर०, ३१ प० ७२

२ काव्य मीमासा, प० ५१

३ भादानात्व चक्रे भादानपतें परस्यभादाना ।

वत्स दध करवाल करालता करतमाकलित ॥

पाटण रै चौलुक्यां (सोलंकियां) अर सावम्भरा रै पीढीधर पीढी री ग्यार वैवती ही। चन्द ढाढी रै प्रिथीराज रासो में यू वखाण है कै गुजरात रै सौलंकी भीम दूजोडे प्रिथीराज रै बाप सोमेस्वर नै मारियो हो सो जुद्ध में पाछो भीम नै धाम पोचाय अर प्रिथीराज बाप रो वैर काडियो पण खाच-ताण सू ठा पडै कै उपरली दोन्यू वाता चन्द रै हळाहळ धरियोडी है। ११७७ ई० में सोमेस्वर मरियो जद सोलंकी भीम पाच बरसा सू वारै को होनी। सो आ चार-पाच बरसा रै टावर जुद्ध में सोमेस्वर नै कीकर मार्‌यो व्हैला। ११९२ ई० में तराइन री दूजोडी लडाई में प्रिथीराज रै हार'र मर्‌या रै घणा पछै रा सोलंकी भीम रा कैई लेख मिळ्या है। प्रिथीराज रै मूवा पूठै भीम राज करतो। सो भीम रा ११९२ ई० रै पछै रा लेख मिळ्या प्रिथीराज रा हिमायती लिखारा इचरज में पड गया। सेवट माथा-पच्ची कर-कराय'र ओ सार काडियो कै गुजरात रै भीम सू प्रिथीराज रो नातो कैडोक रैयो इण री सावळ ठा को पडैनी। इत्तो तो पक्कायत सू ठा है कै भीम सामी दाळ नी गळी जद प्रिथीराज उण रै आवू माथै पवार ठिकाणेदार धारावरस माथै आधी रात रा चाणचक धावो कर उठै पवार फौजा रो सावळ लाटो इज लियो अर आटै री कसर खाटै काडी। चाणचक रात रा अेक नानक ठिकाणेदार माथै हमलो तो घणो रजपूती वखाणण रो कारज नी मानीजणो चाइजै।

जयचन्द गहडवाळ सू प्रिथीराज रा कैडाक सम्बन्ध हा, आ इतिहास री अेडी घूघळी गाठ है जिणनै खोलणो घणो दोरो है। प्रिथीराज रा हेताळू लिखारा तो दोना रजवाडा में इण वेळा अणूतै खार री हिमायत यू करै—

(१) प्रिथीराज रो मा कमला अर जयचन्द री मा सुन्दरी दोन्‍ मापेट वैना अर दिल्ली रै तोमर आनगपाल री कवरिया ही। जे सुन्दरी मोटी वेटी ही पण नानकडी रो टावर हूवता थकाई प्रिथीराज नै आनगपाल आपरो पाटवी बणाय दियो। इण स दिल्ली चौहाण राज में भेळी भिळगी जयचन्द रीसीज ग्यो अर छिनछिन आई विचारतो कै प्रिथीराज नै कठै वाढू अर कठै ऊ साऊ।

(२) आपरी कवरी सयोगिता रै स्वयवर री वेळा जयचन्द प्रिथीरा नै बुलावो तो मैलियो नी अर उणरी पूतळी विणवाय पिळै माथै उवाय दी सयोगिता पूतळी नै इज माळा पैराय दी। प्रिथीराज वेळा माथै आ धमक

अर माडै ई लाठाई सू मयोगिता ने ले परो ग्यो।'

दोन राजावा बिच्चै खार पड्यो। चन्दबरदाई रै बूतै माथै डॉ० मोतीचन्द्र अर डी० आर० भण्डारकर तो अठै ताई मानै कै जयचन्द इज मुहम्मद गोरी नै मदद देवण री हिम्मत बधाय, उणनै प्रिथीराज माथै चढ आवण खातर उकसायो हो।' इण री हिमायत मे जिकी बाता बताइजै वै इण मुजब है—

(अ) तराइन मे गोरी अर प्रिथीराज रै बिचै दोन्यू जुद्धा री वेळा जयचन्द बोलो-बोलो क्यू रैयो। मुलक माथै आयोडै बिखे री वेळा जयचन्द नै आडो आवणो हो। खासकर उण वेळा जद कै धोराऊ भारत रा बित्ताक राजा प्रिथीराज रै मार्ग हा।

(आ) मुसलमाना माथै जयचन्द रै भाई-पणै री इमारी उण रै लेखा सू ई मिनै जिणा मे तुरस्क-दण्ड रो नाव ई को मिळैनी।'

(इ) प्रिथीराज री हार रा बावड लागा जयचन्द फून दाई खिल्यो। 'जयचन्द प्रबन्ध' नाव री पोथी सू ठा पडै कै राजी हूय उण नगर म उच्छव मनावण रो डडोलो पिटवायो अर घणै जोर-सोर सू ओ उच्छव मनीज्यो।'

पण जे उण वेळा रै साहित नै मनन करण बैठा तो ऊपरली बाता मे की ततव को दीसैनी। काट-छाट कर्या यू ठा पडै कै प्रिथीराज रासो राई-रत्ती भर ई भरोसै जोग कोयनी। माचाणी प्रिथीराज री मा रासो री कमला नी व्है अर त्रिपुरी रै अचलराव नाव रै राजा री कवरी ही अर उण रो नाव करपूर देवी हो। कित्ताई लेग अर साहित रा साधन पक्कायत सू करपूर देवी नै इज प्रिथीराज री मा बतावै। यू रै यू जयचन्द गहडवाळ नै करता-धरता मान अर १४०३ ई० मे नयचन्द रै रच्योडै 'रम्भामजरी' मे जयचन्द री मा रो नाव चन्द्रलेखा लिख्योडो है। पछै कमला अर सुन्दरी री

---

१ पृथ्वीराज रासो।

२ अेनल्स आफ दी भण्डारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट

११, २ (१९३०), १३९ १७

३ मोती चन्द्र कासी का इतिहास, पृ० १२९

४ पुरातन प्रबन्ध सग्रह, मुनिजिन विजय द्वारा सम्पादित, पृ० ८८-९०

कलकत्ता, १९३६

वाग्ता चन्द गी इज घड़योड़ी नी है तौ पछै काई है ?[1] घणै गाडवान चौहान राजा वीसलदेव रै दिल्ली लेग सू उण रै हाथा तोमरा नै धूड़ चटाय दिल्ली चौहान राज मे मिळण री मावूत मिळ। वीसलदेव प्रिथीराज तीजै रौ ताऊ हौ अर प्रिथीराज स घणी पैलाइज दिल्ली जीत लीधी। सो प्रिथीराज अर जयचन्द रौ मामीयोत भाई हूवणौ अर दिल्ली नी मिळण सू जयचन्द रौ प्रिथीराज रौ वैर हूजावणौ इतिहाम तौ है कोयनी चन्द रौ हळाहळ धरयोड़ौ झूठौ भागी वण्डर है जिण घणा वरमा इतिहास लिखारा नै उळझाया राख्या।

प्रिथीराज सयोगिता नै हर लेग्यौ इण म दोना रजवाडा विच्चै रार पड़ यो। रार री आ वजै ई चन्द रै धरयोड़ौ वण्डर इज है। रासो नै छोड'र चौहान अर गहडवाळा रै इतिहास री जित्ती पोथिया अर लेख वीजा मिळ्या है उवा माय म् अेकै मई स्वयवर रौ वखाण तौ नी है जिका नीज है पण सयोगिता रौ नाव तक को मिळैनी। नयचन्द रौ हमीरमहाकाव्य मेरुतुग री प्रबन्ध चिन्तामणी, राजसेखर रै प्रवन्धकोस अर रम्भामजरी सगळा साधन सयोगिता नै ओळखैइज कोयनी। रासो आळी सयोगिता ई प्रिथीराज रै मामियोन री वेटी ही पछै वरण धरम सू जकड़योड़ै समाज रै सामी आपरै कार्क या वडेवाप प्रिथीराज नै उण माळा पैराय आप रौ वीन्द कीकर चुण्यौ व्हैला। आप प्रिथीराज कित्तौ निसरमौ हौ कै आप री भतीजी नै इज हर लेग्यौ। अै वाता साची को हीनी। सोलवी सदी मे रच्योड़ै रासो रै चन्द रै धर्योडा अेडा वटिन्दा हा जिका करता-करता साच ज्यू दीसण लागा।

दोनू राजावा रै वैर सारू दियोडा सावूता नै काट-छाट अर सूझ री अक हळाक वट्टौ ई घणौ। इण माथै विचारी कै जयचन्द गौरी ने प्रिथीराज माथै चढ आवण रौ नैतौ दियो कनी तौ लखावै ज्यू इण थोथी वात नै तोडण सारू ई थोडोक मसोटी देवण री जरूत इज है। आ ठीक है कै प्रिथीराज माथै गौरी रै हमले री वेळा जयचन्द प्रिथीराज री मदद नी करी अर आगौ ऊभौ चुपचाप देखवौ कर्यौ। पण काई आ चुप्पी गौरी नै नैतरौ देवण री वजै मानीज सकै। जो कोई हा करै तौ उणनै आई मानणी पड़सी कै

---

1 वीर विनोद रा लिखारा स्यामलदास, राजस्थान रा घणा चावा इतिहास लिखारा गारीसकर हीराचन्द ओझा, श्री जयचन्द्र विद्यालकार, रमासकर त्रिपाठी अर भळै कित्ताई लिखारा रासो ने कूड रौ घरइज गिणै।

११७८ ई० में गुजगत रै सोलकिया माथै गौरी नै हमलै रौ नैतरौ प्रिथीराज ई दियौ व्हैला, वय् कै उण समै प्रिथीराज ई गुजरातिया री भीड को य्योनी। सालकिया तौ लारलौ बैर भुलाय अर प्रिथीराज कनै मदद सारू हलकारै नै ई मेलियौ हो। प्रिथीराज उण वेळा आपरै वजीर कदम्बवास री सलाह मान ली जिण सुझायौ गुजराती अर गौरी दोनूई प्रिथीराज रा अेकैजैडा बैरी है। आपस में दोना वैर्‌या रा बुवकड भागण में ई चौहाना री जीत है। ठीक प्रिथीराज आळी वळाई जयचन्द ई चौहाना अर गौरी नै अेकजैडा बैरी मान लिया व्हैला।

तुरस्क-दण्ड कैडौ कर हौ इण मुद्दै माथै जाणवारा मे अेकठपणौ कोयनी। घणाई तौ मानै कै औ दड तुरका नै हमला नी करण सारू दिरीजतौ। जयचन्द रा वडैरा घणा गाडवान कोयनी हा सो उणा नै तुरक-दण्ड देणौ पडतौ। इस सारू ऊवा रै लेखा मे इण कर रौ हवालौ है। पण जयचन्द फौज बल रौ धणी हौ सो वौ किण रोई दबैल कोहोनी उण नै औ कर देवण री जरूत अगेई कोहीनी।

प्रिथीराज री हार माथै जयचन्द जिकौ उच्छव मनायौ उणरै पाण ई आ नी कैइज सकै कै जयचन्द इज गौरी नै बुलावौ मेलियौ। पैला तौ 'जयचन्द प्रबन्ध' मे लिखीज्योडी सगळी वाता टग्कै आगलो साच कोहैनी। प्रबन्ध मे इज ओई मण्डयोडौ है, उच्छव री वेळा जयचन्द रै वजीर आ कैई कै औ समौ उच्छव रौ नी व्हे अर मातमी रौ है। जयचन्द र सबब पूछण माथै वजीर वोल्यौ, 'अेक आडै रा किवाड अर व्योडा लोह रा व्है पण व्योडा टूटया पूठै किवाडा नै खुलणौ इज पडै, उण पाछै किलै रौ काई व्है? राजन् प्रिथीराज आडै रा व्योडा दाई हा उणा रै य् टूटण माथै उच्छव मनावणौ वैजा है। आज प्रिथीराज माथै जिकी आफत आई है वा कालै था माथै ई आय सकै।" वजीर रै इण सवाद सू सामी दीसै वै जयचन्द बसगत बैर री वजैसू राजी हौ। जे उण आप इज गौरी नै बुलावौ मेलियौ हुतौ तौ वजीर जयचन्द ने गौरी रै हमलै सू डरावण रौ गाढ क्ठैऊ लावतौ? इत्तै ऊपर ई जे जयचन्द बुलावौ मेलियौ हुवतौ तौ गौरी रै सागै ई आपरै फौज बल नै झोकण मे उणरौ हाथ कुण पकडियौ हौ। औ बुलावौ प्रिथीराज ने रग प्रिथीराज, रग है कवणिया री उपज है। प्रिथीराज रै बरावगी आळा नै जणा ताई धूड मे नी रगदाळै उठा ताई प्रिथीराज नै धिन अर रग कीकर दिरीजै।

किणी फारसी तवारीखी लिखारै जयचन्द रै बुनावै रौ वखाण कोयनी कर्यो। पजाव माथै अमल पूठै राज रा भूखा गौर राजावा री भारत रै मायलै भागा माथै आवणौ सामाइ दीसतौ हौ। भारत जीतण खातर ई उणा पैला गुजरात माथै कूच कर्यो हो पण अठी दाळ नी गळी जद दूजौ मारग पकडियौ जठै तरवाडी म चौहाना स भिडन्त हुई। प्रिथीराज ने हराय'र वै धकै बध्या नै घणै उपजाऊ गहडवाळ राज मे वडिया जठै ११६४ ई० मे आप जयचन्द माथै गोरी रौ हमलौ हुयौ।

जयचन्द कोई साव ई घास-फूस नी हौ उण ई गौरी रै आगै गोडा को गळियानी। पण करणी कुण देखी, जुद्ध मे मार खायग्यौ। सो टावरा नै जयचन्द नी वणण री सीख देणौ कित्तौ अन्याव है, उण वीर मिनख माथै जिण आपरै राज-वाज अर रीत-पात नै रखाळता-रुखाळता घाटकी दे काढी।

व्हे सकै पैला सूई गहडवाळा री दिल्ली माथै आख रैई व्है। बीसलदेव री तोमरा सू दिल्ली खोसणौं उवा नै घणौ खटकतौ व्है। प्रिथीराज रै समै उण रा उन्दा रग देख जयचन्द दिल्ली खोसण रौ मत्तौ कर्यौ व्है। प्रिथीराज नै जयचन्द री इण हूस री जाणकारी मिळगी। आप सू लूठा नै गाळ री रीत नुवी कोयनी। प्रिथीराज रै जस रा गीत गावण्या नवा-जूना लिखारा जे जयचन्द नै भूण्डौ कैण लागा तौ की इचरज कोयनी।

अपरच नागारजुन चन्देला, भदानका, सोनकिया, पवारा अर गहड-वाळा म जुद्धा रै पाण इतिहास लिखारा प्रिथीराज नै भुजाकडजी मानै। जद कै साचाणी अपरच जुद्धा रै बूथै माथै सरावणी तौ अळगौ हुर्रै-धुर्रै कैय अर जमारै धूड नाखीजणी चाइजै।

बारवी ईसाई सदी मे गौरी अर अैबक रै हाथा रजपूता री हार रा कारण जोवता इतिहास लिखारा कैई तौ अणती पडताई छाट'र हार रौ भार उण वेला रै रीत-पात अर समाज माथै नाखै अर कैई सामन्त प्रथा रै लारै पडै। हार रै कारणा नै जोवण मे तौ की अणूताई कोयनी। मुलक मे भिडमला रौ टोटौ को होनी। रजपूत आपरी आन'र सुततरता खातर पचता हा अर गिणती म जे हमलाकरणता सू सल्ला नी तौ उवा सू थोडाई कोयनी हा। पछै पटकीज्या कीकर। सो हार रा कारण जोवणा दोरा भलैई व्हौ, जोवणा तौ पडैईज।

मोर्यवस रै डूवण रा कारण जोवता घणकरा पिंडत असोक रै लारै पडै। अर कुसाणा अर मुगला रै पतन सारू कनिस्क अर औरगजेब नै आडै

हाथा लै अर सगली भूण्ठाया इयां रै गळै मड दे । पण अजुताई कोई रजपूता रै पतन री भार प्रिथीराज माथै नाखण मारू मगदूर है जो सिरकार ई कर्यौ व्है । असोक, कनिस्क नै औरंगजेब माथै आपोआप रै वसा नै ठण्डा राखण मार्फ अजाणै करयोडी जिकी वाता मडीजै वे प्रिथीराज रै कवाडा सू केई थोक कमती है । थोडीक मूझ राख अर कोई उण समै री करणी माथै निजर नाखै तौ पडताई झाडण री जागाई वो रैवैनी, सगळो खोटा अर रजपूता नै हरावण री जड प्रिथीराज इज लखावण ढूकै ।

(१) मोटियार हुवण सू प्रिथीराज मे अणूतौ हायकौ हो । अणूतै हायकै उण बेळा रै सगळै राजावा नै प्रिथीराज रा वैरी बणा काडिया । आबू रा पवार, गुजरात रा सोलकी, महोबा रा चन्देल'र, कन्नोज रा गहडवाळ सगळा उण सू खार राखण लागा उण कराई अेकै सू युद्ध कर्यौ तौ कदेई वीजै रै चूठियौ चमठायौ ।

(२) ११७८ ई० मे गौरी रै सोलकिया माथै हमलै री वेळा आपरै कामदार कदम्बवास री केणी मान'र प्रिथीराज सगळै देस री सुततरता खोवण रा बीज भ्हा दिया । जै वो सोलकिया री भीड चढतौ तौ गौरी इसौ भूण्डौ किचरीजतौ के पाछौ हमलो करणजोग तौ काई रैवतौ उवैरा बावडई गजनी ताई को पूग सकतानी ।

(३) ११९१ ई० मे तराइन रै पैलडै जुद्ध मे गौरी नै घमडकाय'र छोड देणी उणनै सावळ नी किचरणौ, नाठतै लारै वार नी करणी अेडी खारी चूक हुई कै आप प्रिथीराज नेई ले डूवी । आ भूल भलेई रजपूती रै गुणा री रुखाळ मारू हुई व्हो अर भलेई प्रिथीराज री वधनाई सू घणी मूगी पड़ी ।

(४) तराइन रै दोनू जुद्ध री विचल्ली बेळा मे प्रिथीराज री करणी देखा तौ अवणियै जुद्ध री भणक पैला ई पड सकै । 'पैलडी तराइन आळी जीत सू फूलीज'र प्रिथीराज रावळै मे इज रमग्यौ' । "राजा रास मे डूवोडो है सुण'र मानखौ अर सामन्त वैरी री चढाई सू धूजण लागा ।"[१] दिल्ली भर मे कूकाराळयौ मचग्यौ ।[२] राजगुरू मानखै नै सागै लै मैला मे पूग'र राजा

---

१. अ० वो० अवस्थी, राजपूत राजवस, प० ३४८

२ "बढि आवाज दिल्ली सहर, चढियौ साहि सुलितान ।"

—पृथ्वीराज रासो, अन्तिम युद्ध, १४

नै चेतायौ, "गौरी रत्ती तुम्र धरणि, तू गौरी रस रत्त।"[1] राजन् उठी तौ (मोहम्मद) गौरी थारी धरती माथै रिझ्यौ अर अठी था गौरी (लुगाई) मे रिझ्या पडिया हौ। प्रिथीराज री करतूता देख'र राजगरु पैलाई सुणा-वणी सुणाय दी, "भुम्मी जाय नरिंद"। राजन् हमै भूमि था सू विदा व्हे है। ग्रै प्रिथीराज रा रंग हा अर उणरौ वैरी पैलडी वेळा तराइन मे कुटीज्या पछै पाछै हमलै साम्ह मार्गेडी पाणत करण ढूकौ।[2]

११६१ ई० मे तराइन मे जीत्या पछै कुण कै ब्याव भूण्डी, प्रिथीराज अणतौ फाटण ढूकौ आवणियै जुद्ध रौ पैलाई विचार कर आगती-पागती ग रजवाडा सू खार भाग अर अेकठपणै रा जतन तौ कठैई ग्या, वो खीज्योडै ऊठ ज्यू दावै जठैई हडवच घालण ढूकौ जम्मू रै धणी विजयराज सू इण वेळा इज वैर पाडीज्यौ अर जयचन्द सू भळै खार वध्यौ।

(५) इतिहास लिखारा रौ वावडलौ जूझार सूझ रौ धणी को होनी।[3] तराइन रै विजौडै भचकै सू पैला जुद्ध खेतर मे पूग्या पछै प्रिथीराज अर गौरी री फौजा थोडी ताळ आमा सामा डेरा मे पडी री गौरी प्रिथीराज नै कैवाडियौ कै वो आपरै भाई कनै सू वावड पूगा पछै इज जुद्ध करैला अर कै पाछौ जावैला परौ। इण छळावै मे आयोडा प्रिथीराजजी विचारियौ कै ठैट गजनी सू वावडा मे तौ जैज लागैलाइज। निसक हूय धमल घुरावण ढका। उणीज काळी रात जद प्रिथीराजजी निसक हा गौरी उवा नै भरमाया राखण सारु फोज्या रै तम्बूडा आगै वास्तै सुलगाया राख्यौ अर फौज ने लै, थोडोक अळगौ मारग पकड चाणचक धावौ कर्यौ।[4] लच्छण-देखी ठैट हमळै

---

१ पृथ्वीराज रासो, अंतिम युद्ध, ३६

२ (अ) फरिस्ता रै हवालै सू डॉ० दसरथ सरमा इण त्यारी रौ वखाण चौ० म० पृ० और उ० युग मे प० ३१ माथै करियो है।

(आ) तवकात ए नासीरी, प० ४६४

३ गौरी जाणी भेख म प्रिथीराज रै फौज वळ रा वावण लण खातर पूगौ हौ। साथै ई धर्मायन कायस्थ जेडा घुमपैठिया ई प्रिथीराज कनै पळता जिण महताऊ भेद गौरी कनै पूगता करिया हा।

४ (अ) गत व्यसगरस्त्वन्दे निद्रा व्यसन-सन्नधी।
व्यापादितस्तुरुष्कैस्स जीवभृतो युधि ॥

(आ) ई० डो० २ प० २००

(इ) तारीख फरिस्ता, १ प० १७५

री वेळा आपोआप प्रिथीराजजी तौ पोढयोडा खर्राटा भरता हा अर गेळौं ज्योडा कित्ताई भिडमल लोठा पकड्या जगल जावत्ता हा।[1] कित्ता निसक हा, जुद्ध खेतर मे पूगोडा हा पण जुद्ध री चिन्नीक भणक उवा रैं कोसा ताई नैडीज कोहीनी। जुद्ध रै मैदान मे ठेट वैरी रै हमलै री बेळा खर्राटा भरण वाळौ जूझार तौ अजुताई वीजौ हुयोइज कोयनी। अेक टक खर्राटा नी भग्ता तौ भौ डिगजावती काई?

प्रिथीराज रै हार्‌या पछै गौरी, लारै जावता अेवक र इल्तुतमिस नाना रजवाडा माथै पूगा। इणा मे घणौ गाढ होइज कोयनी सो सगळा नै वेवती रै वालै जावणौ पडियौ। हाडौ नै डूबौ गिणगोर आळी हूय ऊबी रैई।

इण आलेख मे म्हू आ वात चावी करण रौ जतन कर्‌यौ है कै इतिहास लिखारा रै हाथा चौहान प्रिथीराज तीजै नै जिका जस रा टीका दिरीज्या व्हे साच रै वूथै माथै को दिरीज्या नी। वो तौ अेडौ कुमाणस हौ जिको अेक पूरै जुग री भख ले अर ग्यौ। बीजै वसा री वात तौ अळगी साम्भरिया चौहाणा मे ई अरणोराज'र विग्रहराज चोथौ (बीसलदेव) प्रिथीराज सू घणा जोग जूझार, आपोआप रै वस री टेक धाक राखणिया अर भारत रै रीत-पात नै वारला हमला सू बचावणिया हा। सो प्रिथीराज नै धिन देवणिया इतिहास लिखारा नै हमैं वा करदेणी चाइजै, पैलाई अणता धिन अर रग दिरीजग्या है।

---

१ (अ) तबकात ए नासीरी, १ प० ४६८
(आ) हमीर महाकाव्य, ३, ५८

पदमणी

जायसी री पदमणी कथा ने सूझ रा झपंटा देता इण सू जुडियोडा अबखा अळूझा खोलण रो जतन करियो है। पदमणी क्या री काट छाट करता, उणनें सावळ रळकावता फालतू बगदं नें उकरडो फेंकता साच ताई पूगण री पाणत श्रो लेख है। जाणीता इतिहास लिखारा रा हवाला सू लिखियोडो श्रो लेख सूझ सू साच ताई पूगण जोग इतिहास रं पागिया ने सवावणो लखाय सकं।

मध्यकाल रं राजस्थान रं इतिहास री श्रणूती मालदारी ने सगळाई इतिहास लिखारा श्रगेजै। मायड भोम री रुखाळ खातर रसै की मुळकता होम देणौ इण खेतर रं इतिहास रो घणो महताऊ वात गिणीजै। पण, राजस्थान मे इतिहास लिखीजण री रीत घणी जूनी कोयनी। इण सारु इवरज नी कै कित्तीक गरव जोग गाथावा ग्रन्धारै इज पडी रैयगी व्है। कैई श्रदीठ जागावा श्रजाण्या जूझारा ग्रर वीरागनावा री करणी री भणक ई श्रापा रै काना को पडी व्हैनी। लिखीजण री रीत पडी जद घणकरा लिखारा ने राज री छत्तरछीया मिळियोडी रैवती सो कैई वाता ग्राज ज्यू मिळे ज्यू री ज्यू इतिहास नी मानीज सकं। कैई जूना लिखारा तौ ग्रापरै धणिया रै नाव पैला श्रेक हजार ग्राठ वेळा श्री श्री लिख जस रा गीत गावता ग्रठा ताई पूग जावै कै फळाणजी ढीकडजी श्रैडा सावत हा कै 'खुर रजोन्धकार' वाजता, उवा रै घोडा री टापा रै भार सू धरती धूजण लागती, सात समन्दौ रौ पाणी हव्वोळै चढ जावतौ। ग्रावौ ताई डिग्गण ढूकती। सो चारण-भाटा री श्रणूती वखाण करण की सैली श्रर ठैट जूनकी ग्रनुश्रुतिया होळै-होळै वदळीजण री रीत राजस्थानी इतिहास रै नायक निर्यिकावा रा चितराम श्रैडा धूघळा कर काढिया कै उवा री खरी श्रोळखाण ई भारी पडण ढूकगी। सो श्रेकै पाडै तौ श्रलेखू गरव जोग चरित्र घुप्प ग्रन्धारै गम्योडा पडिया है उणा री

भणक्ई किन्नेई कोयनी। बीजै कानी साव मस्करा इज लाडू उडावै है। ग्रेडै ग्रळूजाडै मे जै की ग्रेडा चरित्र ई करता-करता मिळग्या साचाणी जिका गी फूल-पाखडीज कोय हीनी तौ की ग्रजुबं री बात कोयनी।

महताऊ बाता ने माण्डण री रीत सू पैला ग्रेडी बाता चारण-भाटा रै कठै घोखीज्योडी रैवती। पीढी-घर-पीढी कठै घोखीजती बाता माथै होळै-होळै देसकाल मुजब ग्रसर हूवतोइज। कठै घोखियोडी घणकरी बाता पद्या मे हूवती। सो दूवौ री चोखाई ग्रर ग्राखरा री तोड-मरोड सू वितीक बाता रा माभणा विगडिया व्हैला। घोखीज्योडी बाता री ग्रोळख सारू ग्रेक भारी ग्रवखाई भळै ग्रा रैई कै सोळै ग्राना साहित री बात घणी पीढीया रै कठै रैवती-रैवती धकै जावता टकै ग्रागली माच गिणीजण ढूक जावती।

मध्यकाल रै राजस्थान रै इतिहास री नायिकावा रा चितराम ग्रणूताइज धूधळा है। प्रिथीराज तीजै चौहान री मा कमलादेवी ग्रर जयचन्द गाडवाळ री मा सुन्दरी ने हमैं घणकरा इतिहास लिखारा चन्द ढाढी री थोथी कल्पना गिणै। कमला ग्रर सुन्दरी साम्ह खरै इतिहास मे ग्रजकालै कठैई ठोड कोयनी। मानीता इतिहासकार कन्हैयालाल माणिकलाल मुंसी, कालिका रजन कानूनगो ग्रर बाबू जगनलाल गुप्ता घणी सूझ सू रणथम्बोर रै चौहान हमीर री कवरी देवल्ल देवी ने 'हमीर रासो' ग्रर 'हमीर महाकाव्य' रै रचणहारा री कल्पना ग्रगेजायदी है। थोडैक सूझ री दीठ सू सयोगिता ग्रर पदमणी ई देवल्ल देवी रै जोड रा थथोथा लखावण ढूकै।

१९५६ मे डॉ० कानूनगो कलकत्ता विस्वविद्यालय मे 'ग्रार० पी० नोपाणी व्याख्यान माला' मे बोलता थका पदमणी ने मलिक मोहम्मद जायसी री कल्पना ठैराई। ग्रापरी बात री हिमायत मे कानूनगो कित्ताई इतिहास सू जुडियोडा साबूत चावा कीया। पदमणी रै वजूद ने सका मे नाखण वाळो पैलडो लिखारो कानूनगो कोहोनी। पैलपात बूदी रै जग चावै लिखारै सूर्यमल्ल मीसण ग्रापरै 'वस भास्कर' मे पदमणी माथै सूझ री दीठ नाखी ही। पछै पदमणी इतिहास लिखारा विचै पटकदडी विणगी। डॉ० दसरथ सरमा री कैणी है—

"Perhaps no other heroine of Rajasthan has attracted greater attention of poets and writers—Rajasthanis and non Rajasthanis as well—than the far famed queen Padmini of Chittor "

इतिहास लिखारा पदमणी ने वाग्रैली विणा, लिख लिख ग्रर ग्रेक घणी गाठा

री अळूमी पटक दियौ, उनै अबखी आडो विणाय दी। इतिहास लिखारा री इण खाच-ताण सू इण मुद्दै री दो वाता साव सामी उगडी। अेक तौ आ कै पदमणी हुई आपइज कोयनी वा तौ जायसी रै मूथियोटी पोथौ जभाळ है। इण वात री हिमायत सूर्यमल्ल अर कानूनगो रै पछै 'खिलजी वंस का इतिहास' रा लिखारा डॉ० किसोरी सरण लाल करी। बीजी वात आ उगडी कै पदमणी रै नाव सू थूक उछाळणौ बिरथा है। वा साचाणी हुई अर चित्तौड री महा-राणी ही। इण विजोडकी वात री हिमायत वीर विनोद रा लिखारा स्यामल दास, अर गौरीसंकर हीराचन्द ओझा, ईस्वरी प्रसाद, दसरथ सरमा, गोपीनाथ सरमा वीजा इतिहास लिखारा करै।

पदमणी-कथा माथै सूवै री असल वजै आ है कै १३०३ ई० मे अला-उद्दीन रै हमलै रै २३७ वरस पछै ताई रै किणी लेख, अेकई पोथी कै इतिहास रै साधन मे पदमणी री चिन्नीक भणकई को मिळैनी। इण समै इतिहास री अलेखू सातरी पोथिया रचीजी। इणा मे अलाउद्दीन रै चित्तौड माथै अमल री फडदागी फडदा मिळै पण पदमणी नाव इज को लादै नी। इण लेख मे म्हू आ बतावण री खप्पत करू कै पदमणी-कथा रै थैट टूण्डै जायसीज है। पैलपरात जायसी आपरी 'पदमावत' मे पदमणी-कथा उगेरी। तठै पछै लिखारा पदमावत म काड-काड आप-आप री पोथिया मे पदमणी माथै लिखण ढूका। पदमावत साहित री भलेई कैडोई सातरी पोथी व्हौ इतिहास रै काटै खरी कोयनी।

पदमावत जायसी १५४० ई० मे सेरसाह सूरी रै समै अवध मे बैठ रची। थोडै मे पदमावत री कथा इण मुजब है। सिंहल देस मे गान्धर्व सेन नाव रौ राजा हौ। गान्धर्व सेन री फुटरी-फरी कवरी पदमणी रै हीरामण नाव रौ मिट्ठू हौ जिको अेकर उड गियौ। जगळ मे पकडीज विकतौ-बिकतौ चित्तौड रै धणी रतनसेन रै हाथा पूगौ। हीरामण मू रूपाळी पदमणी रा वखाण सुणता-सुणता सेवट वा रतनसेन रै चित्त चढगी। जोगी भेख मे बारै वरस सिंहल मे भटक सेवट उण सू फेरा खाया। पाछा चित्तौड आया निमक दिन वरण ढूका। रतनसेन रै मोसौ दिया, चिडवौ लागोडौ, पाछौ वैर काडण खातर राघव चेतन नाव रौ बामण दिल्लीपति अलाउद्दीन कनै पूगौ। पदमणी रा गुण वखाण-वखाण उनै अलाउद्दीन रै हीयै चाडदी। आठ वरस ताई लगू अलाउद्दीन री लस्कर चित्तौड गढ नै घेरिया पडियौ रैयौ। सगळाई पडपच पार नी पडिया जद सेवट काच मे पदमणी नै देख घेरौ तोडण री वात बैठाई।

पावणी जाण पोळ ताई पुगावण आयोडै रत्नसेन सागै कुटळाई कर अलाउद्दीन उनै पकड आप सागै दिल्ली लै परो गियो। बावड पूगा पदमणी १६०० पालकिया मे डावडिया रै मिस सैनिक बैठाणिया। दिल्ली पूग लडता-खपता रत्नसेन ने छोडा लाई। इण वेळा गोरा बादल घणी भिडमलाई बताई। चित्तौड पूग अर रत्नसेन कुम्भलगढ रै देवपाल माथै कूच कियो। रत्नसेन दिल्ली कैद हो जद देवपाल आय वदळ'र खुसखरिया गावतो चित्तौड सामा पग बजाया हा। पछै अलाउद्दीन रो पाछो हमलो हुवा चित्तौड दिल्ली भिळियो। अपरच वात थोडै मे पदमावत रो सार है। इण वात री साबळ परख करा तो इण मे घणो सत को दीसैनी।

इतिहास मे कोरी साव साची वाता री लेखो व्है। पण पदमावत मे वतळ करणियो, मिनख रा बोली बोलणियो मिट्ठुई पदमणी-कथा री अेक नूठी कडी है। जै इतिहास लिखारा इण कडी ने सूगायदै तो लारलो पाप री धूप मत्तैई गुड जावै।

कुम्भलगढ लेख सू ठा पडै कै १३०२ ई० मे समरसिंह रै मुवा पूठै उण रो मोबी कवर रत्नसिंह पाटवी हुवो। सगळी फारसी तवारीखा रै मुजब २५ अगस्त, १३०३ पक्कायत सू अलाउद्दीन रै चित्तौड फतै री तिथ है। इण विगत मुजब रत्नसिंह ने राज री हराळ सारू अेक डोड वरस री वेळा इज मिळी। *थोडीताळ जै आई अगेजला कै रत्नसिंह राजपाट रो घणी विणियो* उणीज घडी हीरामण पदमणी रा वावड पूगता कर दिया। ऊव घडी मे इज वावड लागण रै समचै रत्नसिंह राज छोड सिंहल कानी वईर हुय गियो। उण वेळा उडण-खटोला रो वखाण तो पदमावत मे जोयोडोई लादै कोयनी। माळा-मीठा करता करता ई अेक दो वरस तो सिंहल पूगण मे अर पाछो आवण मे खरा इज लागा व्हैला। बारै वरस उण जोगी विण्योडै भटकता वाडिया। पदमणी ने लें'र पाछो चित्तौड पूगो उणी दिन जै राघव चेतन ने धुरकार दियो। मानला पाचै-सातै उण दिल्ली पूग सागै दिन ई अलाउद्दीन ने पदमणी रै गुणवन्ती अर रूडै रूप री हूरण रा वावड पूगता कर दिया। *अलाउद्दीन कनै फौज आठूपोर कसीकसाई त्यार रैती हो सो औ झझाझड* चित्तौड जाय पूगो। पण पदमावत रै वखाण मे घेरै मे जिका आठ बरस लागा वे तो कठैई घाजीजै कोयनी। इण विगत मुजब ओछी सू ओछी वेळा गिणता गिणताई रत्नसिंह रै राज सभाळिया पछै वाईस-तेईस वरस अला-उद्दीन ने लागा। अलाउद्दीन रै चित्तौडगढ मे वडण री तिथ यू तो १३२५

ई० रै लगू-ढगू बैठै। कोरौ अेक डोड बरस राज करणियै रत्नसिंह ने बारै बरस जोगी बिणाय भटकावणौ अर आठ बरस गढ मे घिरियोडौ राखणौ इतिहास लिखारा रै गळै कीकर उतर सकै। जीवती माखी तौ देखती आख्या गिटण री रीत कोयनी। आप अलाउद्दीन १३१७ ई० सू पैला पैला फोत खेल गियौ हौ।

सिहल रौ इतिहास भणिया ठा पडै कै १४वी सदी रै पैलडै वरसा मे चित्तौड रै रत्नसिंह रै समै, उठै भुवनेकबाहु या कीर्तिनिस्सक देव पराक्रम बाहु नाव रौ राजा राज करतौ हौ। पछै जायसी रौ गन्धर्व सेन भळै कठै हौ। सिहल रौ सगळौ इतिहास पढ काडा तोई गन्धर्व सेन तौ उठै राजा हुवौ आप इज कोयनी। सो पदमावत री पदमणी रौ बाप तौ जायसी री कल्पना इज है।

जायसी अलाउद्दीन रै चित्तौड माथै दो हमला रौ बखाण करियौ है। इणा मे पैलडौ हमलौ अकारथ गियौ अर बीजोडै मे चित्तौड भिळियौ। पण सगळी फारसी तवारीखा मे अलाउद्दीन रै अेक हमलै रौ वखाण इज करियोडौ है।

पदमावत मे घेरै री बेला आठ वरस मण्डियोडी है पण सगळी फारसी तवारीखा रा लिखारा आ बेळा आठ सू दस महीना रै बिचै-बिचै गिणै। जायसी आपरै बखाण मे पदमणी रै पति रत्नसेन रौ बाप चित्तौड रै चित्रसेन नाव रै राजा ने बतायौ। मेवाड रै इतिहास सू जुडियोडै कित्तेई साधना मे अलाउद्दीन रै हमलै रै समै चित्तौड रै राजा रौ नाव रत्नसिंह लिख्योडौ मिळै अर वो समरसिंह रौ कवर हौ। फारसी तवारीखा ई आइज साख भरै कै रत्नसिंह चित्तौड रौ धणी हौ। चित्रसेन नाव रौ राजा तौ चित्तौड मे हुयोइज कोयनी। चित्तौड दुर्ग री थापना करी जिकौ परम्परावा मे चित्रागद नाव म् जरूर ओळखीजै, उण पछै चित्तौड रै किणी राजा रौ चित्रसेन नाव रौ तौ इतिहास ने छोड परम्परावा अर वाता ताई मे कठैई वखाण को मिळैनी। सो जायसी रौ रत्नसेन अर उण रौ पिता चित्रसेन दोनू ई कल्पना सू उपजायोडा नाव इज है। जिण जायसी नै अलाउद्दीन रौ हमलौ हुवौ जद चित्तौड रौ राजा कुण हौ आई ठा कोयनी ही उनै, पदमावत री पदमणी-कथा कित्ती कूड व्हैला। चित्तौड रावळ रै रूप री भणक डोडी माथै ऊरै दरोगै ने ई को लागती नी। पछै सैकडा कोस री भौ ठैट अवध मे बैठे जायसी ने काकर लागी ?

कुम्भलगढ रै देवपाल सू भिडन्त री बेळा रत्नसिंह रै घायल हुवण रौ

बखाण ई पदमावत मे मिळै। कुम्भलगढ री थापना रत्नसिंह रै मरिया रै १५६ बरस पछै १४५९ ई० मे महाराणा कुम्भा रै समै हुई। सो १५४० ई० मे पदमावत री लिखारी तो बैठो कुम्भलगढ नाव सुण लियो व्हैला पण रत्न-सिह री कुम्भलगढ रै देवपाल सू लडाई तो १५४६ ई० सू पैला री कल्पना मे ई कीकर मिळ सकै। जद कुम्भलगढ थापिज्योई कोयनी तो उठै देवपाल राजा हूवण री बात कित्ती निबली अर काची बात है।

जायसी री पदमणी-कथा रा हीरामण, राघव चेतन, गान्धर्व सेन, चित्रसेन अर देवपाल सगळा काल्पनिक है। जठै इत्ता पात्र काल्पनिक है उठै जे आप पदमणी काल्पनिक ही तो इचरज कैडो। जायसी अलाउद्दीन रै चित्तौड माथै हमलै रै पाण सो टक्का साहित री पोथी रची। आप जायसी तो पदमावत ने इतिहास री पोथी बताई कोयनी। उण तो लाई निरियो ई परी कै पदमणी-कथा साव थोथी कल्पना है। पण उन्नी सुणै जदैक। मुद्दई सुस्त अर गवाह चुस्त' आळो हुयोडो है। पदमणी-कथा ने आपरी कल्पना बतावतो थको जायसी लिख्यो—

तन चितउर मन राजा कीन्हा।
हिय सिंहल बुद्धि पद्मिनि चीन्हा॥
नागमति यह दुनिया धन्धा।
बाचा सोई न ओहि चित बन्धा॥
राघव दूत सोई सैतानू।
माया अलाउद्दीन सुलतानू॥
प्रेम कथा ओहि भांति विचारहु।
बूझ लेहु जो बूझै पारहु॥

अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत रै सुलताना मे सगळा सू भारी भिडमल गिणीजै। उण कनै फौज बल अणूतो। खाताळो घुड सेना अडघम देती खड-बडा-खडबडा जाय पडती। इण घुड सेना रै बूथै माथै उण सेमूदो अैसिया जीत अर सिकन्दर री जोड मे ऊबण रा सपना वाधिया हा। फरिस्ता रै लिखण मे की साच है तो अलाउद्दीन री फौज मे अख्तर-बख्तर बधियोडा चार लाख पिचन्तर हजार घुडसवार हर घडी टच हुवोडा सुलतान रै भाग रो चाट जोयबो करता।

आज रा सगळा इतिहास लिखारा आई गगेजै कै अलाउद्दीन रै राज मे जै पत्तो ई खडक्तो तो सुल्तान कनै बावड पूग जावतो। 'वरीद' अर 'मून्ही'

वे भेदिया हा जिका मिनखा रै घरा रै ऊडै थांरा रा बावड सुल्तान नै पुगा-वता। वग्नी लिख्यो, 'अलाउद्दीन ने बावड़ पुगा बिना कोई चुळई नी सकतो। भेदिया म टरना अमीर हजार ताळा मे बैठाई चालण सू भिचरता अर भाना घर-घर अेक-दूजे ने वात ममभावता। आप रै घरा मे बैठा मिनख थर थर धजता अर सुल्तान ने ग्यारी लागै जेडी आग्वर मग्यिाई मण्डै बारै नी काडना।"

पदमावत री पदमणी १६०० पालकिया मे धूम-धडाके म दिल्ली वहीर हुई। आ वात चाम्मेर निमेर दो वै उण सुल्तान री भेणी मानण री धारली है। सुल्तान पदमणी सारू कैठो रित्तो कुटळाया करो पण पदमणी रै वईर हुवण रा बावड लागा ई उनै कोडिया नी नडी। बधावण सारू मिनख सामा घणा मेलण री नी उगजी। सुल्तान नो कैठो कालो हुवोडो इफळोज गियो व्हैना। पण बीस-तीस ताळा माय नी वतळ रा बारट पुगना करणिया बरीद अर 'मून्ही' मण री माम्भी हुय रठै चिप गिया। ठट चित्तौड सू दिल्ली पूगण मे १६०० पालकिया ने थोडी जेज तौ खरी लागी व्हैना। धर मजला, धर कोसा करता-करता कठैई बिसाई ग्याई व्हैला। गेलै वैवता रदास कोई जगळ ई गियां व्हैना। वेरी बावडो आया ग्वयाळी गावण रा मत्ताई हुया व्हैला। १६०० पालकिया रै मानखै रै जीमण सारू वडाया मे ग्नुरपाई खडवडिया व्हैना। राज मे पत्तो खडकण री ठौ राखण वाळै मगळै भेदिया ने जायसी कठै लेजा अर कुम्भकर्णी नींद सुवाण दिया। कीकर ई व्हो पदमावत री पाल-किया दिल्ली पूगी जठै ताई अलाउद्दीन ने पालकिया मे डावडिया रै भेख मे बैठै जमारा री भणक ई को पडीनी।

दिल्ली पूगा पदमावत री पदमणी धणी ने आग्वरी वेळा देखण री छूट ली। १६०० पालकिया उण मैल मे वडी जठै रत्नसिह कैद हो अेकूकी पालकी मैल मे लेजाय ग्यानी करै तरा पोल ग्वुल जावै। सो मगळी पालकिया मैल मे वडिया इज जूझार बारै निकळ अर अणफे मे पोरैदारा माथै टूटा। चार मिनख मावै जेडी अेक पालकी हथ्था समेत दस-बारै गज जागा तो खरीज घेरै। सो मैल १६०० पालकिया ने खपावै जित्तो, कोस-डोढ कोस भों मे तो पसरियोडो व्हैताइज। लालकिलो तो जद ताई बणियो को होनी। अेडो कोई मैल, जिका हमै तो कैठी दिल्ली मे बावड लागैक नी, पण उण समै तो बणि-योडो ही जिण सागे मोकळो कोस-डोडेक री तालर घेरियोडो व्है।

अेकूकी पालकी मे दोरा-सोरा भिडमभिड चार-चार भिडमल वडि-

योडा व्हैला । तोई १६०० पालकिया मे छ साढी छ हजार सू घणा मिनख तौ माया कोयनी । अणफं मे चाणचक धावो कर कैठी रत्नसिंह ने तौ छोडा लियौ । दिल्ली तौ पालकिया मे पुगा हा । पाछा पाळा इज वईर तौ नीज हुवा । पछै सवारिया कठैऊ आई । जायसी तौ कैठी बतावतोक नी पण सान्दिया भूण्डा व्है, सो कै सकै यू कर ने यू कर दियौ हौ सो फलाण जी घोडा लिया त्यार ऊबा हा । घोडा टाळ घणी भौं पुगावै जैडी खाताळी अस्वारिया जद ही कोयनी । नत्त दीया नोई भरै जिण पदमणी अर दो-चारैक साचलकी डावडिया ही जिका वायरै सू वाता करणियै घोडा माथै ठैठ चित्तौड ताई अस्वारी कीकर करी व्हैला । वीडीदळ फौज रै धणी अलाउद्दीन रै राज रै ठेट गरभ मे छ हजार जूझार कितीकताळ जूझिया व्हैला । बुतोळिया सू वाता करै जैडी अलाउद्दीन री जगचावी घुड सेना लारै वार करी व्हैला । अबखी घाटी हूवती तौ मुट्ठीक जूझार मोटी फोजा ई ढाब लेता । पण दिल्ली रै पाडलै मगरा मे लारै वार करता चार लाख पिचन्तर हजार घुड़सवारा नै लाई गोरा बादळ कैठी कीकर अर कठै-कठै ढाबिया व्हैला ।

पदमावत री माळी पन्ना जडियोडी चुतर री चाद लुम्बाळी पदमणी साहित रै काटै तौ खरै खटावै । चोखी भासा फूटरी कल्पनावा अर आध्यातम रा भाव भेळा । पण साच जोवणियै लिखारा रै गळै तौ पदमणी-कथा गत्तूई नी ढळ सकै । सो आज पदमणी-कथा इतिहास लिखारा बिचैई जिका गेळ घट्ट माडियोडी है वा खाचिया-ताणिया ई घणा दिन री कोयनी । सेवट तौ इणरै हेताळुवा ने फीटा पड अर थाकणो पडैला । सगळा ने अगेजणो पडैला के पदमणी पदमावत मे इज ओपै इतिहास री पोथिया उण री असल जागा कोयनी ।

कैई लिखारा रै जीव मे पदमणी-कथा ने साच मानण मे तौ खुणको रैवै । पण अलाउद्दीन रै चित्तौड माथै चढ आवण री वजै जोवता की आछी वजै नी लादै जद भरम ने हेठी पटकता पदमणी ने अगेजलै । साचाणी किणी काल्पनिक पदमणी ने अलाउद्दीन रै चित्तौड हमलै री वजै बणावण री जरत अगेई कोयनी । उण मर्म री वाता माथै कोई थोडीक सूझ सू विचार करै तौ मत्तैई कित्ताई कारण सामा आय पडे ।

अलाउद्दीन आखै ओसिया ने जीतण खातर डुळनो हौ । काजी अला-उलमुल्क बुचकार-बुचकूर ओसिया जीतण रौ सपनो तौ सेवट परौ तोडायो पण सगळे भारत ने जीतण री भाट भेलायदी । सो भारत रै फनाणै अर

ढीवडै सगळै ई सेतरा माथै ग्रलाउद्दीन रै हमनै री वजै याजी रै झेलियोडी ग्रा भाट इज ही।

उण समै री ग्राथिक वाता री भान हुया ठा पडै कै विणज-वोपार सारू जद चित्तौड कितरौ मह्तवाऊ हौ। माळवा, गुजरात मध्यप्रदेस ग्रर उत्तर-प्रदेस रै सगळै रजवाडा रा विणजारा ग्रर बाळदिया घणै पैला सू माध्यमिका री मारग पकडता। ग्रलाउद्दीन रै बजार भावा ने ढाबिया राखण सारू करियाडै जतना ने देखता इत्तौ तौ ग्रगेजणौ इज पडै कै वो ग्राथिक सूझ रो धणी हौ। उण जे माध्यमिका (चित्तौड) रै ग्राथिक महत्त्व ने भापता थका उनै काबू करण सारू खप्पत करी व्है तौ की इचरज जोग वात कोयनी।

उण समै री रीत ही कै जिकौ जित्तै लाठै-ग्रर ग्रगगै भाखरा चुणीज्योडै गढा री राजधी हूवती वी उत्तौई जोरावर बाजतौ। गढ उण वेळा हमला सू बचाव रा सगळा सू भरोसै जाग साधन हा। सो गढा रै गढ चित्तौड ने काबू करण मे ग्रलाउद्दीन रै जस मे वढोतरी हूवती ग्रर उण री लाठाई रा डका बाजण ढूकता। इण सारू राजनीति ने ग्राडी राखतौ, जस रौ भूखौ ग्रलाउद्दीन चित्तौड चढियौ व्हैला।

ग्रलाउद्दीन सू पैला दिल्ली सल्तनत रा कित्ताई सुल्तान दिल्ली माथै राज करियौ हौ। इणा मे कैई जोरावर ग्रर जोग ई हा। पण ग्रजैताई चित्तौड मे जीत रा डका बजावण री जस ग्रेकण रै नाव ई को लिखीज्यौ हो नी। सो ग्रलाउद्दीन चित्तौड जीत ग्राप सू ग्रागला सगळा सुल्ताना सू घणौ भारी भिडमल ग्रर लाठौ सुल्तान कैवीजणी चावतौ व्हैला। साचाणी ग्राज ताई ग्रलाउद्दीन इज पैलपात चित्तौड जीतणियौ सुल्तान गिणीजै। ग्रा वात ठेट ताई ग्रापरी ठौड है ज्यू रै ज्यू गिणीज योइज करैना।

'वंस भास्कर' रै लिखारै सूर्यमल्ल मीसण ग्रलाउद्दीन रै चित्तौड हमलै री ग्रेक घणी मह्तवाऊ वजै री वखाण करियौ है। जोधराज रै रचियोडै हमीर रासो रै बूथै माथै उण ग्रलाउद्दीन सामा जुद्ध मे जूझता रणथम्भोर रै हमीर रै दो कवरा रै मारिया जावण री वखाण करियौ है। दो कवरा रै खेत रैया हमीर ग्रापरै रत्नसिंह नाव रै तीजोडै कवर ने चित्तौड राणा कनै मेल दियौ। ग्राडै पाडै रा राव राणा विखा ग्राया चित्तौड री छत्तरछीया मे पूग जावता। सो ग्रलाउद्दीन रै ग्रेक वैरी ने चित्तौड ग्रासरौ दियौ। वरनी रै वखाण सू ई ग्रा वात भळै खरी व्है कै हमीर री ग्रेक कवर रणथम्बोर रै दिल्ली भिळिया पछै ईजीवतौ हौ। बरनी री कैणौ है कै जिण मगोल सिरदार ने ग्रासरौ देवण

री वजे सू हमीर माथै अलाउद्दीन रौ हमलौ हुवौ उण नै वन्दी विणाय अला-उद्दीन कनै लाया जद उण हमीर रै कवर ने रणथम्बोर रौ धणी विणावण री बात करी। सो अलाउद्दीन रै रणथम्बोर अर चित्तौड हमलै री वजै अेक री अेक ही। अलाउद्दीन रै वैरी मगोल ने आसरौ देण सू रणथम्बोर अर उणरै वैरी हमीर रै कवर रत्नसिह ने आसरौ देण सू चित्तौड माथै हमलौ हुवौ। पैला-पैला रणथम्बोर हमलै री असल वजै देवल्ल देवी गिणीजती। लारै जावता आ वजै कूडी मानीजण ढूकगी। हमै मगळा अगोजै कै देवल्ल देवी नाव री कवरी हमीर रै हीज कोयनी। अलाउद्दीन मगोल सरदार ने रणथम्बोर आसरौ मिळण सू भीवर गियौ अर खोजियोडै रणथम्बोर माथै हमलौ करियौ। पदमणी ने ठैट जायसी अलाउद्दीन रै हमलै री वजै विणाई जठै पछ इतिहास लिखारा इफळीज गिया। सगळाई पदमणी ने इज असल वजै मानण ढूका। पण हमै तौ देवल्ल देवी दाई पदमणी ई कूड गिणीज जावणी जोईजै।

अठै उगरण जोग अेक बात आ है कै सूर्यमल्ल अर धकै आवता कानूनगो रै पदमणी ने कूड मान अर मुगाया पछै पदमणी-कथा रा हेताळुवा पाय सू केया कानूनगो री बाता री काट सारू तौ कदास थोडी घणी आफ-ळ्या मारी अर हाय-पग पटकिया। पण पदमणी-कथा साच है इण बात री मीड मारू अजुताई किणी अेक ई नुवी बात नी कैई। दसरथ सरमा 'नोपाणी स्मृति व्याख्यान माला' मे वाचता थका आ बात चावी करण रा जतन करिया कै पदमावत सू पैला ई साहित मे पदमणी-कथा रौ वखाण मिळै। उणा १५२६ ई० मे तोमर वसी सल्हदी री वेळा रचियोडी 'छिताई चरित' नाव री पोथी रौ हवालौ दियौ। पण आ बात अजुताई खरी कोयनी हुई। समर्थ जी अजुताई छिपयोडीज पडी जिण पोथी रौ हवालौ दियौ अण रै लखीजण री तिथ कैठी पक्की है क नी ? तोमर सल्हदी रौ राज जै दिल्ली रै गवाडै कठैई हौ तौ उठै तौ घमसाण मचियोडौ हौ। भारत रा राव अर राजा बावर नाव री बलाय सू जूझता हा। पछै अेन जुद्ध री ठोड सल्हदी रै राज मे साहित सिरजण री बात सोरै सास तौ गळै उतरै कोयनी। सावचेली राखण री जरूत यू है कै पदमावत लिखीजण री तिथ (१५४० ई०) अर छिताई चरित' रचीजण री तिथ (१५२६ ई०) मे साव चिन्योक फरक इज है। थोडी ताळ जे 'छिताई चरित' ने १५२६ ई० मे लिखीज्योडी अगेज ला तौ ई बात पार को पडैनी। इत्तौ फरक पड जावै कै हालताई तौ पूछीजै,

"१३०२ ई० मे अलाउद्दीन रै हमलै रै २३७ बरस पछै ताई रै किणी इतिहास लिखारै पदमणी रौ बखाण कीकर को करियोनी।" इण री ठोड यू पूछीजण लाग जावैला "२२३ बरस पछै ताई रै किणी लिखारै पदमणी रै बाबत क्यू नी लिखियो ?" साचाणी बीचलै चवदै बरसा मे तौ अेक ई सातरी पोथी को लिखीजी नी। सो 'छिताई चरित'ने १५२६ ई० मे लिखीज्योडी पोथी अगेजण सू भी बात आप री ठोड है जठै री जठै रैवै। मध्यकाल री इतिहास री घणकरी पोथिया तौ अलाउद्दीन रै हमलै सू दो सौ बरस पछै ताई लिखीजगी ही।

पैला-पैला प्रो० हबीब अर बीजा केई लिखारा तौ अलाउद्दीन रै दरबारी अमीर खुसरो री खाजेनुल फतुह मे ई पदमणी रौ बखाण बतावण ढूकगा हा। इण पोथी मे अेकै जागा खुसरो आपौ आप ने हुद हुद कैयौ है। लिखारा अेडा पागी वणिया कै वावड जोवता-जोवता सेवट ठा पटकली। सेबा री राणी बिलकिस री खबर सुलेमान कनै पुगाई वो हुद-हुद नाव रौ पक्षी हौ। इत्ती बात हाथ आया पछै सुलेमान ने अलाउद्दीन अर बिलकिस ने पदमणी री उपमावा बतावता थका पदमणी-कथा ने साची अगेजली। पण साचाणी खुसरी रै बखाण मे पदमणी तौ आगी आप बिलकिस रै नाव री भणक ई कोयनी मिळै। डॉ० कानूनगो फारसी रै जाणकार वाहिदमिर्जा रै हवालै सू सेवट साच चावी करी कै अमीर खुसरो रै बखाण ने दावै ज्यू तोड-मरोड करा तोई उण मे पदमणी तौ कठैई लादै कोयनी।

जायसी रै पचास बरस पछै अबुल फजल री आईन-अे-अकबरी मे, उनै लगू-ढगू इज फरिस्ता री तवारीख मे अर पछै हाजीउदबीर री जफरुलवाली, मनुक्खो री स्टोरिया डो मोगोर अर जेम्स टाड री अेनल्स अेण्ड अेन्टीक्वीटीज नाव री पोथिया मे पदमणी रा झपका दीसै। अबुल फजल पदमणी भात री अेक गुणवन्ती रौ बखाण करियौ है। फरिस्ता ७०० पालकिया सागै दिल्ली पूग अर रत्नसिंह ने छोडावण री जस रत्नसिंह री बेटी ने दियौ है। दबीर रै बखाण मुजब रत्नसिंह ने अरपडिया पछै अलाउद्दीन उनै चित्तौड रै आगती-पागती कठैई कैद कर राखियौ। जठैऊ ५०० पालकिया मे डावडिया रै भेख मे पदमणी सागै पूगोडा सरदार उण नें लडता-भिडता छोडाय लाया। घुमक्कड मनुक्खी जिका गपिया रौ दादौ गिणीजै, पदमणी ने जयमल री राणी बताई। टाड पदमणी ने हमीर सख री कवरी अर राणा लखमसी रै काकै री बऊ लिखी। कित्ता गप्पडचौथ मे अळूजियोडा हा लाई लिखारा।

सू जोवा तौ हथाया अर वतळ करणिया री टोटौ तौ अठेई को दीसै नी। पण अठे लाई हथाई माथै बाता रा धडिन्दा देवणिया नै कोई को सरावै नी। थेट सू ई हथाया करणआळा निकामा, निठोडा अर ठा नी काई-काई गिणीजता हा अर अजताई वा री वाईज नाक पिचकाय'र सूगावण जोग ठोड इज है। आज ई आप बिना धन्धै-पाणी आळै किणी मिलग मारू उण रै पाडोस मे जाय पूछौ 'फलाणजी अजकालै काई करै अर कठै व्हैला' तौ सौ टक्का थानै पट्-त्तर मिळैला कै फलाणियौ निकामौ की करण जोग होईज कद, उण चौथडी माथै पडयौ जगत रौ मैल धोवतौ व्हैला। यूनानिया री कळाई देसी हथाई-वाजा नै इतियासकारा सराया कीकर नी इणरी तौ ठा कोनी। पण अठै मिनखा सामी हथाईवाजा री कच्ची पैठ री वजै आ व्है सकै कै घणकरा हथाया माथै बूढा-डोकरा जम्या रैवता। मोटियारा नै पेट-पाळण खातर राज री चाकरी, नीजू धन्धा-रोपार अर कै खेत खडण मे आठू पौर अवसणौ पडतौ सो हथाया पाती आयोडी ही कै तौ भोजाहीण निकामा मोटियारा रै अर कै डोकरा रै। कामू मोटियार ई कदैई-कदास वतळ सारू आय जावता व्हैला पण आठू पौर मिनखा रा काचडा करण री वेळा वा नै को ही नी। डोकरा हरदम घर मे लुगाई-टाबरा री छाती माथै खटता कोनी अर फिरण भटकण री सरधा व्हैती नी सौ हथाया माथै अडया रैवता। डोकरा आपरी गुवाडी सारू कित्ताई चाईजता व्हौ, बाजता उतरयोडा ठाव ईज। हथाया माथै ऐ उतरयोडा ठाव इज चुणीजता। हथाया यू तौ भात भात री व्हैती पण घण-करी माथै मिनखा अर राज रा चाकरा री खोटा काढीजती, काचडा व्हैता अर चिन्नीक वात नै लेयर हथाई माथै धडा बधीज जावता अर घटा दातिया व्हैवौ करता। सो ऐ हथाया सिरजण अर सरावण वाळी नी व्हैअर बिगाड अर खोटा काढण वाळी व्हैती। इणा रै काचडा सू लोग ऐडा डरता कै कच्चा-पक्का तौ हथाया सामी निसरताई भिचकता। रौब रुतबौ इया रौ ऐडौ कै मगदूर है न्यात-बास री कोई लुगाई बिना घूघटै अर पगरखिया हाथा मे लिया हथाई सामी सू निकळ जावै। धज्जिया उडा काढता उण री वेसरमाई री अर घटा ताई उण रै पीर-सासरै री सातू पीढिया नै रगडबौ करता। मिनखा री घराघरू बाता नै हथाई ताई ताण लावणी अर पछै मस्करिया करणी। दिनऊगेई हथाई माथै आय धसणौ अर सिंज्या ताई सतरज, चौपड-पासा, चरर्-भरर् रमता थका जरदा बीडी दाब'र पिचरक-पिचरक करबौ करणौ, ठडाया घोटणी, होका खुडकावणा, चिलमा रा भभेटा

,देणा, अम्मल री डोढी मनवारा अर वंई मसकरिया करणी, खोटा काढणी, वाचडा करणा अर आपसरी मे दातिया करता थका उछालवौ करणौ। हथाई-वाजा रा अै रग देख'र कोई लिखारौ इया ने कीकर सरावतौ !

साचाणी हथाईवाजा री आदता भलेई कैडी ई फोरी रैयी व्है इण री अरथ ओ नी व्है कै वे चुत्तर अर समभवाळा कोहूवता नी। इणा री हुसियारगी अर चकोरपणे रो धाक ही अर समभ मे अै डोकरा रोम, यूनान अर जगत रै वीजे किणी खुणे रै हथाईवाजा सू फोरा को हा नी। इण मे तौ किनेई उजर नी व्है सकै वै अठै रा हथाईवाज खोटा काढण अर दातिया करण मे माथौ घणौ खपावता। पण वै कदेई किणनेई सरावता ई कोनी अर उणा मे चोखाई अर मिनखपणे जैडी अेक वात ई को ही नी, इण मे सार कोनी। कैई कैई हथाईवाजा री अेडी पैठ ही कै चौखळै रा मिनख उणा कन्नै सलाह सारू आवता। हरमेस ई हथाया माथै अेक घडौ मुद्दै नै सरावतौ अर चोखाया वखाणतौ तौ वीजोडे घडै रा हथाईवाज उणनै सूगावता थका खोटा चावी करता। आ वैस कदेइक तौ अेडी खारी व्हैतो कै वजियै ताई री नौवत आय पूगती। सो इणा हथाया मे यूनानिया सू ई घणी बैमा हूवती। मिनखा नै इण वात री मोद हूवतौ कै वा हथाई माथै घणा भाटा भागिया है। हथाईबाजा री सूभ अर सोजी री कित्तोऽ वाता चावी है। जोधपुर मे नाया रै वड रै पागती नवचौकिया रै हथाईबाजा री अेक वात घणी चावी है जिका अजुताई डोकरा-डोकरिया टावरा नै सुणावै। घणे पैला जोधपुर दरबार रै अेक चाकर आ वात पूगती करी कै इणा हथाई वाळा नै कोई भेदियौ राज री करणी री राई राई री खवर पोचावै ! हथाई वाळा इणा खवरा नै तोड-मरोड करै अर मसकरिया उडावै। हथाई माथै वात पूगणी डण्डोळौ पीटावण रै जेडी व्है सो अै वाता सगळै सैर मे फैनै अर दरवार रो कूजस व्है। दरवार उण नै यू हिदायत कर हथाई वाळा रै विच्चै मेलियौ कै आज म्हारौ हलकारौ हथाई सामा व्हैय र निवळै जद हथाई वाळा काई नतीजौ काढै इण रा बावड लेय'र आव। इण चाकर रै हथाई माथै जाय भिळण रै थोडी ताळ पछै हलकारौ जद घोडौ खिड-विडावतौ उठी सू निसरियौ तौ हथाई माथलौ अेक डोकरौ आपरै पागती आळै नै खुणी धमकाई, उण तोजोडै सामी आख्या टमरकाई। सगळा हथाई माथै वैठा डोकरा टकटकी लगाय हलकारै सामा जोवण लागा अर अेक डोकरौ धाकल करी कै, 'टट्टूडियं नै अणूतौ क्यू हम्फावै, आज तौ कागद कोरौ इज है।'

।

इत्तौ सुणणौ हुयौ अर कै सगळा डोकरा 'कागद कोरौ है' 'कागद कोरौ है' यू हाका करण लागा। दरबार रै पिट्ठू जाय कागद कोरै री खबर पूगती करी। सुणताई दरबार रौ माथौ भरणाय गियौ क्यू कै हथाई वाळा री थाग लेवण खातर हल्कारै नै आज जिकौ रक्कौ थमायौ साचाणी उण मे लिख्यौ की को हो नी। पण इण बात री खबर किन्नेई नी ही सो दरबार री समझ थाकण लागी। घडी-घडी विचारण लागा कै कोरै कागद री ठा वा नै कीकर पडी। घणौ माथौ खपाया ई जद पल्लै की नी पडयौ जद सेवट डोकरा नै लावण खातर रसालेवाळा नै मेलिया। डोकरा नै टोळ'र जद लाया उण घडी दरबार थेट किल्लै माथै हा सो हुकम मुजब इयानै ई ऊपर पुगाया। इणा नै देखता ई दरबार कडक्या कै, "बतावौ थानै आ ठा कीकर पडी कै कागद कोरौ है ? नीतर अेकूकै नै घाणी मे पिलवा दू ला।" डोकरा थोडी ताळ तौ हडबडी-ज्योडा ऊभा रैया अर पछै घणौ दोरौ दरबार नै भरोसौ दिरायौ कै उणा तौ हल्कारै री मरोड नै देख'र ईज तुक्कौ लगायौ हो! हल्कारौ हथाई सामी सू निसरता हरमेस रामासामा करै अर घणै महताऊ काम जावतौ व्है तौ बिना रुक्याई हाथा सू झाला करतौ मुळकतौ निसर जावै। पण आज तौ वो करडौ धज अक्कडयोडौ हथाई सामा बिना फुरक्या बिना देख्याई निकळतौ हो। सो म्हे तौ उणरी नुवी मरोड नै देख'र फबती कसी ही। *अेक डोकर जिकौ हालताई लारै भेळौ हूयोडौ ऊभौ हो आगै आय* बोल्यौ कै म्हे आई बताय सकू कै हमार म्हानै किल्लै माथै लाया हा जद श्रीहजूर जनानी ड्योढी रै सोच मे डूबोडा हा। बेगै सू बेगौ किणी हल्कारै ने जाळोर मेलण री फिराक मे हा। परायै सू लथपथ कायमी आयोडै दरबार रै मुण्डौ खोलण सू पैला हथाई वाळा बा-सा बोलिया कै म्हानै ऊपर लाया जद तावडै रै पीर, भाटा सू निकळती बाफ रौ धिना विचारिया दरबार टकटकी बाध्या जाळोर री दिस सामा जोवता हा। म्हनै इण रौ पैलाई भान है कै दरबार रौ सासरौ जाळोर है अर राणीसा पीर पधार्‌योडा है। राणीजी सू दरबार रौ घणौ हेत जगत चावौ हैईज। सो म्हे कैऊ जिण बात मे राई भर ई कसर व्है तौ म्हें घाटकी वढावण अर किल्लै माथै सू इज गिडा मे थरकीजण नै त्यार हू। दरबार नै अगेजणी पडी कै बात यू इज ही।

अेडा चतुर चकोर ने हुसियार हा अठा रा हथाईबाज। उडता कागद बाच लेता, मिनख रौ मूण्डौ देख अर बात बताय देता। बाता री टीका-टीप कर थेट तूण्डै ताई पूग साच काढ लेता।

हथाया य् तौ मिन्दरा री वसाळिया मे, वडला अर वीजै मोटे रूखा री छीया मे, बगेचिया मे, घरा आगली चौथडियो मार्थं, आर्णं-टार्णं न्यात री जाजम मार्थं, अम्मलदारा रैं घरा मे, वजारा री चौथडिया मार्थं अर हर कठैई हू सक्ती ही। पण घरा आगली चौथडिया घणकरी हथाया सारू इज विणीजती व्हैला। घरा आगै चौथडिया थेट सू ई चुणीजती आई है। आज तौ कैंठी ऊग घडी मे रातोरात राज री जम्मी दावण खातर चुणीजती व्हैला। पण घणा पैंला जद अेकै ठोड मिनख इण्या-गिण्या इज हूवता अर जम्मी अणमावती पडी ही, जचती जित्तीई दावण खातर किणनै ई पूछणो को पडतौ नी। जद इया चौथडिया रौ काई कारज रैयौ व्हैला। पवकायत सू ठा है कै अै किणी गोरखै सारू को विणीजती नी। घर मे जिको बूढौ-डोकरो हूवतौ उण कामकाज मोटियारपै री वेळा घणाई कर्‌या। हूमैं सरधा को ही नी। घर मे टावर, बीनणिया अर बीजा नै बा-सा सू सको राखणो पडतौ, सो आठ् ई पोर बा सा घर मे ई को खटता नी, अठी-उठी फिरण-भटकण री गाढ हूवती कोनी। सो अै डोकरा-वा घर आगली चौथडी मार्थं धरीज जावता। इणा रैं मोटियारपै री करणी अर उण वेळा री आछी अचूकरी वाता सुणण खातर टावर-टूवर इया रैं ओळा दोळा भवता रैंता। जिका थोडकीक जोग गुवाडी रा हा उणा री चौथडिया मार्थं आगती-पागती रा डोकरा ई आय पूगता अर सिंज्या ताई डोडा हाकारा दे देय हथाया व्हैवौ करती। इणा हथाया मे मोटियारा रैं कामा रौ वखाण, राजकाज री वाता, मेहपाणी, सगाई-सगपण अर थेट पोर, परार, तैपरार अर धणी लारैं वीतियोडी सू लै'र आगै ताई री वाता आय जावती। कैई हथाया तौ चौथाळै चावी ही। मूळियै री चौकी, भजन चौकी, भीमजी री हथाई अर अैडी घणीई चौथडिया रैं नावा सू आज वास रा वास ओळखीजै।

हथाया कोरी चौथडिया ताई बधियोडी नी ही। भात-भात री हथाया मे अमलदारा री हथाया निरवाळीज हो। डोडी मनवारा रैं सागैई राज-दरबार ठाकर-ठूमर स ले'र ढोली, भाभी, सरगरै साटियै ताई रैं कामा रौ वखाण नी व्हैलौ जठै ताई तौ अम्मल ईं को उगतौ नी। अम्मल ऊगिया पूठै अै अैडी-अैडी भेद री वाता करता कै सुणता काना रा कीडा भडण लागता।

यू तौ सगळी हथाया रा विसय लग्गू-ढग्गू इज हा पण सैरा री हथाया मार्थं घणकरा रिटायर हूवोडा राज रा चाकर व्हैता। सो राज अर ओदैदारा रैं कामा री चोखाया-भूण्डाया अर प्रसासन सू जुडयोडै कामा रा लेखा-जोखा

हूवता हा। गावडा री हथाया माथै मेह-बिरखा अर धान-चून री बाता करता थका मिनख डोरिया वटण सारू ढेरिया फेरवौ करता अर कै पछै पट्टूडा बिणीजता।

उण वेळा वात री चौखाई-भूण्डाई रौ डण्डोरौ पीट'र जनमत त्यार करण रौ लूठौ साधन हथाया इज ही। अठा रौ समाज यू तौ जात-पात अर ऊच-नीच रै भाव सू किडियोडौ हो पण हथाया माथै इया वाता नै तुस्यै बरावर ई को गिणता नी। उठै तौ जिका जगत रा रग सावळदेख्योडौ, चकोर अर बोलाक हूवतौ वोइज मच सकतौ।

सो अेकै पाडै तौ यूनानी हथाया रै पाण सरीहीजै अर म्हे उणीज कारज सू भूण्डीजा, आ तौ घणाघणी है।

राजस्थान रै इतिहास माथै भूगोल रौ असर

पाली मारवाड मे 'सातवें राजस्थान इतिहास सम्मेलन री वेळा भावै भारत रा इतिहास लिखारा भेळा हुवा जद उवा सामी भो लेख धरियौ हो। इण लेख सू इज "राजस्थान इतिहास सम्मेलन' मे राजस्थानी मे लिखियोड़ै सोध लेख नै अगेजण री पलडी भोळी मडी भर नुवीं रीत पडी। इण सू पंला कोरा अग्रेजो हिन्दी मे लिखियोडा लेख इज सम्मेलन सामा धरीज सकता हा। भारत रै इतिहास माथै भूगोल रो भसर बतावता थका इतिहास लिखारा राजस्थान नै धोराऊ मगरा रै भेळो माडै ठूस दै। इण सू राजस्थान रै मानखै री दोरायां भर भबखाया तो कठैई जावै भर भो मरु खतर सोनै रूपै री चिड़ी बाजणियै मगरा मे कंठी कठैगम जावै। इण लेख मे भा बात थावी करण रा जतन करिया है कै भठा रा रीत पात भर इतिहास धोराऊ मगरा सू साव न्यारा है। दोना मे कीं तल्लो बल्लो ई कोयनी। भजुताई इतिहास लिखारा भूगोल रै पाण भारत री चार पांतिया करता भाया है। पण धकै सू पाच पांतियां गिणाईजणी जोईजै भर भा नुवीं पांचवी पांती राजस्थान विणै।

भूगोल भर तवारीख रौ घणौ नेडो नातौ है भर दोनुई भेक बीजै सू काठा जुडयोडा है। इण बात नै रिचर्ड हैक्ल्यूट,[1] हेनरी बक्कल,[2] ई० ई० केलेट,[3] भे०

---

१ रिचड हेक्ल्यूट, भूगोल इतिहास री आत्मा है।

२ बक्कल, हेनरी, स्टोरी आफ सिवीलाइजेसन।

३ केलेट, ई० ई०, आस्पक्टस आफ हिस्ट्री।

अेफ० पोलार्ड,' रिचर्ड हैक्स्टर,' वी०अे०स्मिथ' अर हेरोडोटस' सरीखा धुरन्दरा अगीकारी है। सायद इण सारू इणा सगळा इतिहास अनै भूगोल मे काठौ नातौ मानियौ कै तवारीख मे मिनखा री करणी रौ लेखौ-जोखौ व्है अर मिनखा री करणी माथै आव-हवा, सियाळौ अर उन्नाळौ घणौ असर नाखै। जळवायु रोजीनाई मानखै रै जीवन-दर्सन अर जीवन-पद्धति रै मूळ मे रेवै है अर ऊणा री आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सास्कृतिक अर वैचारिक परम्परावा ने अेक खास तरै सू ढाळण मे घणौ हाथ राखै। टड़ा रा अेस्कीमोज, समन्दर मू घिरयोडा डेन्स, पुराणी नदिया आळी च्यारूई सभ्यतावा, हिमाळै रा सेरपावा, थळी रै वासिया वीजा रै रोजमर्रा री जीवण उठै री जळवायु री देण नी है तौ पछै काई है ? दुनिया मे पनपी अर मुरझाई सगळी सभ्यतावा रै बिच्चै जे की खास फरक है तौ उण री असल वजै जळवायु इज है। इतिहास अर भूगोल रै इण लूठै नातै ने देख'र जै इतिहास ने आधौ आध भूगोल केदा तौ की धणापौ को व्हेलानी। आज रै ससार ने जे गौर सू देखा तौ इण विग्यान रै जुग मेई घणी घणी अेडी सभ्यतावा दीखेला जिकी भूगोल री वजै सू आधी-सभ्य बाजै। आपारै अठै भारत मेई अेडी ठोडा है जठै मानखै माथै भूगोल रौ सावसीधौ असर दीखै। निकोबार द्वीप अर आसाम रै मिनखा री करणी घणोकर भूगोल सू ढकियोडी इज लखावै। च्यार-पाच सौ वरा रै राजस्थान रै इतिहास माथै निजर नाख्या आ ठा पडै कै ओ भारत रै इतिहास रौ अग हूता थका आपोआप मे अेक निरवाळी सास्कृतिक चोखाई राखै अर इण री अेक न्यारी अर सुततर ठोड है।

भारत रै इतिहास माथै भूगोल रौ असर विद्वाना मेनत अर गहराई सू घणी वेळा वतायौ है। ओ असर बतावता थका सगळा मानीता विद्वान भारत ने इणा च्यार टुकडा मे बाटै—धोरऊ (उत्तरी) भाखर आळौ खेतर, धोराऊ मगरा, विध्यावटी अर लकाऊ भारत। घणै विस्तार सू नख चख समैत इणा च्यारू हिस्सा रै भूगोल रौ उठै री तवारीख माथै असर वतावण वाळा री कसर कोनी। इण रौ सामौ अरथ ओ हुयौ कै राजस्थान री थळी

---

१ पोलार्ड अे० अेफ०, फेक्टर्स इन माडर्न हिस्टी।
२ हैक्स्टर रिचर्ड रिअप्रेजल इन हिस्ट्री।
३ स्मिथ, वी० अे०, आक्सफोर्ड हिस्टी आफ इण्डिया।
४ हरोडाटस, द हिस्ट्रीज।

धोराऊ भाखरा अर विंध्यावटी रै विचल्लै धोराऊ मगरा (तालरा) मे भेळी ठूमियोडी है। जे आपा इणा धोराऊ तालरा रै भूगोल रौ उठै री तवारीख माथै असर देखा तौ ठा पडै कै ओ खेतर घणो उपजाऊ है, अर पेला री सोनै-रूपै री चिडी ओ इज है जिणने दावण खातर घणा वारला ललचाय अठै आ खपिया। तालरा पुराणिया महाजनपद पनपिया, कळासाहित अठैई निखरियौ अर घणकरी नदिया इण खेतर मे इज बेवण सू आव-जाव सोरौ रेयौ। हूमैं जे मगरा मे भूगोल री वजै सू हूयोडी ऊपरली वाता राजस्थान मे जोवण बैठा तौ इणा मायली अेक ई बात अठै को मिळै नी। नी तौ अठै उपजाऊ जमी है नी नदिया-नाळा, कळा-साहित अर नी महाजनपद। सोनै री चिडी इण रौ नाव कदेई को वाजतोनी, हा, मौत री वाडी अर मौत रै खेतर जेडै नावा सू मिनख इण ने जरूर ओळखता हा। अठै कैई-कैई कोसा ताई पसरियोडौ मरू खेतर हो जिणनै डाकणी काळी भीत गिणीजती। इण मरूखेतर मे मिनख काई घोडा ताई गरक व्हे जावता।[1]

राजस्थान ने जे न्यारौ भौगोलिक खण्ड मान'र अठै रै इतिहास माथै निजर नाखा तौ ठा पडै कै इण खेतर माथै भूगोल रौ जित्तौ असर है उत्तौ भळै विणी बीजै खण्ड रौ उठै री तवारीख माथै असर को व्हैलानी।[2] इण असर ने बतावण सारू घणी पडताई छाटण री जरूत को पडैनी, ओ साव सोरौ हर किणी ओमजी-भोमजी ने ई दीस सकै। राजस्थान ३४२,२७४ वर्ग किलोमीटर ताई फैलियोडौ है।[3] जिणमे तीन किरोड नेडै मानखै रौ वासौ है।[4] इण रै आथूणै सिन्ध, धोराऊ-आथूणै, धोराऊ अर धोराऊ अगूणै पजाब, ऊगूणै यू० पी० अर ग्वालियर ने लकाऊ सामा गुजरात आयोडा है।[5] भूगोल

---

१ मुणोत नैणसी री ख्यात।

२ Sharma, G N, Social Life in medieval Rajasthan, p 33
"History provides no clearar example of the profound influence *of geography upon a culture than in the historical* development of Rajasthan"

३ (अ) धरमपाल, इण्डिया लैंड अॅड पीपल, राजस्थान, पृ० १
(आ) राजस्थान रौ क्षेत्रफल सगळै भारत रै क्षेत्रफल रौ ११ ० फीसदी है।

४ (अ) १९६१ री सरकारी मर्दमसुमारी मुजब आ तादाद २०,१५५,६०२ ही।
(आ) राजरी जनसख्या सगळै भारत री ४ ६ फी सदी है।

५ इम्पीरियल गजेटियर राजपूताना प्रोविन्स सिरीज, पृ० १

रै जाणकारा राजस्थान ने ई आपरी जाणकारी रै पाण न्यारी पातिया मे बाटियो है ।[1] राजस्थान २३ ३° सू ३० १२° धोराऊ अक्सास अर ६९ ३०° सू ७८ १७° ऊगूणी देसान्तर रै बिच्चै पसरियोडो है ।[2] राजस्थान मे तीन रितवा व्है । उन्नाळो घणकरो मार्च सू जन रै मईनो रै बिचै गिणीजै । परठेट जनवरी रै लारलै पाडै सू ले'र अगस्त ताई भुळसण वाळी लू, धूड री काळी-पीळी आधिया, लूठा बुतोळिया जिका धरावा स ले'र टिंगर-टागर ताई ने लपेट ले जावै अर तडतडतो तावडो वण्यो रेवै । बराळो यू तो आधै जून सू ले'र सितम्बर रै बिच्चै ताई मानीजै पण मेह आवै नी आवै किन्नेई ठा नी । खास कर थळी रा तो केई-केई बर लेणो लेण बिना छाट निसर जावै । सियाळो अक्टूबर सू फरवरी ताई, ठारी रैत सू कर'र अणती पडै अनै बिना ताप अर पट्टूड रै मिनख ठर'र ठाकर व्है जावै ।

भूगोल रै मुजब राजस्थान मोटै रूप सू दो हिस्सा मे पातीज सकै । अेक ऊगूणा भाखर अर दूजो आथूणियो मरूखेतर । ऊगूणै हिस्सै मे अडावळ भाखर री लडिया है जिको ठट दिल्ली सू गूजरात ताई आयोडी है ।[3] भाखरिया री लकाऊ-आथूणो खुणो माउण्ट आबू अर धोराऊ-ऊगूणो भूनभनू जिलै रै खेतडी ताई पोचियोडो है । सगळा सू अबखी भाखरिया आबू सू अजमेर ताई है । अडावळ सू न्यारा भाखर ई निरा है । आमेर अनै अलवर भाखरा सू घिरयोडाई है अर भरतपुर रै आडै पाडै घणाई भाखर है । करौली अर मुकन्दवाडा रा भाखर ई घणा चावा जाणीजै । इण भाखरा वाळै ऊगूणै राजस्थान मे आबू, उदैपुर, बासवाडा, डूगरपुर, परतापगढ, अजमेर, कोटा, बून्दी, अलवर

---

१ (अ) अमल कुमार सन, 'ज्योग्राफिकल रीजन्स ऑफ राजस्थान' ट्राजेक्शन ऑफ द इण्डिया कौंसिल ऑफ ज्योग्राफर्स स्पेशल आई० जी० यू०, वोल्यूम, पृ० ९९-१०४

(आ) धरमपाल, इण्डिया लैड अैड द पीपल राजस्थान पृ० १७

(इ) वी० सी० मिश्रा, 'ज्योग्राफिकल रीजन्स ऑफ राजस्थान', द इण्डियन जनरल ऑफ ज्योग्राफी, वोल्यूम १, न० १, १९६६, पृ० ३५-४८

२ (अ) इम्पीरियल गजेटियर, राज० प्रा० सी० पृ० १

(ब) इणीज दशान्तरा बिच्चै जिका बीजा मुलक बस्योडा है उणा म धोराऊ अरब, घणकरो मिश्र, लाईबरिया अर अफ्रीका रा की भाग है ।

३ धरमपाल, इण्डिया लैड अैड द पीपल राजस्थान, पृ० १

ग्रर जैंपुर है। घणकरो राजस्थान रेगिस्तानी है जिणमे जोधपुर, वाडमेर, जैंसलमेर, वीकानेर ग्रर गगानगर वीजा भेळा है।[१]

राजस्थान मे पाणी री कमी ग्रर घणी-घणी भौ विखर्‌योडी धूड री वजै सू ग्रठै री जमी सगळै भारत री ११ २ फीमदी है पण मिनख नानी-नानी ढाणिया ग्रर गावडा मे फट्‌योडा है ग्रर उणा री तादाद देस री ग्रावादी री सिरफ ४ ६ फीसदी इज है।[२] देस रै पसुधन रो १० फीसदी ग्रठै इज है पण इणा मे घणकरा गाडर, लरडिया ग्रर ऊट है। देस रै कुल वकरा-बकरिया रा १३ २ फीसदी, भेड १८ २ फीसदी ग्रर ऊटा री तो वात ई छोडो सगळै भारत रा ग्राधा स वत्ता ऊट ग्रठै है।

राजस्थान री ग्राव-हवा रो इतिहास माथै घणै खुलासै सू ग्रसर वताणो तो ग्रठै वाजव कोनी। थोडै मे जिकी वाता कै सका उणा मे पैला ऊगूणी भाग्वरिया वाळै खेतर माथै जळवायु रो ग्रसर देखा—

(१) ग्रे ऊगूणा भाग्वर ग्रडावळ रा हिस्सा ई है। इण खेतर मे चम्वळ,[३] वनास,[४] वेतवा ग्रर माही वीजी नदिया रै पाण जमी उपजाऊ है। सिंचाई भी व्हे सकै इण सारू ग्राथूणै थळी विच्चै ग्रो गजस्थान थोडो खावतो-पीवतो है। भाग्वरिया रै आडै-पाडै रै रिन्द-रोई स जडी वूटिया वीजी निपजै जिकी उठै री ग्रावादी रो पेट पाळै। ग्रै नदिया कंई वेळा हमळा करणिया नै मारग सूजावण रो काम काडियो। कंई वेळा ग्रै नदिया वचाव रो ग्राछो साधन वणी। रजवाडा रा काकड नदिया सू न्यारा फटता। चम्वल, जैंपुर ग्रर कोटा, करौली ग्रर ग्वालियर रो काकड रैई। माही वासवाडा ग्रर डूगरपुर, खारी उदैपुर ग्रर ग्रजमेर ने न्यारा फाट वेवती।[५]

(२) भीला ग्रर तळाव घणकरा ग्रठै इज है। प्रकृति री चोखी जागा री ग्रठी कमी को नी। उदयसागर, पिछोला, लक्की ग्रर जयसमन्दर जैडी भीला ग्रनै ग्रन्नासार, राजसमन्द जेडा तळाव इण हिस्सै माय ई है जिणा रो फूटरापो

---

१ राजस्थान रै सगळै क्षेत्रफल रो घणो नी तोई ६३ फीसदी हिस्सो धूड वाळो है।

२ वी० सी० मिश्रा, राजस्थान रा भूगोल, पृ० ६

३ वावरनामा, २०७, ग्रे०ग्रेफ० वेवरिज, २, पृ० ४८५

४ (ग्र) मुणोत नैणसी री स्यात, टी० १३ ग्रर ३४

(व) फरिस्ता, पृ० ४१६

५ सरमा, जी० ग्रेन०, सोसिल लाइफ इन मेडिवल राज०, पृ० १५

अळगै-अळगै मुलका रै मिनखा ने आप सामी खाचै ।[1]

(३) मध्यकाल मे अवरा अर लूठा दुरग किणी दरबार रै जोर अर मान री वजै मानीजता । ऊगुणियै राजस्थान री भाखरिया मे चित्तौड, कुम्भलगढ, रणथम्बोर, आमेर अर तारागढ जेडा सेन्ठा दुरग हा जिका ठीक सिवाजी रै पन्हाला, परतापगढ अर पुरन्दर दाई झगडा री वेळा घणा कारज साजिया ।

(४) भाखरिया अर घाटा रै पाण ठीक महारास्ट्र दाई गुरिल्ला जुद्ध करीजिया । इणा दावपेचा सू ई कोटा, बून्दी अर चित्तौड रा राव-राणा थोडीक फोजा ले, मोटी-मोटी मालवा, गुजरात अर मुगली फौजा सू लोहो ले सकिया । कुम्भा, प्रताप अर राजसिह री भिडमलाई रै सागै अठै रो भूगोल इणा री घणी मदद करी ।

(५) अे भाखरिया राजस्थान रै वीजै रजवाडा रो भी आडै-वकत मे कारज साधियौ । अजीतसिह, रामसिह, चन्द्रसेन अर दुरगादास ताई रै वोखैरी वेळा री ढाल अे भाखरिया ई वणी ।

(६) इणा भाखरिया मे आधी सभ्य जातिया भील,[2] मीणा, ग्रासिया, सावरी अर गाडोळिया लवार वीजा अठै री अवखाई री वजै सूई आज ताई आप री रीत-पात है ज्यू रुखाळ सकिया । इणा री सभ्यता आपरी सगळी नोखी-भुण्डी वाता रै सागै अजैताई जीवनी है ।

(७) जिण तरै सिवाजी रा मावला फौजी हा उणी तरै राणावा ने भील अर मीणा घणी मदद करी । कुम्भा, प्रताप अर राजसिह री साथ भीला घणी मरदानगी सू दीयौ ।[3]

(८) ज्यू दिल्ली, मालवा अर गुजरात री मोटी फौजा रो आव-जाव भाखरा मे दोरो हो जिण सू राणा री छोटी-मोटी फुडतीली फौजा आसानी सू

(अ) अचलेस्वर लेख अर अेकलिंग लेख ।
(ब) इम्पीरियल गजेटियर (१६०८) ४, पृ० ४०७-८

(अ) व्हेई, पृ० ६
(ब) दी इम्पीरियल गजेटियर, राज० प्रॉ० सी०, ८६-८६

(अ) सरमा, जी० अेन०, सो० ला० इन मे० राज०, पृ० ७
(ब) फरिस्ता, ब्रिग्स, ४, ४२
(स) संगीतराज, पाठ्य रत्नकोस ।

उणा री सामनो करती कै बच निकळती उणी तरै धाडायती ग्रर विद्राही सिरदार, राणावा री मोटी फौजा रै मुकाबले लडता-भिडता ग्राप रा दिन काड सकता हा।

(६) ग्रे भाखरिया घणी ग्रबखी ही सो मुलक रै उणै खुणै सू धरम ने समभणिया बैरिया सू धरम ने बचावण खातर ग्रठै ग्रा पौचिया ग्रर ऊची टेकरिया माथै मोटा मोटा मिन्दर चुणीज्या, परसराम महादेव, नाथद्वारा, ग्रेकलिगजी जेडा नामी मिन्दर इणा भाखरिया मे ई वणियोडा है। मानीजै कै सगळे मुलक रा जैनी मध्यकाल मे ग्राप रै धरम ने बचावण सारू ग्रठी ग्राय पूगा ग्रर देलवाडा ग्राबू, रिसभदेव रणकपुर, केसरियाजी ग्रर महावीर जैन मिन्दर (उदैपुर) जैडा फूटरा मिन्दर चुणीज्या।

(१०) ग्रे भाखरिया राजस्थान रै काकड माथै ग्रायोडी हूवण सू ग्रठै रा रीत पान, उत्तर प्रदेस, मध्य प्रदेस ग्रर गुजरात सू न्यारा रै सक्या। राजस्थान री सम्क्रति रो खास चोखाया ने वणायोडी राखण मे ग्रे भाखर घणा ग्राडा ग्राया।

राजरास्थान री ६३ फीसदी जम्मी रेतीली है।[1] रामायण री साख रै पाण मानीजै कै इणी थळी री ठोड पैला द्रमकुल्य नाव रौ समन्दर हो।[2] समन्दर सास्त्र रा जाणकार भी ग्रा मानै कै इणा धोरा मे ग्राज ताई सीप सख मिळै सो पक्कायत सू, पैला ग्रठै पाणी व्हैला।[3] सगळै रेतीलै खेतर मे ऊचा-ऊचा रेत रा धोरा बिखरियोडा है जिका वायरै रै झोकै ग्रापरी जागा वदळ'र मारग वेवता ने धोखो देवै। इण रेगिस्तान मे पाणी री घणी कमी रेवै। कठैक जै वेरा है तो वे दस-दस वीसी सू पन्दरै-पन्दरै वीसी हाथ ताई उण्डा है ग्रर इणां मे पाणी वेगोई निसर जावै। बाडमेर ग्रर जैसलमेर रै धोरा मे रैवणिया मिनखा रो नित रो काज ग्राठ-ग्राठ दस-दस कोस सू ऊठा माथै पखाला न्हाद पाणी लावणो है।[4] इण रेगिस्तान ग्रर पाणी री कसर रो ग्रसर ग्रठै रै मिनखा, जीव-जिनावरा ग्रर रखडा माथै ताई साव सोरो दीसै। इण खेतर मे जीवणों

---

१ मिश्रा, वी० सी०, राजस्थान का भूगोल, पृ० २३

२ वाल्मीकि रामायण, युद्ध काड, सर्ग २२

३ 'वो पाणी मुल्तान गयो' कावत भी इण बात री साख भरै कै ग्रठै कदेई हिलोळा लेवतो समन्दर हो।

४. धरमपाल, इण्डिया लैड ग्रैड पीपल राजस्थान, पृ० ४

दोरी, मेनत घणी, मिनख रात-दिन अबखती रेवै, भूझती रेवै, जद जीवै सोरापौ नाव री की चीज नैडीई कोयनी।

मरूखेतर मे मिनखा रा घणा जमघट कठैईक दीसै घणकरा वे नाना-नाना गावडा अर ढाणिया मे छीण-छीण विखर्योडा है। अठै वर्ग किलोमीटर दीठ ५६ मिनख रेवै जिकौ भारत भर मे कस्मीर रै पच्छै सगळा सू कम आवादी रौ रैवास है। आज भी देस मे जमी रै हेसाब सू सगळा सू मोटौ ससद रौ निर्वाचन क्षेत्र, इण मरूखेतर रौ जैसलमेर-वाडमेर ई है। इण रैवास रै भीणापै री वजै आव-हवा इज है। मरूखेतर मे रेवणौ अर इणनै पार करणौ कित्तौ दोरौ हो इण रौ वखाण मुगल वादसाह हुमायू रै अठै सू निसरण रै वखाण रै सागै मध्यकाल रा इतिहासकारा घणौ ग्यारो करियौ है।[1] पाणी री कमी, वळती लू, वूतोळिया अर कळोजण जोग धूड सू मोटा लस्कर तौ इण खेतर मे फुरक ई को सकता हानी। ममद विन कासम ७११ ई० मे ठेट अरव सू सिन्ध ताई आय धमकियौ पण मरूखेतर मे वडण री हिम्मत को कर सक्योनी। पाणीपत ने जुद्ध रौ मैदान वणावण रौ जिम्मौ ई मरूखेतर रौ ई है। खैवर, भोमा, कुर्रम अर वोलन वीजै दर्रा सू माय वडण आळा हमलावर नी तो कस्मीर री वर्फीली भाखरिया कानी सू आगै वढ सकता अर नी मरू-खेतर सू, जद वापडा, हडवडाय इण विचललै मारग, पाणीपत ने पकडता। राजस्थान री आ आथूणी पाती अठा रा भिडमला रै गाड रै सागै ई भूगोल री वजै सू हमलावरा सू कोरी रैय सकी।[2] दिल्ली रा सुल्ताण, मुगल अर अगरेज पेला भारत रा बीजा मुलक जीत्या पछै घणा मोडा अठी मूण्डौ करियौ। भूगोल रै पाण ई अठै मोटा साम्राज्य नी पनप'र नाना रजवाडा अर गणतंतर वसिया। यौद्धेय अर जोहिया रा राज अठै ई हा। सिकन्दर रै हमलै री वेळा सू भिडमला रै वेखटकै वसण जोग राजस्थान ई रैयौ।

घणै वरसा हमला सू कोरा रेवण अर अवखै जीवण सू अठै मिनखा मे सुततरता रा भाव, मान अर अहम घणौ हुयौ। जै कदेई हमलौ हूवतौ तौ दोरौ घणौ लखावतौ अर अठै रा मिनख विवणै ग्यार सू भिडता। भूगोल रै पाण ई

---

१ (अ) गुलबदन, हुमायूनामा, पृ० १५१-५५

(ब) अकवरनामा १, पृ० १८२

(स) फरिस्ता, पृ० २१०

२ फरिस्ता, पृ० २२८

अठै सुततरता अर मान सारू बलिदान अर त्याग रा भाव बीजै मुलका सू घणा हा। अे सूरमा मान अर सुततरता खातर वैरया सू भिड पडता। साका अर जोहर घणै चाव सू हूवता। सेरसाह मुट्ठीक बाजरी सारू, दिल्ली गमाय बैठतो।[1] सिरदार अर जमीदार अठै घणा गाडवाळा अर सुतंतर हा, अर राजावा ने उणा ने ढावण मे घणा जतन करणा पडता।[2] सामन्त-जमीदार जित्ता सेठा मारवाड मे हा दूजी ठोडा को व्हैला नी।[3] राज घणी-घणी भौ ताई बिखरियोडा हूता थका राज रा चाकर इणिया गिणिया ई व्हैता अर की आछो राज रौ ढाचौ को जम सकियोनी। थोडै मे आ केय सका कै अठै रै मानखै मे बादरी, त्याग, बलिदान, स्वाभीमान अर सुततरता जेडा गुण, भूगोल इज पनपाया।[4] अठै री राजनीत रै मूळ मे सगळा सू लूठी की बात ही, तौ वा ही जळवायु।

राजस्थान री इण आथूणी पात रै समाज माथै सावळ निजर नाख्या इण माथै ई भूगोल री भार घणी दीसै। बीजा सू साव आगा अेकला रैता-रैता अठै रौ समाज निरालौ ई बण गियौ। अेकण कानी इणमे घणौ अेकठपणौ अर अपणायत दीखै तौ बीजै कानी आ भीर-भीर बिखरियोडौ, ऊच नीच, जात-पात अर ठाकर-चाकर सू किडयोडौ लखावै। न्याता अर जाता रौ जोर अठै ठेट सू ई घणौ रैयौ। बीजा बारला ने समाज मे की ठोड को ही नी। जाता मे भळै जाता अर खापा अर कुळ, रोजीना ई कळयै रा मूल बणयोडा रैया। न्याता अर पन्चा रौ औ जाव इस सारू ई हो कै मिनख बीजै मसार सू कट्योडा हा अर न्यात-जात सू अळगा होय जीव ई को सकता नी। ऊच-नीच री घणौ बखाण नी कर अेक उदाहरण देणौ चाऊ।

---

१ अब्बास सरवानी, तारीख अे सेरसाही, ४, ४०६

२ (अ) टाड, अेनल्स अॅड अेन्टीक्वीटीज ऑफ राज०, १, पृ० ५६०

(ब) स्यामलदास, वीर विनोद, पृ० ८०६

(स) तवारीख जोधपुर, बन्डल ४०, ग्रन्थ ७, (पूरा लखागार, बीकानेर)

(द) तबकात अे-नासीरी, पृ० ४६५

(ध) सरमा, जी० अेन०, सोसियल लाइफ इन मेडिवल राज०, पृ० ५१२

३ मारवाड मे आ कावत चाली ही 'रिडमला थाप्या निवै राजा' जिण रौ अरथ है जिन्नै सिरदार गादी माथै थाप देता व्होई राजा बणतौ।

४ राजरूपक, सर्ग १६, श्लोक ३३-३६

राजावा रै गोला हूवता, ठाकरा रै न्यारा, मामूली रजपूता अर ओसवाळा रै न्यारा अनै मजै री बात आ है कै अे ऊच-नीच रै भावा सू अेडा भरयोडा हा कै इया मे आपस मे सगपण ताई नी व्है सक्ता। घमड इत्तो कै चोखी गवाडी रा जमाई बीजा नी वर्ण सो छोरी जलम जावै तो मार नाखै अो ओखाणों चावो हो—

पेण्डो भलो नी कोस रो, बेटी भली नी अेक।
देणो भलो नी वाप रो साहिब राखै टेक॥

अठा रा मुसलमाना ताई मे जात-पात घर करयोडी ही—मोची, महावत, छीपा, धोबी, जुलाहा, कायमखानी, सिन्धी, सलावट लखारा, रगरेज, पीजारा वगैरा मे अेक्दूजी जात मे सगपण नी व्है सकता।[1] पण राजस्थान रै समाज रै इण घणापै रै माय अेक्ठपणो भी घणो हो ज्यू सगळी जातिया मे अेक ई नाव री खापा व्है। ठेट राजघराणै सू लेअर वाणिया, कसाई छीपा, लवार, चमार घाची, मोची अर भगी ताई री जात सोलकी, चौहान, राठोड, केदूजी की भी अेकई व्है सकै। सो घणापै रै बिच्चै अेक्ठपणै रो अो भाव तो होई कै सगळा भाया रा भाई हा। इण घणापै रै थका आपसी मोह अर अेक्ठपणो भी अणूतो हो। 'सहकारी-खेती' पेलापोत अठै स ई जलमी। हर अेक री उपज माय सू दोरापै री बेळा तोलणियो रावळो अर पिंडत, भाभी, भील, मोची, सासी, नाई, अेवाळियै, सूथार वगैरा री हिस्सो हूवतो जिका 'आथ' बाजतो। रावळै ने टाळ उपरला सगळा आपरी खेती को करता नी क्यू कै गाव रा सगळा इया ने आथ देता। 'ला' री बेळा जिण अपणायत सू सगळा गाव वाळा नाठ-नाठ अर 'ला' करण वाळै रै सूड, निनाण, सिटिया खूटण मे अर लाटै री बेळा बिना किणी लालच रै काम करावै, देखण जोग व्है। अे लासिया, वडिया सू दोवडो काम करै। नुवा भूपडा ठावण मे भी सगळा गाव वाळा 'ला' जेडै उत्साह सू ई काम करै। ठाकरा अर सेठजी सू लेअर सगळा गाव वाळा नुवा भूपा ने दडवावण अर किडावण मे हाथ बटावै। अेडो अेकठपणै रो भाव पनपावण मे भूगोल रो पूरो हाथ है।

खावण मे थळी री उपज बाजरी अर ज्वार, मोठ अर कठैक गेहू काम आवै। कडी मेनत करण सू भोजन दिन मे च्यार बेळा व्है—सिरावण या

---

१ गहलोत जगदीशसिंह राजपूताना का इतिहास, भाग १, पृ० १०२

कलेवौ, रोटी, वेफारी अर ब्याळू। पण च्यार बेला खावणिया थोडा ई है। खावण मे घणी नी तोई आठ तोला भार री बाजरी री सोगरौ, राब, खीच, घाट अर दळियौ रोज रै भोजन री चीजा ही। साग सगळा रै लिख्योडौ को हूवतौ नी पण जिका जोग हा व्है केर, कूमटिया, सागरिया, मोठफली अर फोग वगैरा खावता। अै सगळी चीजा कम सू-कम पाणी री ठोडा निपज सकै इण सारू अठै अैइज निपजती। बाजरी अठै तौ बूढा अर बीमार ताई पचावै पण जै बीजा मुलका रा मिनख खावै तौ को पच्चै नी। डोकरिया अेक अंग्रेज साब री बात बतावै। खेत मे निसरता साब री भूख भडकी। खेतवाळी उणा ने सोगरै माथै सागरिया घाल'र थमाई। दोरा-सोरा साब सागरिया मुळमुळाई अर सोगरै ने अेकै पाडै धनधनाय बोल्या कै अठै मिनखा मे आई क्सर है वै पलेटा साफ नी करै। बापडै साब री कसूर को हो नी, सोगरौ व्हैई अेडौ आकरौ खीरा माथै सिक्योडौ कै साब जे उणनै पलेट समझ गिया तौ उणा रौ घणौ कसूर को हो नी। बाजरी री मेहमा ई न्यारी। बाजरी टाळ जीवारी रौ जतन केठा कीकर करीजतौ। अेक आडी बाजरी सारू चावो—

कड जाडी धड पातळी, कडिया कलकता वेस।
बडे राव री डीकरी, थाम्यौ सारौ ई देस॥

मिनख रावोड्या री साग घणा चाव सू खावै जिणरौ जलम ई भूगोल रै परभाव रौ फळ है। बराळै मे घास फूस घणौ व्है जद जिनावर दूध भी सल्लौ देवै उण वेळा घी-छाछ घणाई व्है। पण आगै आठ दस मइना मेह-पाणी नी व्है अर आगळै वरस ताई री ठा नी पाणी पडै क नी? धरावा ने माळवै ले जाणा पडै इण सारू जद घणी छाछ व्है उणनै सुखाय माटा मे भरलै अर आडी वेळा काम ले लै। अठै रै फळ फरूटा सारू दिसावरा पोच्योडै अेक थळियै री बात घणी चावी है। उणनै किणी पूछियौ कै थारी थळी मे खजूर, दाडम, दाख अर आम्बा ताई नी व्है पछै कैडा फळ व्है। इण माथै वो थळियो कैयौ—

खोखा खारक खोपरा
ढालू दाडम दाख
मुठ-काचर रै उपरै
वारा आम्बा लाख

पेरावै कानी निजर नाखा तौ उठैई भूगोल दीखै। झीणा पतळा मल-

मला रा नी व्है अर गावा जाडी दो मूती खादी रा व्है सो डील बळती लू अर लडतडतै तावडै सू बच सकै । मिनखा रै सगळै गाबा रौ धोळौ रंग सायद तावडै रौ फळ ई है। अर भूगोल री वजै सू ई गावा नै डील ढापण वाळा नी पण रक्षक मानै । इण सारू ई *अगरखा या अगरखी अर पगरखी इणा* रा नाव वाजै क्यूकै औ तावडै, लू अर बळती धूड सू डील अर पगा री रिख्या करै। हामली, कडला अर चूडै मूठियै रौ भार थळी री लूठी लुगायाई झेलै । मोटौ-फेंटौ भी तावडै सू अर बैरिया रै सोटा सू माथै नै बचावण रौ कारज सारै[1] इण री वखत ठीक आज रै लो-रै टोपै (हेल्मेट) दाई ही जका तेज अस्वारिया वाळा, माथौ-फूटण सू बचण खातर पैरै ।

जीवण मार-धाड अर लडण-भिडण सू भरयोडौ हो इण सारू अठै सगती री अम्बा, जगदम्बा, दुर्गा, भवानी, चामुण्डा जेडै न्यारै-न्यारै रूपा मे पूजा व्हैती।

अठै रा कळा-माहित भी भूगोल रै असर सू कोरा को रै सक्यानी । खोदाई अर मीनाकारी री इमारता नी वण, मण्डोर, जोधपुर, सीवाणा, जालोर, बीकानेर, जैसलमेर अर तन्नोट रा सेंठा दुरग चुणीज्या जिणा री भीता ताई बीस-बीस फिट चवडी है । गावा रै भूपा री बिणगत गोलाई मे, अर छाजत ठेट ऊपर सू साव पतळी अर तर-तर नीचै घणी मोटी इण खातर ई व्है कै औ घणै तेज वायरै सू बच सकै । गावा रै पक्कै घरा री छता मे ढाळ मायलै कानी राखै सो पनाळा सू पाणी घर रै टाकै मे भेळौ व्है सकै ।

मायड राजस्थानी भी घणी सुततर रूप सू फळीफूली अर आपोआप मे अणमावती चोखाया राखै । राजस्थानी भासा रै विकास रै सागै भूगोल जुडियोडौ रेयौ । मिनख छीण-छीण विखरियोडा रैवता, अेक बीजै सू साव कटियोडा हा इण खातर अेक जागा री बोली-चाली मे बीजी जागा सू थोडौ फरक रै गियौ । थळी मे आ कावत घणी चावी है कै 'बारै कोस माथै बोली बदळै ।' पण अै सगळी बोलिया अर भासावा [साव न्यारी कोहैनी इया मे साव चिन्योक फरकई है । राजस्थानी मे बोलण-सूणण मे भारी लखावण वाळा आखर घणा । मूर्धन्य आखर ट, ठ, ड, ढ, ण, जित्ता राजस्थानी मे है दुनिया री बीजी भासा मे को व्हैलानी। ळ अौर स जेंडा आखर इणमे इज है। आ मायड

---

१ फेंटै रा पाग, साफा, चूदडी, माठडा, लेरिया, डबिया, पोतिया, खिडकिया पाग, पेचौ, मदील इत्याद बीजा नाव अर भाता है ।

भासा मालदार घणी, गूथीजण मे अंडी चोखी कै थोडैक आखरा सू घणी बात केईज सकै । रेगिस्तान सू जुडियोडी चीजा रा जितरा सबद इण मे है वे आपोआप मे मिसाल है । उदाहरण सारू बीजी भासावा मे ऊट री लुगाई सारू, न्यारौ नावई कोयनी, हिन्दी-उडदू मे 'ऊठनी' अर लाई अंग्रेजी वाळा तौ 'सो केमल' स काम चलावै । राजस्थानी मे साइड नाव तौ हैइज ऊट री उमर रै बदापे रै सागै जुडियोडा टोडिया, जाखोडा, पागळ, करसळिया, मैंया, सुतर अर ढागा जेडा नावई मोजूद है । इणी तरै खेजडी रा खोखा सूकण सू पैला पीतळ मिमजर, लोक, टोइया अर सागरिया बाजै । ख्यात साहित अठै रै इतिहास रा आरसी है अर घणाकरी रचनवा वीर रस री है ।

पिणयारी, लूरा, गरभा, घूमर अर डडिया जैडा नाच भेळापै सू तौ व्हेई, घणा लूठा भी लखावै । डडिया मे ठोकण अर बचण रा भाव भेळा है तौ पिणयारी पाणी री कमी सू जुडियोडी ।

लारै जावता थोडै मे आ कैणौ चाऊ कै राजस्थान ने धोराऊ मगरा मे भेळौ ठमणौ वाजब कोयनी । अठै री भूगोल इणा मगरा सू साव न्यारौ है अर ओ अठै रै राजनीति, समाज अर धरम माथै तौ हावी रियोइज, स्थापत्य, नाच अर साहित, धराव अर रुखडा तकात इण सू कोरा नी रै सकिया । सो आगै सू भूगाल रै मुजब भारत रा च्यार नी पाच न्यारा खण्ड व्हेणा चाइजै । इणा मे पाचवौ खण्ड राजस्थान बणै ।

राजस्थान रौ पैलड़ौ ख्यात लिखारौ : नैणसी

नैणसी री ख्यात अर विगत राजस्थान रै इतिहास री घणी चाईजती पोथियां हैं। राजस्थानी गद्य मे ई इण दोनां पोथिया री जागा ठंट पकली पात मे है। लेख मे नैणसी रै जोवण रौ बखाण है। पंलपरांत मुसी देवीपरसाद नैणसी ने अकबर रै दरबारी अबुल फजल री जोड रौ इतिहास लिखारौ बतायौ। इण लेख मे नैणसी अर अबुल फजल री जोड बाघता थकां आ बात चावी करण सारू लप्पत करी है कै नैणसी अबुल फजल सू घणौ जोग अर खरौ लिखारौ हो।

पुराणियै भारत आळी कळाई पैला रै राजस्थान री तवारीख ने जाणण खातर साधन भलेई घणा नी व्हेला अर इण ठोड रै पुराणै मानखै अर रजवाडा री करणी री सावळ ठाई नी व्हैला, पण इण मरुधरा रै मध्यकाल रै इतिहास री जाणकारी देवण सारू मोकळा साधन मौजूद है। जे आपा यू कैवा कै उण बेळा रै इतिहास रा साधन मोकळा इज नी, अणमावता पडिया है तौ की घणाघणी कोनी व्हैला। मध्यकाल री जाणकारी देवणिया अै साधन मिन्दरा अर बावडिया री भीता माथै खुदियोडा, दान दिरीज्योडै गावा रा पट्टा अर ठाकरा ने बगस्योडा पट्टा, परवाणा, बाता-ख्याता अर अणगिणत साहित रा साधन हैं। विलियम ब्रुक जैडा मानीता धुरन्दर तौ अठैताई अगेजै कै पुरातत्व अर साहित रूपी साधना रै सागैई राजस्थान री नदिया-नाळा, धोरा टेकरिया, जीव-जिनावर, रुखडा अर मरूखेतर रौ खुणौ-खुणौ इतिहास बतावण वाळा जोग साधन व्है सकै। डॉ० बेनीपरसाद सक्सेना री भारत रै इतिहास सारू कैयोडी बात ने राजस्थान माथै घटोघट बैठाय कैय सका, अठा रै इतिहास लिखारा सामी जे की अळूझौ है तौ वो ओ है कै अठै रै इतिहास री

जागारी देवण प्राळा साधन प्रणता हैं। प्रेकूवी वात प्रर नामी मिनखा री प्रोळखाण करावणिया वीस् साधन मोजूद है सो प्रळूभो है वगदै मूळ रचना-रचना साच ताई पूगणो। मोटा तोर सू जाणकारा सेमूदे मध्यकाल रै इतिहास री सामग्री ने दो टुकडा मे पाती है। प्रेक तो पुरातात्विक साधन प्रर बीजा साहित सू जडियोडा साधन। बीजोडी पात भळै पाछी दो रूपा मे छाणीजै। प्रेक तो प्ररवी-फारसी प्रर सस्कृत री साहित प्रर बीजो राजस्थानी साहित। राजस्थानी साहित सारू छाणणी भळै मई करा तो इण रा ई दो रूप सामी प्रावै, पैला पद्य साहित प्रर पछै गद्य साहित। इण तरै इतिहास रै साधना री खोज-खबर करतो उणा नै रळकावतो मूझ सू छाणतो इतिहास-खोजी राजस्थानी गद्य ताई पूगै जिको प्रठा रै इतिहास री सामग्री रो काळजो कैईज सकै। प्रो काळजो प्रसल मे वे ख्याता है जिणा मे इतिहास ठूसीज्योडो है जिकी नामी ख्याता हाल ताई इणा पागिया रै हाथा पडी है उणा मे नैणसी री ख्यात प्रर विगत, दयालदास री ख्यात, कछवाहा री ख्यात, किसनगढ री ख्यात, भाटिया री ख्यात, जोधपुर रै राठौडा री ख्यात, सीसोदिया री ख्यात, महाराजा मानसिंह री ख्यात, तखतसिंह री ख्यात, प्रचलदास खीची री बात, बाकीदास री बाता, बीजा सोरठ री ख्यात बीजी घणी चावी है। इणा ख्याता मे रजवाडा, राजवसां, खास घटनावा प्रर उणा सू जुडियोडै मिनखा, जुद्धा प्रर वा मे काम प्रावणिया वीरा बीजा रो घणो खारो वखाण है। ख्यात प्रर इतिहास रै नातै सारू इत्ती इसारो घणोई व्हैला कै ख्यात रो प्रापोप्राप साब्दिक प्ररथ इतिहास ईज है। ख्याता यू तो सगळी प्रापोप्राप री ठौड घणी चाईजती है पण फेरूई नैणसी री ख्यात री जागा घणी निरवाळी है प्रर प्रा पैलडी ख्यात कैईज सकै।

नैणसी नै मध्यकाल रै साहित मे मुहता, मेहता, मुइणोत, मोहनोत, मूथा, मूता प्राद कैयो है। इतिहास प्रर साहित रा धुरन्दर या सगला नावा ने मुइणोत रा इज बीजा-बीजा रूप गिणै। उण वेळा रै साहित री गौर सू मनन करिया यू लखावै कै राज रा वै ऊचै प्रोदा माथै विराज्योडा प्रोदैदार जिका रजपूत नी व्हैला, मुइणोत वाजता। नैणसी रै वडैरा मारवाड रै ऊचै प्रोदा माथै काम करियो, इण सारू प्रा गुवाडी इज मुइणोता री गुवाडी वाजण लागगी। नैणसी रै वडैरा रो वखाण जाळोर रै महावीर जैन मिन्दर प्रर नवलाखा जैन मिन्दर री भीता माथै खुदियोडै लेखा मे

करियोडी है। लेखा सूं ठा पडै के नैणसी रौ पैलडौ वडेरौ मोहन राठौड हो, जिण आपरै ढळतै बरसा मे जैन धरम अगेज लियौ, उण रै लारै उण रौ भाई सौभाग सेन ई जैनी बणग्यौ। इणीज मोहन राठौड रौ नवमौ वुसज नैणसी रौ बाप जयमल्ल हो। जयमल्ल रै सरूपदे अर सोहागदे नाव री दो लुगाया ही। सरूपदे चार बेटा नै जलम दियौ—नैणसी, सुन्दरदास, आसकरण अर नरसिंह। सोहागदे सू जगमाल नाव री अेक डीकरौ इज हुयौ। मुगल बादसाह जहागीर जद मारवाड़ रै धणी गजसिंह सू राजी हुय उणनै जाळोर इनायत कीयौ तद उणा जयमल्ल ने जाळोर री हाकमी दी। थोडीक ताळ जयमल्ल नागोर रै अमरसिंह रै कन्नै ई रैयौ। जाळोर अर नागोर मे जयमल्ल री चाकरी सू राजी व्हैय'र महाराजा उणनै जोधपुर रौ दीवाण बणाय दियौ। नैणसी १६११ ई० मे जलम्यौ हो। मोटियार व्हेता ई उणनै मारवाड री फौज मे ओदौ मिलग्यौ। नैणसी सागेडौ सेना-नायक साबित हुयौ। उण आपरी सूझ-बूझ अर बूकिया रै गाढ रै पाण मगरा नाव री ठौड़ उठियोडै कजियै ने मेटियौ अर राजधडा रै ठाकर ने दबायौ जिण सामरोरी छोड दी ही। मारवाड़ अर मेवाड रै काकड री सीव रौ कजियौ ई नैणसी अर सुन्दरदास पूग'र निपटायौ हो। नैणसी रै फौजी जीवन रौ सगळा सू लूठौ काज उण री जैसलमेर माथै फतै ही। नैणसी धणी सूझ सू ओ कारज साजियौ। पैला जैसलमेर रै फौज-बल अर त्यारी रा बावड़ लिया अर जैसलमेर रै रावळ सबळसिंह माथै कूच कर उणनै जुद्ध मे पग पाछा दिराया। जैसलमेर रै कित्तैई गावा ने लूटिया।

ठेट सूई नैणसी इतिहास मे रम्योडौ हो। वो जठीनै ई जावतौ उठै रा चारण-भाटा अर बूढै-बडेरा सू जरूर मिळतौ, बहिया बाचतौ, वडेरा सू बतळ करतौ। उणा सागै हथाई माथै होका खुड़कावतौ उण ठोड रा लेखा अर साहित सू वाकब हूवतौ, की चोखी बाता हीयै उतारतौ अर की नीज डायरी रै पानड़ा मे अटकाय लेवतौ। नैणसी राज रै ऊचै ओदै माथै होइज सो उणनै अठी-उठी फिर भटक'र बाता निरखण-परखण रौ मोकौ मिळियौ। घूम-फिर, जाणकारी भेळी कर उण आपरी जाणकारी रै पाण दो पोथिया लिखी—अेक 'नैणसी री ख्यात' अर बीजी 'मारवाड़ रै परगणा री विगत।'

महाराजा जसवतसिंह मुगला री हिमायत मे दिखणिया सू जूझता थका नैणसी अर सुन्दरदास ने ई आप रै सागै बुलाय लिया। उठैई महाराजा किणी अणजाणी वजै स रिसीजग्या अर भाई समेत नैणसी ने अपड़'र कैद

कर लियौ। महाराजा रै नैणसी माथै इण खार री असल वजै री तौ किणनै ई ठा कोनी पण इतिहास रा नामी अर घणा चावा लिखारा ओभाजी री कैवणौ है कै नैणसी री गुवाडी रै पनपण सू पैला मारवाड रै मोटै ओदा माथै कायस्थ घणा हा। हमैं, सगळै चोखै अर ऊचै ओदा माथै नैणसी रा कुटम्ब-कबीलै आळा धसग्या, सो कायस्थ नैणसी सू बळण लागा। वै महाराज रा कान भरण लागा। भूठ-मूठ ई मारवाड रै मानखै माथै मुहणोता री घणाघणी अर जुलमा रा हवाला महाराजा कनै पूगण लागा। व्है सकै नैणसी री अहम अर स्वाभीमान ई महाराजा री नाराजगी वढावण मे घुक्तै बास्तै मे लम्प रौ कारज साजियौ व्है। वजै भलैई की रैयी व्है इत्ती तौ पक्कायत सू ठा है कै नैणसी अर सुन्दरदास ने दिक्खण मे ई काळकोठडी मे घाल दिया हा। थोडीक ताळ पछै नैणसी री बेटौ करमसी भी अपडी-जग्यौ। दो अेक बरसा ताई तीनू ई काळकोठडी मे वफीजता रैया, पछै दोनुई भाया माथै लाख लाख कळदार रौ डड घातीजियौ। दोनुई भाई डड देवण सू साव ना कर दीवी। दोना ने कित्ताई सताया, कूपीता करी पण तोई टस-सू-मस ई को हुया नी। इण मुजब मारवाड मे हाल ताई नैणसी अर सुन्दरदास बाबत कैयोडा अे दूहा सोरठा घर-घर चावा है—

लाख लखारा नीपजै, बड पीपळ री साख।
नटियौ मूथौ नैणसी, तावौ देण तलाक।।
लेसौ पीपळ लाख, लाख लखारा लावसी।
तावौ देण तलाक, नटियौ सुन्दर नैणसी।।

दोनुई भाया माथै काना रा कीडा भडै जैडी कुपीता हूवण लागी जद उणा अेडै जीवण सू छुटकारौ पावण सारू आतमघात कर'र प्राण तज दिया। इण मुजब मारवाड रै इण पैलडै इतिहास लिखारै री लीला घणी दोजखी अर दुखदायी तरै सू खतम हुई।

नैणसी पक्कायत सू समूदै राजस्थान रौ पैलडौ इतिहासकार कैईज सकै। ख्यात अर विगत मे उण जिण सूक्ष्म अर चुतराई सू नानी-नानी घटनावा रौ बखाण करियौ है वा सरावण जोग है। ख्यात म नैणसी मारवाड रै सागैई बीकानेर, मालवा, बुन्देलखण्ड, काठियावाड, मेवाड, बासवाडा, डूगरपुर, किसनगढ, बून्दी अर सिरोही रै इतिहास रौ बखाण अेडौ आक्रौ करियौ है कै बाचणियौ सराया बिना नी रैय सकै। इणा माय सू कई अक री इतिहास तौ सिरफ नैणसी री ख्यात मे इज मिळै। राजस्थान रै इतिहास री कित्ती ई

वाता आपा नैणसी रै बखाण सू ई जाणा, ज्यू महाराजा जसवतसिंह री वेळा मारवाड अर जैसलमेर रै कजियै री बखाण राजस्थान रै इतिहास रै किणी साधन मे को मिळै नी जद कै नैणसी री ख्यात मे इण बावत राई-राई रौ बखाण करियोडौ है। ख्यात मे जुद्धा रा बखाण, उणा मे माथा देवणिया रा नाव, जुद्धा री वजै रौ घणौ जोरदार बखाण है।

ख्यात दाई 'मारवाड रै परगणा री विगत' ई सरावण जोग है। विगत मे मारवाड रै—जोधपुर, सोजत, जैतारण, फळोदी, मेडता, सिवाणा अर पोकरण—सात परगणा रौ बखाण बिना लाग-लपेट घणी मेहनत अर सूझ सू करियो है। या सातू ई परगणा रा गावा, उठै री आबादी, गावा रौ इतिहास, गावा रै आडै-पाडै रै नदी-नाळा अर भाखरा बीजा रौ बखाण विगत मे है। परगणा रै इतिहास रै सागैई उण वेळा रै ठाकर रै किसै वडेरै ने किण बाबत अे परगणा इनायत हुवा, अठै लागण वाळी रेख, चाकरी भोम अर राज री पातिया रौ बखाण इत्ती चोखाई सू करणौ नैणसी रै इज बूतै री बात ही।

नैणसी री खास कारीगरी आ है कै उण आपरै बखाण ने कोरौ राजावा अर ठाकरा ताई नी राखियौ—धोबी, चमार, सरगरा अर समाज रै ठेट नीचललै मिनखा ने ई को छोडियौ नी। नैणसी रै बखाण री बारीकी देखण सारू उण री विगत रै ३६१वे पानै माथै सोजत री आबादी सारू करियोडै इण बखाण नै देखणौ घणोई व्हैला—

(महाजन ७३८, रजपूत १४२, मुसलमान ७२, पचोळी ८, करसा ३०५, बामण ३६४, सुनार २१, सिलावट ५२, कलाळ ४७, दर्जी ३३, छीपा २५, वैद २०, डूम-भाट १०, मोची ८६, साटिया ८, कुमार २२, न्यारिया ६, भडभून्जा २, ढेढ ८६, खटीक ४३, खाती ८३, जुलाहा २६, धोबी ११, नाई १२, हलालखोर ५, सरगरा ५, लोवार १२, पीजारा १२, कसारा १४ अर कित्ती छोटी-छोटी जाता गिणयोडी है जिणा री हमे ठा ई कोयनी।)

कित्तौ सातरौ बखाण है सोजत री आबादी रौ। ठेट समाज रै नीचललै पाडै सू लेय'र ऊचोडी जाता ताई रै अच्चै-वच्चै ने ई को छोडियौ नी। ठीक इणीज चुतराई सू न्यारा-न्यारा कर, अर बीजी आर्थिक बाता रौ बखाण ई पूरौ है। सो नैणसी कोरौ इतिहासकार अर साहितकार इज को हो नी, समाजसास्त्री अर अर्थविसेसज्ञ भी हो।

प्रसासक रै रूप मे नैणसी खरौ उतरियौ। घणा नी तोई बीस बरसा

ताई उण मारवाड रै न्यारै-न्यारै मोटै ग्रोदा माथै सावळ चुतराई सू काम करियौ। खास कर नैणसी री बढाई इण मे है कै महाराजा री गैरहाजरी मे, जद के महाराजा वीस बरसा ताई मुगली राज जमावण मे लकाऊ ग्रर धोराऊ-ग्राथूणी दिस मे ग्रबखता हा, नैणसी मारवाड राज रौ ढाचौ सागेडौ जमाया राखियौ। सायद उण ऊचै ग्रोदा माथै भाई-भतीजा ने थोपण री भूल करदी व्है।

फौजी रै रूप मे ई नैणसी कम कोनी निवडियौ। उण सामखोरी छोडियोडै ठाकरा ने तौ दवाया इज, सागैई जैसलमेर जैडे लूठै मुलक ने जुद्ध मे गोडा टिकवाया। लकाऊ दिस मे मराठा रै सामी ई उण घणी भिड-मलाई बताई।

मारवाड रा घणा चावा इतिहास रा लिखारा मुसी देवी परसाद पैलपात नैणसी री चोखाया बखाणता थका उणनै ग्रकबर रै चावै दरबारी ग्रबुल फजल री जोड रौ धुरन्दर इतिहासकार बतायौ। साचाणी जे ग्रापा दोनुई विवाना री चोखाया-भूडाया ने सावळ निरखा-परखा तौ कित्ती ई ग्रेकै जेडी बाता दीसै।

दोनूई लिखारा मध्यकाळ मे इज हुया ग्रर दोनाई इण बेळा ग्रापरी पोथिया रची।

दोनूई इतिहासकार ग्राप-ग्राप रै धणी रै खासा मे हा ग्रर दोना रै मरण मे ई थोडौ ग्रेकठपणौ दीसै। दोनू प्राकृतिक मौत सू कोनी मरिया।

इतिहासकार हुवण रै सागैई दोनू चोखा फौजी हा ग्रर घणी बेळा दोनाई फौजा री ग्रगुवाई करी। मध्यकाळ रै बीजै ग्रोदैदारा दाई दोन प्रसासक भी हा ग्रर ग्राप-ग्राप रै राज रै कैई-कैई ग्रोदा माथै काम करिया हा।

दोनू दो-दो पोथिया रची। ग्रबुल फजल 'ग्रकबरनामा' ग्रर 'ग्राइन-ग्रे-ग्रकबरी' लिखी ग्रर नैणसी 'ख्यात' ग्रर 'मारवाड रा परगणा री विगत' लिखी। दोना री पोथिया ग्रापोग्राप री ठोड चाईजती है।

दोनू लिखारा मारवाड रा सपूत हा। ग्रबुल फजल रा वडेरा नागोरी हा ग्रर नैणसी खास जोधपुर रौ होय'र की बेळा नागोर रै ग्रमरसिंह री हाजरी वजाई ही। हा दोनूई कदीमी मारवाडी।

ऊपरली ग्रेकै जेडी बाता रै पाणई मुसीजी नैणसी ने राजस्थान रौ ग्रबुल फजल कैवण माथै उतारू हुया व्हैला। इतिहासकार श्री कानूनगो देवी

परमादजी रै नैणसी अर अबुल फजल रै मेळ सू राजी कोनी। कानूनगो नैणसी ने अबुल फजल सू घणौ वत्तो इतिहासकार अर साहितकार मानै कानूनगो री हिमायत मे जिकी वाता कैईज सकै वे थोडै मे इण मुजब है—

(१) अबुल फजल आपरी रचनावा अकबर री मसा सू लिखी ही अर उणनै दरबार कानी सू घणी सातर दिरीज्योड़ी ही जद कै नैणसी रमतौ जोगी हो। उण आप रै मन सू ई रचनावा कीवी। कानूनगो री कैवणौ है कै 'पुस्तकालय अर राज रा हाथ अबुल फजल वणाय सकै पण नैणसी ने जलम को देय सकै नी।' नैणसी सामी घणी अबसाया ही, उण आपरी हीयै री हूस रै पाण ई पोथिया रची ही।

(२) नैणसी अबुल फजल करता घणौ सातरौ इतिहासकार मानी-जणौ चाइजै। उण आप रै धणी जोधपुर रै महाराजा ने ई पागडी को वधाई नी। नैणसी आपरै वखाण मे केई वेळा महाराजा रा माळी-पन्ना उतार'र उण री बुराया ने ई चावी करी है। अबुल फजल रै बखाण मे अकबर कोरौ उणरौ बावजी-अन्नदाता इज दीसै अर लखावै ज्यू उण मे खोट नेडीज को ही नी। सो नैणसी रौ वखाण भरोसै जोग है अर खरौ इतिहास कैईज सकै।

(३) नैणसी री भळै अेक चोखाई आ है कै उण आपरै वखाण मे, जिकी वात जिण चारण-भाट कै वूढै-बडेरै सू सुणी उणरौ हवालौ देता थका लिखी है। इणी मुजब बहिया अर लेखा रा ई चाईजता हवाला दिया है। हमैं अबुल फजल री छाटकाई देखौ, उण ने अकबर रै कैवण सू सगळै रजवाड़ा आपोआप री तवारीख त्यार कराय अर दी अर उणा रै पाण ई अबल फजल आपरी पोथिया लिखी, पण मजाल है जे उण किणरौ ई सिस्कार ई करियौ व्है। सो नैणसी खरौ लिखारौ कैईज सकै अर ठैट हमार रै सातरै इतिहासकारा दाई उण साधना रौ हवालौ देता थका आपरौ बखाण करियौ है।

(४) नैणसी कोरौ दरबारी लिखारौ इज को हो नी। उण राजावा अर ठाकरा रै सागैई ढेढ, भील, सरगरै साटियै अर उण बेळा रै समाज रै हेटल्लै मिनख रौ ई बखाण करियौ है।

(५) नैणसी इतिहासकार अर साहितकार रै सागै ई समाजसास्त्री अर अर्थविसेसज्ञ ई हो।

(६) अबुल फजल रै सामी सुलेमान सौदागर, अल्बरूनी, जियाउद्दीन बरनी, इब्नबतूता अर ठा नी मध्यकाळ रै कित्तैक इतिहास रै लिखारा री पोथिया पड़ी ही। नैणसी राजस्थान रौ पैलड़ौ ख्यात लिखारौ हो।

(७) फौजी अर राज रै ओदैदार रै रूप मे ई नैणसी घणौ जोग हो।

(८) अबुल फजल जिण विसाल मुलक रौ इतिहास लिखण बैठौ हो उण री नस-नस ने सावळ ओळखतोइज को होनी। इण मुलक री घणकरी पोथिया सस्कृत मे ही अर अबुल फजल ने कक्कै रौ पूण ई को आवतौ नी। पण नैणसी ने मारवाड रै रीत-पात अर सस्कृति री सावळ ओळख ही। उण ठेट मायली बाता घणी गहराई सू लिखी।

इण मुजब नैणसी ने अबुल फजल सू ई घणौ सातरौ इतिहासकार अर जोग राज रौ चाकर मानण मे किणनै ई राई भर ई उजर नी व्हेणौ चाईजै।

चित्तौड़गढ़

चित्तौड ने राणावां रै सागै ई हर किणी ओमजी भोमजी माथै छत्तर छीयां करण रौ जस है। विसै रो वेळा चित्तौडगढ सगळै मानखे रो ढाल बिण जावतौ। चित्तौड रै इण छेडै पाडलपोळ सू ठेट उण छेडै मोर मगरी नांव री भाखरी रै बिच्चै रै सगळै मैल माळियां, मिन्दर-छतरियां, झील तळावां अर जौहर साकां री जागावां रौ बखांण लेख में करियौ है।

राजस्थान रै इतिहास, रीत पात अर परम्परावा री कोई थोडोक जाणकार व्है तौ चित्तौडगढ नाव कान रै पडदै सू टकरावण रै समचै डील रा रूगता ऊवा व्है जावै। मूण्डौ तेज सू तमतमावण ढूकै। वीर रस री बीसू लठी कवितावा'र रीत-पात री पच्चीसू पोथिया सू ई घणौ असर अेक चित्तौडगढ नाव रौ व्है। अलेखा चितराम आखिया सामा आय ऊवा व्है। छाती गरब सू फाटै जित्ती फूलीजण ढूकै। चित्तौडगढ नाव रै इण असर रा कारण वे हजारा-लाखा भिडमल है जिणा रीत-पात री रुखाल सारू बिना नाक मे सळ घालिया राजी-राजी घाटकिया दे काडी'र आपोआप ने होम दिया। जाणी-अजाणी अणगिणत विरागनावा है जिकी हसती-मुळकती बास्तै री झाळा सू बाथिया आयगी। ठा नी कित्तीक बेळा चित्तौडगढ री माटी इण जूझारा रै लोई सू सींचीजी। साका अर जौहर तौ अठै आये दिन री बात ही। कैठी कित्ताई हमला करणिया रा गरब इण गढ रै भाखर री भीता सू भचीडीज भे चूर-चूर हुया। इण गढ री जौहर-साका री जागावा, मैल-माळिया, देवळा'र छतरिया भलेई कित्ताई बूढा पड जावै, ढूढा हुजावै पण राजस्थानी रीत-पात रै हेताळुवा रा माथा गरब सू ऊचा राखण रौ काम करबोइज करैला।

चित्तौड भारत रै सैग गढां मे सगळा सू चावौ'र लूठौ गढ है। औ

२४ ५३' घोराऊ'र ७४ ३६' ऊगूणं देसान्तरा रै विच्चै हमार रै उदैपुर सू कोई अेक सौ आठ किलोमीटर माथै धोराऊ-उगूणी दिख मे है। रैलगाडी रै चित्तौड जवसण सू कोस भर आघौ, चारुमेर तालरा सू घिरयोडै अेक जगी भाखर माथै ओ गढ विणयोडो है। समन्दर री सतं सू गढ १८५० फुट ऊचौ, तीन कोस लाम्बो अर कोस भर चवडो है। आडै-पाडै रै मगरा-तालरा स इण री ऊचाई ५०० फुट नेडी है। तीन कोस री भौं मे पसरियोडो हूवण स गढ मे बीजैं घणकरै गढा दाई कोरा राणा'र सिरदार इज को रैता हा नी। पण सेठ-साऊकार, भील-बावरी, तैली-तम्बोळी अर राज रौ अलेख माणखौ रैवतो हो। इण गढ रै अेक खास ठसवं री वात आ हुई कै इण विखे री वेळा हरकिणी ओमजी-मोमजी माथै छत्तर-छीया कर्‌योडी राखी। गढ रा तळाव, बावडिया, झरना'र कुण्ड पाणी सू हरमेस भरियाइज रैता। घेरै री बेळा भलैई कित्तोई विखौ पड जावतौ तोई पाणी नी खुटतौ। गढ रै माय खेती-जोग पाणी'र जिम्मी हूवण स् खावण जोग धान रौ टोटो ई को पडतौ नी।

दन्तकथावा मे बैइजै कै ओ गढ पाडवा रै समै थापीजियोडो हो। अेकर पाण्डू भीम अठै आयौ अर आपरै वळ सू गोडै रौ अेक घमीडो दे ने भाखर सू पाणी काढ दियौ। 'भीमतळ' नाव रौ पाणी रौ कुण्ड अजुताई गढ मे है। वि० स० ७७० रै अेक लेख सू ठा पडै कै भीम नांव रौ मौर्य वस रौ अेक राजा हुयौ। व्हे सकै इण मौर्य भीम ने दन्तकथावा मे पाण्डू भीम विणा नाखियौ व्है। सो साचाणी ओ भीमतळ नाव रो कुण्डई इणीज मौर्य राजा विणायौ व्हैला। इतिहास रै साधना रौ मनन करिया ठा पडै कै इण मोर्य भीम रौ पाटवी मान मौर्य हो जिकौ दन्तकथावा मे मानमोरी रै नाव सू ओळखीजै। ओ मानमोरी चित्रगमोरी रै नाव सू चावो हो। यू मानीजै कै इण चित्रागद रै लारै इज गढ रौ नाव चित्रकूट पडयौ अर घकै जावता चित्रकूट चित्तौड केइजण लाग गियौ।

नाड वाता मे इण गढ सारू आई चावी है कै वापा रावळ आठवी इसाई सदी मे मानमोरी नै हराय'र अठै आपरो राज जमायौ। पण कूकडे-स्वर लेख सू ठा पडै कै अठै नवमी सदी ताई मौर्यां रोइज राज हो। घणकरा इतिहास लिखारा तो यू मानै कै मौर्यां सू ओ गढ प्रतिहार राजा देवपाल खोसियौ अर गुहिला ने आपरा सामन्त विणाय अठै बैठाया। प्रतिहारा मे लूठा राजा योटाइज हूया पछै गाडवायरा प्रतिहारा रै समै गुहिला चित्तौड मे आपोआप रौ राज जमा लियो। लारै जावता माळवै रै पवार मुन्ज गुहिला

नैं ठोक-पीज अर चित्तौड खोस लियौ। विक्रम री बारवी सदी रैं उपर
छेडैं माळवैं माथैं गुजरात रैं सोलकी जयसिंह सिद्धराज हमलौ कर पवारा
जुद्ध मे पग पाछा दिराया अर माळवैं रैं सागैं ई चित्तौड माथैं आप रौ रा
जमायौ। पाटण रैं सोळकिया मे बिखै री वेळा विक्रम री तेरवी सदी
आदैंठै जावता पाछा गुहिल तपिया अर की इतिहास लिखारा रैं मुजब त
सामन्तसिंह अर बीजा रैं मुजब जैतसिंह गुहिलोत पाटण रैं सोळकी अजयपा
नैं पछाड'र चित्तौड माथैं पाछौ आप रैं वस रौ राज जमायौ। १५६७ ई॰
मे राणा उदयसिंह उदैपुर नी बसायौ जितैं चित्तौड इज इण सीसोदिय
राणावा री केन्द्र रैयौ। इण वस रैं कुल ५६ (गुणसठ) राजावा राज करिय
अर अेकूकैं राजस्थान री वीरता अर त्याग री परम्परावा री मालदारी नै
वदावण जेडा कारज साजिया।

मध्यकाल मे तीन वेळा चित्तौड माथैं जोरावर हमला हुया। अेक
तौ १३०३ ई॰ मे दिल्ली रौ सुल्तान अलाउद्दीन चढ नैं आयौ। आठ मइन
गढ घेरीज्योडौ रैयौ जद राजपूत वीर पीळा खोलाय 'मरण-मारण' सातर
वैरी माथैं आ पडया अर साकौ हुयौ! अेकूकौ लडतौ भिडतौ कट नी ग्यौ
जितैं घमसाण मच्योडौ रैयौ। सेवट वैरी री अणूती मोटी फौज जीत तौ
गी पण उणा रैं हाथ की को पडियोनी। गढ मे वीरागनावा हसती
हसती जौहर करियौ अर विखौ पडिया प्राण तजण री रीत नैं भळैं पक्कायत
सू जमाई।

गढ माथैं बीजौ भारी हमलौ १५वी सदी मे हुयौ। गुजरात रौ
बहादुरसाह भारी फौज-बळ सू चित्तौड माथैं चढाई करी। जूझारा जुद्ध मे
माथा दिया अर कर्णावती रैं साथैं हजारा वीरागनावा जौहर करियौ। तीजी
भारी चढाई अकबर १५६७ ई॰ मे करी। १६ बरसा रैं पत्तै अर जयमल
अेडा करतब बताया कैं जुद्ध मे जीतिया पछैं ई अकबर ने उवा री कारी
मानणी पडी। आगरा मे जयमल अर पत्ता री मूर्ती बिणाय अकबर नै
आपरैं इण वैरी सूरमावा नै मान देवणौ पडयौ। अेक राजस्थानी कवि
चित्तौडगढ री महिमा रौ मोल यू कर्यौ है—

माणक सू मूगी घणी, जुडैं न हीरा जोड।
पन्नौ न पावैं पातने, रज थारी चित्तौड॥
आवैं न सोनौ ओळ म्ह, हुवे न चादी होड।
रगत धाप मूधी रही, माटी गढ चित्तौड॥

दान, जगन, तप, तेज हू, वाजिया तीर्थ बहोड ।
तू तीरथ तेगा तणौ, बलिदानी चित्तोड ॥

सूरमा जिण री श्राण ले श्रर जिणने सगळै तीरथा सू महताऊ तीरथ गिणै श्रो चित्तौडगढ चारू मेर सेंठै परकोटा सू घिरयोडौ है। गढ मे पूगण खातर सात पोळा पार करणी पडै। पैलपरात रौ दरवाजौ पाडळ पोळ बाजै। पोळ रै बारलै पाडै प्रतापगढ रै रावत बाघसिंह रौ स्मारक बणियोडौ है जिण १५३४ ई० मे गुजराती हमलै सू दुर्ग री रुखाळी करता प्राणा रौ बलिदान दियौ हो।

बडता पाडळ पोळ मे, मम् झुकियौ माथोह ।
चित्रागद रा चित्रगढ, नम् नम् करू नमोह ॥

पेलडी पोळ मे बडया पछै थोडी ताळ चालताई ढाळ मे भैरव पोळ श्रावै जठै जयमल श्रर उण री गवाडी रै कल्ला राठौड री छतरिया है।

जठै झडया जयमल क्ला, छतरी छतरा मोड ।
कमधज कट बणिया कमध, गढ थारै चित्तोड ॥

इण छतरिया सू श्रागै जावता गणेस पोळ, लक्ष्मण पोळ श्रर जोडन पोळ श्रावै। जोडन पोळ रै साव सकडै'र टेढै-मेढै मारग माथै मुट्ठी भर मरण-मारण री तेवडियोडा जूझार बैरी री लूठी सू लूठी फौजा ने रोक सकता हा। श्रठै सू श्रागै जगी रामपोळ श्रावै जिण माय बडताई श्रेकै पाडै सिसोदियै पत्तै रौ स्मारक है जिण जयमल रै खेत रैया पछै श्रगवाई करी श्रर गढ री रुखाळ मे मूगौ सू मूगौ प्राणा रौ बलिदान दियौ। श्रठा सू श्रागै तुलजा माता रौ मिन्दर श्रावै, थोडाक श्रागै बनवीर रै बिणायोडौ ऊचौ कोट है श्रर श्रठैइज प्रोहिता री हवेलिया श्रर दानवीर भामासा री हवेली है। शृगार चवरी रौ मिन्दर श्रठैइज है जिणरी टीप टाप १४४८ ई० मे कुम्भा रै वैलाक नाव रै भण्डारी करायी ही। दन्तकथावा सू बिलमीज्योडा केई जणा इणनें शृगार चोरी कैवै श्रर श्रठै महाराणा कुम्भा री श्रेक कवरी रौ व्याव हूवणौ गिणै। कई जणा बतावै कै इण ठोड कुम्भा री कवरी सिणगार करती ही। साचाणी मे श्रो खरतर गच्छ रै श्राचार्य जिनसेन सूरी रै थापियोडौ सान्तिनाथ रौ जैन मिन्दर है। राणावा री छतर छीया मे सगळा धरम पनप सकता हा किनेई माथै रोक-टोक कोहीनी। इण मिन्दर रै बारलै पाडै री खुदाई स्थापत्य कळा री घणौ सातरौ नामून है।

श्रठै सू श्रागै त्रिपोळिया नाव रौ दरवाजौ श्रावै जठै कुम्भा श्रर उण री

राणिया रा मैल-माळिया, राजकवरा रा मैल, राणा री नीजू पूजा सारू बाण माता रौ मिन्दर, कोठार, सिलेखाना अर राजमैल री आगणौ देखण जोग है। आ सगळी ठौड कुम्भा रा मैल नाव सू चावी है। अठै अेक सुरग है जिनै पद्मणी रै जौहर री जागा गिणै।

राजमैला सू आगै कुम्भस्याम रौ मिन्दर है जिणरा पाछो टीप-टाप महाराणा कुम्भा रै समै कराईजी। अठै क्रुस्ण-भक्ति सू हव्रा-होळ हुयोडी मीराबाई हरिकीर्तन सारू जावती ही। इण सू आगै सात बीस देवरी रा जैन मिन्दर है जिका सत्ताइस मिन्दरा रौ झुण्ड है। इण सू थोडकोक अळगौ गोमुख-कुण्ड बिण्योडो है। कुण्ड रै जोडैइज त्रिभुवन नारायण रौ मिन्दर है जिणनै, तेरवी सदी मे अठै परमारा रौ राज हो जद भोज बिणवायौ हो। इण मिन्दर रै कनैइज कीतिस्तम्भ है जिको राणा कुम्भा री माळवै सुल्तान माथै फतै री याद मे बिणईज्यौ। जैता री देख-रेख मे बिणीज्योडो ओ कीर्तिस्तम्भ कळा'र सस्क्रति रै काटै माथै सगळा सू भारी उतरै। कीर्तिस्तम्भ १२ फुट ऊचै, ४२ फुट समचौरस चौथडै माथै बण्योडो है। आप कीर्तिस्तम्भ री ऊचाई छ बीसी ऊपर दो फुट है अर नव खण्डा मे चुणीज्योडो है। ठेट उपरला दो खण्डा नै छोड'र बाकी रै साता माथै देवी-देवतावा री मूरता गुद्योडी है। राजस्थानी सस्क्रति रौ ओ झरणौ वि० स० १५०५ मे बिणीज'र त्यार हुवौ। कळा रा कित्ताई पारखी तौ अेकलै कीर्तिस्तम्भ नै भात-भात री मूरता रौ आखौ म्यूजियम इज गिणै। साचाणी चित्तौडगढ नै अमर करण मे साका'र जौहर करणिया जूझारा री करणी रै सागैई सस्क्रति सू जुडयौडी चीजा रौ हाथ भेळो है।

कीर्तिस्तम्भ सू आगै जयमल री हवेली है जिका उण समै रै सामखोर सिरदारा नै मिळण आळी सोराई रौ नामून है। इण रै आगैइज पद्मणी रा मैल है उण रै नेडौइज काळका रौ मिन्दर चुणीज्योडो है। इण मिन्दर सू थोडोक आगै गढ रौ छेडौ है जठै सू नीचै झाकताई मोरमगरी नाव री भाखरी अजूताई यू रै यू ऊची दीसै। गुजराती हमलै री वेळा इण भाखरी माथै तोपा चढाइजी अर गढ मे गोळा धनधनाइज्या। अकबर घरै री वेळा मजूरा नै सोना री मोरा दे दे र भाखरी नै ऊची उठवाई'र पछै उण माथै मोरचा रोपिया।

इण गढा रै गढ रै इतिहास'र सास्क्रतिक छब माथै गरब करता अेक राजस्थानी कवि जिणरा बडैरा गढ री रुखाळ मे माथा दिया, आप रै भावा

ने कविता में यू पोया—

गढला भारत देस रा, जुडै न थारी जोड ।
इक चित्तौड था उपरा, गढला वारूं क्रोड़ ॥

हे भारत देस रै गर्वीलै गढ थारै सामा कुण पग रोप सकै, थारै उपरा सू किरोड़ गढ वार ने फेंकीज सकै ।

वाल्मिकी अर वेदव्यास रौ मारवाड़

सोध खोज रै इण लेख मे 'मरुधन्वम्' आखर री जिण नुवीं तरै सू खाच तांण करी है वा इण लेख रौ काळजौ है। ठेट अमरकोस रै लिखारै सू ले अर रेऊजी ताई री बाता री साची ओळखाण करावण रौ जतन औ लेख है।

घणी घणी भौं ताई पसरियोडी जमीन रै पाण मारवाड राजस्थान रै सगळै रजवाडा सू मोटौ तौ होइज। हैदरावाद अर कस्मीर टाळ आखै भारत रै रजवाडा सू ई घणी भौ मे वसियोडौ हो।[1] आयूणं राजस्थान रौ ओ राज घणौ पैला कित्ताई भात रा नावा सू ओळखीजतौ। माण्डव्यपुर, मण्डोर, मरू, मरूस्थल, मरूस्थली, मरूमेदनी, मरूमडल, मारव, मरुदेश, मरुधन्वम्, अर मरूकान्तर जेडा नाव मारवाड सारू जूनी पोथिया मे मिळै।[2] अजकालै जोधपुर नाव सू ओळखीजै। जूनी कविताबा मे जोधाणौ ई कैईजतौ हो। मारवाड रा न्यारा-न्यारा इलाका घणा पैला द्रमकुल्य, माण्डव्यपुर, मण्डोर, मेदान्तक, मेदपाट, भिल्लमल्ल, जागल, पल्लिका, जवालिपुर, नड्डुल अर भळै कित्ताई नावा सू बावा हा।

मारवाड रै मानखै रौ इतिहास अेक सौ हजार बरसा रै लगू ढग्गू जूनौ है। भूण्डा घडियोडा भाटा रा ओजारा'[3] रै पाण, जिका लूणी अर चम्बल नदिया रै असवाडै-पसवाडै मिळिया, ओ सार काढीजियौ कै मारवाड मे पैलपरात वसण आळै मिनखा रौ इतिहास उत्तोइज जूनौ है जित्तौ कै वनास, गम्भीरी अर वागा जैडी नदिया रै पसवाडा माथै रैवणियै मिनखा रौ

---

१ रेऊ, ग्लोरीज आफ मारवाड अेण्ड ग्लोरियस राठोड, पृ० १

२ (अ) गो० ही० ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, १, पृ० २
(आ) मारवाड रा परगणा री विगत, भाग १, सम्पादकीय, पृ० १

३ Rudely chipped stone implements

हो। अेक सौ हजार वरस जूनौ।[1] जग चावी अर अणूती जूनी 'सिन्धु सभ्यता' रै समै मारवाड रै आथूणै खुणै सामी मिनख रैवता हा। इण समै रा मिनख तौ 'सभ्य' गिणीजै। इणा ने करता-करावता 'सभ्य' विणण मे कैठी कित्ता जुग लागा व्हैला। आथूणियै राजस्थान मे जिकी दफतरी खुदाई[2] हुई उण सू ठा पडै के मोहन-जो-धडो रै समै अठैई मिनख रैवता हा। सो मारवाड रै आडै-पाडै ताई तौ सिन्धु सभ्यता खरीज ही पण आप मण्डोर अर जोधपुर री ठौड उण समै मिनखा रौ वासौ हो आ बात अजुताई पक्कायत मू नी वैईज सकै। तोई जूनी सभ्यतावा रा जाणकार मारवाड मे जूनी सभ्यता अगेजै।[3]

वैदिक साहित मे मारवाड रा कित्ताई बखाण मिळै। ठेट रिगवेद मे 'मरू' सबद आयोडौ है।[4] वेदा मे मरुता री आख्यायिका आयोडी है। कैई लिखारा तौ इण वैदिक मरूता रै बसण री जागा हूवण सू इज इण रौ 'मरु' नाव पाडीजियोडौ गिणै।[5] बाल्मीक रामायण मे तौ मारवाड रौ घणोई बखाण मिळै। रामायण रै युद्ध काण्ड मे मारवाड रै जलम सारू अेक कथा लिखियोडी है। भगवान श्रीराम जद लका माथै चढाई सारू वानर सेना ने ले वईर हुवा अर समन्दर रै किनारै पूगा तौ समन्दर गेलौ ई को दियोनी।[6] इण सू रीस आयोडा रामजी ब्रह्मदण्ड नाव रौ तीर कमाण मे चढाय अर उगरोमियौ। डर-फरू हुवोडौ समन्दर हाथ जोडतौ थकौ गई करण सारू डाडण ढूकौ। रामजी बोलिया कै ओ कोई टाबरा री रमेकडौ तौ है कोयनी जिनै उगरामौ तौ भलेई पण छूटै नी।[7] मूण्डो पिलकावतौ समन्दर गिड-

---

१ (अ) राजस्थान थ्रू द अेजेज, पृ० ३३
(आ) द स्टोन अेज कल्चर्स ऑफ राजस्थान।

२ Archaeological excavations

३ (अ) हसमुख लाल धीरजलाल साखालिया, बिगनिंग ऑफ सिविलाइजेसन इन राजस्थान (उदैपुर समीनार)।
(आ) डॉ० वी० अेन० मिश्रा, प्रोसिडिंग्स ऑफ राजस्थान हिस्ट्री कान्ग्रेस १९६७
(इ) डॉ० लेसनिक, इण्डियन आर्कियालाजिकल रिव्यू १९५६, ५७, ५८ अर ५९
(ई) अे० घोष, द राजस्थान डजर्ट, इट्स आर्कियालाजिकल आस्पेक्ट्स।

४ ऋग्वेद, १,३५ ६

५ लक्ष्मी नारायण शास्त्री, राजस्थान प्रबोध पत्रिका, पृ० १०

६ देवीपरसाद तवारीख मारवाड (ह० लि०), पृ० ११

७ (अ) विस्वेस्वरनाथ रेऊ मारवाड का इतिहास, १, पृ० २
(आ) देवीपरसाद, तवारीख मारवाड, पृ० १३

गिडायौ के द्रमकुल्य ना‌ रौ म्हारौ श्रेक हिस्सौ धोराऊ दिस मे है। उठै रौ पाणी पी श्रर मलेच्छ पाप करै श्रर मनै ई पाप रौ भागी विणावै। श्रो वाण जै उठै ठोकीज जावै तौ म्हारा पाप ई भसम परा व्है। रामजी नै दया श्रायगी श्रर उणा द्रमकुल्य कानी वाण म्हा दियौ। इण ब्रह्मदण्ड नाव रै श्रग्निवाण सू सेमदै द्रमकुल्य रौ पाणी तौ कळकळीज श्रर हवा हूय गियौ श्रर रूसा समेत मलेच्छ वळ श्रर भसम हुवा। उण ठौड विना पाणी री थळी विणगी[1] जिका मरुखेतर वाजै।

मारवाड रै जलम सारू रामायण रै वखाण नै कोरी कथा मान श्रर कोई टाळ दै तोई इत्तौ तौ थगेजणौइज पडै कै श्राप वालिमकी 'मरूकान्तर' या मरू देस नै श्रोळसता तौ हाइज। साचाणी श्रपा जे सावळ पडताळ करा तौ ठा पडै कै इण मरुखेतर री ठौड कदैई हव्वोळा खावतौ समन्दर हो। पछै समन्द रौ पाणी सूख गियौ। पाणी री लैरा रैत री लैरा वणगी। जुगा सू उड-उड समन्दर मे पडती रैत पाणी रै तूण्डै जमबौ करी। पाणी सूखौ जद इण जुगा सू जमती वेकळु सू मरुखेतर बिणियौ। इण मरूखेतर मे मिनख रौ वसणौ तौ कठैई रैयौ जे कोई दोरौ-सोरौ पूग जावतौ तोई वळनी रैत श्रर लू रै खेंखाडा सू भुळसीज जावतौ। तडतडतै तावडै सू वळती धूड मिनख नै वाळ काडती श्रर सेवट मरणौ पडतौ। इण सारू ई इण खेतर रौ नाव 'मौत री वाडी (रीजन श्राफ डैथ) पडियौ। श्रोझाजी लिखियौ "मरू रौ श्रर्थ मरणौ श्रर रेगिस्तान है। सो जठै मिनख पाणी बिना मर जावै उण रौ नाव मरु देस है।"[2] मुगल वादसाह हुमायू माथै विखा पडिया जद वो लुकतौ-लुकावतौ मरूखेतर कानी मूण्यौ करियौ हो। उण मे कैंडीक बीती, मरूखेतर मे मिनख रा कैडाक हवाल व्है, इण रौ वखाण कित्ताई फारसी लिखारा घणौ खारौ करियौ है।[3] समन्दर मास्तर सू ई श्रा वात पक्की व्है कै मारवाड री ठौड कदैई समन्दर हिलोळा लेवतौ हो।[4] ढाणिया रै पागती रैतुड रै धोरा माथै रमतै टावरा नै

---

१. वालिमकी रामायण, युद्ध काण्ड, सर्ग २२
२ श्रोझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, १, पृ० १
३ (श्र) गुलबदन बेगम, हुमायूनामा (उलथौ डॉ० रिजवी), भाग १, पृ० ५४१-४२
(श्रा) बदायूनी, मुन्तखब-उत तवारीख (उ० रिजवी) हुमायूनामा, २, पृ० १५४
(इ) गुलबदन बेगम, हुमायूनामा (उ० बृजरत्नलाल), पृ० ६० ६१
(ई) जोहर, तजकीरात-उल वाकयात (रिजवी), १, पृ० ६३५
४ इम्पीरियल गजेटियर, जिल्द १, पृ० १, ३ अर ७६

अजुनाई कदेई गुळगुचिया तौ कदेई सोप अर सख मिळे है। पक्कायन सू कैय सवा कै इण मरुखेतर री ठौड कदेई समन्दर हो। मारवाड मे अजुनाई परम्परावा मे आ कावत चावी है 'वो पाणी मुलतान गयौ।' इत्ती वात तौ पक्की है कै इण मरुखेतर री जागा कदेई समन्दर हो। वाल्मिकी रामायण लिखी जद मरु देस तौ व्हैला, कैठी तीर सू नी बाणियौ व्हैला पण वाल्मिकी ने इण वात री ठा नौ खरी ही कै अठै पैला समन्दर हो। सो रामायण री साख मुजब इत्ती बात तौ हैइज कै रामायण लिखीजी जद मारवाड वसियोडो हो। इण ने मिनख उण वेळाई अक देस अगेजता हा। मारवाड री ठौड घणी पैला कदेई पाणी हो।

मारवाड घणी जूनौ मुलक है इण वात री अेक भळै साख भागवत पुराण मे मिळे। इण मे मारवाड ने अेक अेडी चोखी जागा बताई है जठै गुणी मिनखा रौ वासौ हो।[1] इण पुराण रै दसवें स्कन्ध रै पचासवें पाठ मे अेक वारता है। मगध रौ राजा जरासन्ध आपरै जवाई मथुरापति कस सू वैर लैण खातर सतरै वार चढाई करी पण उणरौ कारज नी सजियौ। थोडोक पछै काळयवन मथुरा माथै हमलौ कियौ। इण मोकै श्रीकृस्ण यदुवसिया ने भेळा कर समझाया कै इण मोकै जे जरासन्ध पाछौ हमलौ परी करियौ तौ दोवडा हमला सू यदुवसी सागैडा कूटीजैला। कृस्ण मथुरा रै यदुवसिया ने द्वारकापुरी पूगण सारू त्यार कर लिया। उवा ने सुझायौ कै मथुरा सू द्वारका पूगण रौ सगळा सू निसक मारग, जठी खोली रौ ई खटकौ नी, 'मरुधन्वम्' हुय अर निकळै। अेडौ भरोसै जोग मारग जे 'मरुधन्वम' रौ मारग हो जद विणज-वोपार सारू वाळदिया ई ओइज गेलौ पकडता व्हैला। इण सारू ई अजुताई मारवाड नामी वोपारिया रौ घर गिणीजै। भळै पाछी आ वात अठै खराईज सकै कै भलेई भागवत पुराण मे जरासन्ध अर काळयवन री वारता कोई इतिहास नी गिणै तोई आ तौ अगेजणी पडैला कै भागवत पुराण लिखीजियौ उण वेळा 'मरुधन्वम्' देस मौजूद हो। इण ने मिनख भरोसै जोग ठौड गिणता हा अर सवार साणी विणजारा वाळदिया रा अेवड रा अेवड अठी उछरता।

भागवत रै वखाण रौ 'मरुधन्वम्' मारवाड हो आ तौ सगळा ई इति-हास लिखारा अगेजै। पण इण 'मरुधन्वम्' मे 'धन्वम्' किसौ मुलक हो? वेद व्यासजी 'मरु' देस रै सागै 'धन्वम्' ने कीकर जोड दियौ? इण बात रै खुलासै

---

१ भागवत पुराण, स्लोक ३६, अध्याय १०, खण्ड १

सारू लिखारा बिचै ग्रेकठपणो कोयनी । मारवाड रा घणा चावा इतिहास लिखारा रेऊजी तौ ग्रापरी सूझ सू ग्रो सार कडियौ कै मथुरा ग्रर द्वारकापुरी रै ग्रैन बिचै तौ मारवाड ग्रर उण सू लकाऊ दिख मे 'धन्वम्' नाव रा दो न्यारा-न्यारा मुलक हा ।[1] सस्कृत रा धुरन्दर विद्वान ग्रमरसिंह जी रौ बखाण रेऊजी री बात सू मेळ नी खावै । ग्रमरसिंह जी 'ग्रमरकोस' रची ही । ग्रमर-सिंह जी रै मुजब 'मरू' ग्रर 'धन्वम्' ग्रेक ग्रर्थ रागण वाळा (सीनोनिम्स) ग्राखर है ।[2] दोना ग्राखरा रौ ग्रेक इज 'रेगिस्तान' ग्रर्थ है । सो 'मरूधन्वम्' ग्रेक ठोड रौ नाव इज है । सो रेऊजी ग्रर ग्रमरसिंह जी रै बतायोडै 'मरू-धन्वम्' रै ग्रर्थ मे फरक है । इणा माय सू ग्रेक बात खरी व्है तौ बीजी ग्रापैई कूड हुजावै । दोना री बाता तौ खरी हुइज कोयनी सकै ? क्यू कै रेऊजी तौ 'मरू' ग्रर 'धन्वम्' ने साव दूजी-दूजी दो ठोडावा रा नाव मानिया ग्रर ग्रमर-सिंह जी ग्रेक ठोड रा इज, ग्रेक ई ग्रर्थ वाळा ग्राखर गिणिया । ग्रसल मे ग्रै दोनू बाता ग्रेक बीजै री काट हूवण सू, दोनु सागै-सागै साच तौ नीज है । पण, दोनुई खोटी तौ व्है सकै । सावळ पडताळ करा तौ ठा पडै कै दोनू बाता माय सू ग्रेकई खरी नी है ।

पैला ग्रपा रेऊजी री बात माथै विचार करा तौ ठा पडै कै मारवाड रै लकाऊ दिख मे 'धन्वम्' नाव री ठोड साचाणी केई है, ग्रा बात ग्राप रेऊजी ने ई ठा कोयनी । मथुरा ग्रर द्वारका रै बिचै तौ मारवाड है इज । ग्रागै मारवाड ग्रर द्वारका रै बिचै कठैई 'धन्वम्' व्हैला, यू विचारता ग्रागै इण इज दिख मे 'धन्वम्' कठैई है ग्रा कैणो तौ सोरोइज है । पण इतिहास मे इण बात रौ पडूत्तर जोइजै के इण गेलै मे 'धन्वम्' कठै है, किसै साधन मे उणरौ हवालौ मिळे, 'धन्वम्' जे कदैई खतम हुगो तौ कदैक हुवो ? ग्रजै ताई ढूढा कठैई मिळै कै नी । जे ग्रेक ई जूनी पोथी, लेख या ढूढा सू मारवाड सू लकाऊ दिख मे 'धन्वम्' नाव री ठोड रा की बावड नी लादै तौ पछै कोरी रेउजी रै कैयोडी है इण सू तौ साच गिणीजै कोयनी ।

सस्कृत रै जाणकारा सू पडताळ करिया ठा पडी कै सस्कृत व्याकरण रै मुजब 'मरूधन्वम्' ग्राखर ग्रेकवचनी है, बहुवचनी कोयनी । जे साचाणी ग्रो ग्राखर बहुवचनी हूवतौ तौ भारत रा मानीता वेदव्यास जी, जिणा महाभारत ग्रर ग्रठ्ठारै पुराणा री रचना कीवी, सस्कृत व्याकरण री साव चिन्नीक

---

१ रेऊ, मारवाड का इतिहास, भाग १, प० ३४
२ ग्रमरसिंह, ग्रमरकोस, काण्ड २, भूमिवर्ग, स्लोक ५

भूल कोयनी करता। जे साचाणो 'मरुधन्वम्' मारवाड अर धन्वम् नाव री दो न्यारी ठोडावा बतावण वाळौ अेक आखर हूवतौ तौ संस्कृत व्याकरण रै कानून मुजब इण रौ रूप 'मरुधन्वे' हूवतौ 'मरुधन्वम्' तौ नीज हूवतौ। सो रेऊजी री बात तौ ऊठी जठैऊ ई खोटी।

हमैं अपा अमरसिंह जी री बात माथै विचार करा, जिणा 'मरु' अर 'धन्वम्' ने अेकई अर्थ वाळा दो न्यारा आखर बताया। 'मरु' रौ अर्थ रैतीली ठौड है अर ओइज अर्थ 'धन्वम्' रौ है। आ मानण मे कीकर आय सकै कै वेद-व्यास जी जैडा मुनि अेक ठोड रौ नाव दो-दो बेळा लिख दियौ ? अवैई कोई जोधपुर-जोधपुर अर जोधाणौ जोधपुर या अेडा इज अेक जागा रा अेक अर्थ आळा दो आखर तौ लिखण मे आवै कोयनी। जै कोई लिख दे तौ व्याकरण मुजब खोटी बात गिणीजै। वेदव्यास जी रै लिखण मे व्याकरण री खोट हू सकै कोयनी। सो अमरसिंह जी री बात ई बैठे कोयनी।

रेऊजी अर अमरसिंह जी दोना री बात खरी मानीजण जोग कोयनी तौ पछै आ बात सामी आवै कै 'मरुधन्वम्' सू व्यास जी रौ अर्थ काई हो ? आ बात तौ जचै कोयनी कै महामुनि कोरी कविता री चोखाई या छन्द रै फूटरापै सारू ओ आखर काम मे लियौ। महामुनि रै घालियोडी इण अवखी आडी रै पडूत्तर सारू वाल्मिकी जी री मारवाड रै जलम सारू लिखियोडकी कथा रौ आसरौ लेणौ पडै। श्रीरामजी रै ब्रह्मदण्ड नाव रै बाण सू धोरा रौ खेतर बिणियौ वो मरु कईजतौ। इण मरु रौ जलम धनु सू हुवौ हो इण सारू इज वेदव्यास जी, जिका रामायण री बात जाणता हा उण सारू 'मरुधन्वम्' नाव लिखियौ। सो बात खुलासै हुगी कै 'मरुधन्वम्' रौ अर्थ वो मरु देस हो जिकौ धनु सू जायोडौ गिणीजतौ। बात रौ सार ओ कै मरु नाव रैतीलै देस रौ है अर धन्वम् कोरौ विसेसण (अेडजेक्टिव) है जिणमे उण देस री उत्पत्ति छिपियोडी है। 'मरुधन्वम्' आवर इतिहासिक आखर है क्यू कै इण मे मारवाड रै जलम रौ इतिहास छिपियोडौ है। सो 'मरुधन्वम्' अेक जागा रौ नाव हूता थका 'मरु अर 'धन्वम्' दो न्यारै अर्थ रै आखरा सू वणियौ। इण मे अेक तौ मुलक रौ नाव है अर बीजो आखर उण मुलक री ओळखाण करावण आळौ आखर है।

इतिहास लिखारा रामायण अर भागवत मे मारवाड रै जलम सारू आयोडी बात ने अगेजण मे भलैई कित्ती टाळमटोळ करलै। उण ने कोरै साहित री बात कैय अर टाळ दे। दूजा सावूता विना इण सास रौ मोल दावै

सारू लिखारा बिचै ग्रेकठपणो कोयनी। मारवाड रा घणा चावा इतिहास लिखारा रेऊजी तौ ग्रापरी सूझ सूग्रो सार कडियौ कै मथुरा ग्रर द्वारकापुरी रै ग्रेन बिचै तौ मारवाड ग्रर उण सू लकाऊ दिख मे 'धन्वम्' नाव रा दो न्यारा-न्यारा मुलक हा।[1] सस्क्रत रा धुरन्दर विद्वान ग्रमरसिंह जी रौ बखाण रेऊजी री बात सू मेळ नी खावै। ग्रमरसिंह जी 'ग्रमरकोस' रची ही। ग्रमरसिंह जी रै मुजब 'मरू' ग्रर 'धन्वम्' ग्रेक ग्रर्थ राखण वाळा (सीनोनिम्स) ग्राखर है।[2] दोना ग्राखरा रौ ग्रेक इज रेगिस्तान' ग्रर्थ है। सो 'मरूधन्वम्' ग्रेक ठोड रौ नाव इज है। सो रेऊजी ग्रर ग्रमरसिंह जी रै बतायोडे 'मरूधन्वम्' रै ग्रर्थ मे फरक है। इणा माय सू ग्रेक बात खरी व्है तौ बीजी ग्रापई कूड हुजावै। दोना री बाता तौ खरी हुइज कोयनी सकै ? क्यू कै रेऊजी तौ 'मरू' ग्रर 'धन्वम्' ने साव दूजी-दूजी दो ठोडावा रा नाव मानिया ग्रर ग्रमरसिंह जी ग्रेक ठोड रा इज, ग्रेक ई ग्रर्थ वाळा ग्राखर गिणिया। ग्रसल मे ग्रे दोनू बाता ग्रेक बीजै री काट हूवण सू, दोनु सागै-सागै साच तौ नीज है। पण, दोनुई खोटी तौ व्है सकै। सावळ पडताळ करा तौ ठा पडै कै दोनू बाता माय सू ग्रेकई खरी नी है।

पैला ग्रपा रेऊजी री बात माथै विचार करा तौ ठा पडै कै मारवाड रै लकाऊ दिख मे 'धन्वम्' नाव री ठोड साचाणी केई है, ग्रा बात ग्राप रेऊजी ने ई ठा कोयनी। मथुरा ग्रर द्वारका रै बिचै तौ मारवाड है इज। ग्रागै मारवाड ग्रर द्वारका रै बिचै कठैई 'धन्वम्' व्हैला, यू विचारता ग्रागै इण इज दिख मे 'धन्वम्' कठैई है ग्रा कैणो तौ सोरोइज है। पण इतिहास मे इण बात रौ पडूत्तर जोइजै के इण गेलै मे 'धन्वम्' कठै है, किसै साधन मे उणरौ हवालौ मिळै, 'धन्वम्' जे कदेई खतम हुगौ तौ कदेक हुवौ ? ग्रजै ताई ढूढा कठैई मिळै कै नी। जे ग्रेक ई जूनी पोथी, लेख या ढूढा सू मारवाड सू लकाऊ दिख म 'धन्वम्' नाव री ठोड रा की बावड नी लादै तौ पछै कोरी रेऊजी रै कैयोडी है इण सू तौ साच गिणीजै कोयनी।

सस्क्रत रै जाणकारा सू पडताळ करिया ठा पडी कै सस्क्रत व्याकरण रै मुजब 'मरूधन्वम्' ग्राखर ग्रेकवचनी है, बहुवचनी कोयनी। जे साचाणी ग्रो ग्राखर बहुवचनी हूवतौ तौ भारत रा मानीता वेदव्यास जी, जिणा महाभारत ग्रर ग्रठ्ठारै पुराणा री रचना कीवी, सस्क्रत व्याकरण री साव चिन्नीक

१ रेऊ, मारवाड का इतिहास, भाग १, पृ० ३४
२ ग्रमरसिंह, ग्रमरकोस, काण्ड २, भूमिवर्ग, स्लोक ५

भूल कोयनी करता । जे साचाणो 'मरूधन्वम्' मारवाड अर धन्वम् नाव री दो न्यारी ठोडावा बतावण वाळो अेक आखर हूवतो तो सम्स्त व्याकरण रै कानून मुजब इण रो रूप 'मरुधन्वे' हूवतो 'मरुधन्वम्' तो नीज हूवतो । सो रेऊजी री बात तो ऊठो जठैऊ ई खोटी ।

हमैं अपा अमरसिंह जी री बात माथै विचार करा, जिणा 'मरु' अर 'धन्वम्' ने अेकई अर्थ वाळा दो न्यारा आखर बताया । 'मरु' रो अर्थ रैतीली ठौड है अर ओइज अर्थ 'धन्वम्' रो है । आ मानण मे बीकर आय सकै कै वेद-व्यास जी जैडा मुनि अेक ठोड री नाव दो-दो वेळा लिख दियो ? अबैई कोई जोधपुर-जोधपुर अर जोधाणो-जोधपुर या अेडा इज अेक जागा रा अेक अर्थ आळा दो आखर तो लिखण मे आवै कोयनी । जै कोई लिख दे तो व्याकरण मुजब खोटी बात गिणीजै । वेदव्यास जी रै लिखण मे व्याकरण रो खोट हू सकै कोयनी । सो अमरसिंह जी री बात ई बैठै कोयनी ।

रेऊजी अर अमरसिंह जी दोना री बात खरी मानीजण जोग कोयनी तो पछै आ बात सामी आवै कै 'मरूधन्वम्' सू व्यास जी रो अर्थ काई हो ? आ बात तो जचै कोयनी कै महामुनि कोरी कविता री चोखाई या छन्द रै पूटरापै सारू ओ आखर काम मे लियो । महामुनि रै घालियोडी इण अबखी आडी रै पडूत्तर सारू वाल्मिकी जी री मारवाड रै जलम सारू लिखियोडकी कथा रो आसरो लेणो पडै । श्रीरामजी रै ब्रह्मदण्ड नाव रै बाण सू धोरा रो सेतर बिणियो वो मरू कैईजतो । इण मरू रो जलम धनु सू हुवो हो इण सारू इज वेदव्यास जी, जिका रामायण री बात जाणता हा उण सारू 'मरूधन्वम्' नाव लिखियो । सो बात खुलासै हुगी कै 'मरुधन्वम्' रो अर्थ वो मरू देस हो जिको धनु सू जायोडो गिणीजतो । बात रो सार ओ कै मरु नाव रैतीलै देस रो है अर धन्वम् कोरो विसेसण (अेडजेक्टिव) है जिणमे उण देस री उत्पत्ति छिपियोडी है । 'मरुधन्वम्' आखर इतिहासिक आखर है क्यू कै इण मे मारवाड रै जलम रो इतिहास छिपियोडो है । सो 'मरूधन्वम्' अेक जागा रो नाव हूता थका 'मरु अर 'धन्वम्' दो न्यारै अर्थ रै आखरा सू बणियो । इण मे अेक तो मुलक रो नाव है अर बीजो आखर उण मुलक री ओळखाण करावण आळो आखर है ।

इतिहास लिखारा रामायण अर भागवत मे मारवाड रै जलम सारू आयोडी बात ने अगेंजण मे भलैई कित्ती टाळमटोळ करलै । उण ने कोरै साहित री बात कैय अर टाळ दे । दूजा सानूता विना इण साख रो मोल दावै

जित्तौ घटाय दै । पण आ तौ अगेजणौ इज पडै कै मारवाड ठैट वाल्मिकी अर वेदव्यास रै समै गी देस है । रामायण अर भागवत लिखीजी जद मारवाड ने मिनख ओळखता हा । अेक खास मुद्दै री बात आ है कै बाल्मिकी अर वेदव्यास बिचै हजारा बरसा रौ फरक है । पण भागवत मे उणाज ठौड ने 'मरुधन्वम्' लिखी है जिण ने रामायण मे मरू बताई है । आज ई मारवाड मथुरा अर द्वारका रै अैन बिचमे है । साहित री बात मे भूगोल री साख इण बात रै दाठीकपणै री साबूत है कै मारवाड घणौ जूनौ ठैट पौराणिक देस है । भलैई उण वेळा रै मारवाड रै इतिहास रा बावड मिळै या नी मिळै । सो साहित अर भूगोल रै साबूता रै पाण मारवाड री महाकाव्य काल तक री प्राचीनता तौ पक्कीज है ।

मारवाड रै पुराणैपण रौ अेक भळै साबूत व्यास जी रै इज रचियोडै महाभारत मे मिळै । मथुरा अर द्वारका रै बिचलै खेतर ने महाभारत मे 'जागल देस' लिखियौ है । जोधपुर मे बिजोळाई रै भाखरा रै बिचै बिणियोडी अेक खो (गुफा) अजुताई भीम भडक नाव सू चावी है । कित्ताई डोकराडोकरिया इण खो ने पाण्डू भीम रै बिणायोडी गिणै ।

परम्परावा मे आ बात ई अजै ताई तौ रुखाळिजियोडी है कै मारवाड री जूनी राजधानी मण्डोर ही । अठै माण्डू रिसी रौ वासौ हो । इण सारू इण रौ नाव माण्डव्यपुर अर पछै मन्डोर पडियौ । नैणसी री ख्यात अर परम्परावा सू आ ई ठा पडै कै मण्डोर री राजकवरी मण्डोदरी लकापति रावण ने परणायोडी ही ।[1] आ ई कैईजै कै अयोध्या रै कवर श्रीराम रा कुळगुरु वसिस्ठ मुनि हा जिका आबू री टेकरी माथै रैवता हा ।[2]

इणा सगळा साबूता सू ओ सार काढीजै कै रामायण अर महाभारत री वेळा मारवाड हो तौ परोइज । सो मारवाड रौ इतिहास साहित रै पाण वाल्मिकी अर वेदव्यास रै समै जित्तौ जूनौ अर दफतरी खुदाई रै पाण सिन्धु सभ्यता जित्तौ जूनौ अर भूण्डा घडियाडा भाटा रै राछा रै पाण अेक सौ हजार बरस बूढौ है ।

---

१ (अ) राय बहादुर हीरालालजी रै लिखियोडै अवधी हिन्दी प्रान्त मे राम-रावण युद्ध' नाव रै लेख री काट करता थका रेऊजी 'सुधा' पृ० ४७३ माथै इण परम्परा रौ हवालौ दियौ है ।

(आ) मारवाड रा रावणिया अर रावणियाणा जैडा गावा रा नाव इण परम्परा री जड है ।

२ गहलोत जगदीससिंह, राजपूताना का इतिहास, २, पृ० १८

कळा-साहित

राजस्थान कोरी भिडमला अर जूझारां री करणी रै पाण इज नी सराईजै। ठेट प्रागैतिहासिक काल सू राजस्थान कळा साहित रो घर रैयो। अेके पाडै अठै रीत-पात री रुखाळ सारू साका अर जोहर मडता तौ बीजै कानी कळा साहित ने पन-पावण रा जतन करीज्ता अर आगोतर री बाता माथै मनन हुवता। अठै रै कळा-साहित मे अलेखू सरावण जोग बाता है। भारत री सास्कृतिक छब ने गरवजोग बिणावण मे राजस्थान री भेळ घणो महताऊ है।

हमार रै राजस्थान ने मिनख राजपुताना रायथान अर रजवाडा जैडा नावा सू तौ ओळखनाइज हा सागैई इण री अेक खुणो सपादलक्ष सू चावौ हो तौ बीजौ जागळ सू जाणीजतौ। मत्स्य, मेदपाट, जवालीपुर, माड, गुर्जरात्रा, विराट, मरू, भिल्ल-मल्ल, सिव अर्बुद अर ठा नी कित्तैक नावा सू इण धरती रा उणा-खुणा चावा हा। कैई कैई ठोडावा रा नाव तौ उठै रै भूगोल रै मुजब इज राखीज गिया। माही नदि रै काठै माथै वस्योडै प्रतापगढ री कित्तीक सीव काठल सू ओळखीजै। गिरवा भोमिसेल अर कैठी कित्ताई नाव भूगोल रै पाण ई पाडीज्या।

राजस्थान ३४२२७४ किलो मीटर मे पसरियोडो है। ओ ऊणीज देसान्तरा रै बिचै वस्योडो है जिणा बिचै धोरऊ अरब घणकरौ मिश्र, लाई-बेरिया अर अफ्रीका रा कीं भाग है। ठेट सू इण मे कठैई घाटा है तौ कठैई तालर, रोई, भाखर अर मरुखेतर माण्डीज्योडा है। आब हवा, भाखर अर मरूखेतर अठा रै रीत पात ने अेक निरवाळे साचै मे ढाळ दिया। अठै रा कळा-साहित अर रीत पात सुतंतर रूप सू निखरिया उवा माथै बिजा री चिन्योक रगई को हो नी। भारत री सस्कृति री इण पात मे अलेखा गरव-जोग बाता है।

जूभार, भिडमल, मुळकता माया देवणिया अर रीत-पात री रुखाळ सारू भाळा री गोदी वैठणिया तो अठै री मावा इत्ता जिण्या कै मुलक ने चूसण खातर आयोडा अगरेज ई इचरज सू बघना व्है ग्या। पैला-पैला भारत रो इतिहास लिखणिया अगरेज भारत रा गुणगावण मे राजी को हा नी। वहियां, ख्याता, वाता अर लेखा सू राजस्थानी जभारा री करणी री ओळखाण हुया केई चारु खाना चित्त हुग्या। कैया होटा ने लोई भाण करया व्हैला'र बीजा रा डोळा इचरज सू फाटोडाइज रै ग्या व्हैला। जदैइज तो उणा ने राजस्थानी सूरमावा रै जस रा अणचाया गीत गावणा पड्या।

राजस्थाना रै रजवाडा'र राजवसा री छत्तर छीया मे कळा-साहित ने आसरो मिळियो। राजावा, सिरदारा, पिण्डता अर सेठा मैल-माळिया, मिन्दर, देवळ, थडा, छतरिया, हवेलिया, वेरा-वावडिया, तळाव बीजा विण-वाय इण धरती री सास्कृतिक मालदारी रै भळै माळी पन्ना जड दिया। वैदगी, ज्योतिस, काव्य, नाटक, गीत-सगीत तो अठै इत्ता पनपिया कै आ धरती धन्नै सेठ री *काकी कैईज सकै जिनै सास्कृतिक दडवै रो को छै है नी* पार। अठा रै रीत-पात दाई कळा-साहित ई भारत री सस्कृति रीज अेक पात हूता थका आपोआप री कित्ती ई न्यारी निरवाळी'र अचूकरी चोखाया राखै।

इतिहास पैला रै जुग मे जिको प्रागेतिहासिक जुग कैईजै, बनास, गम्भीरी, वेडच, वाघा'र चम्बळ नदिया रै काठा'र घाटा माथै भाठै रै जुग री बेळा रै मिनख आपरी रम्मत माण्डी। उदैपुर, जैपुर अजमेर अर जोधाणै री कित्तीई ठोडा भाठै रै जुग रै मानखै री टो लागै। उदैपुर रै पाखती आहड नाव री ठौड सू इण सभ्यता रा घणा महताऊ वावड हाथै लागै। गिलूड'र भगवान-पुरा मे लादोडै मळबै सू ठा पडै कै आ थेट पुराणकी सभ्यता राजस्थान रै धोराऊ-अगूणै सू लेअर लकाऊ-ऊगूणै खुणै ताई पसरियोडी ही। जूनियै इतिहास रा लिखारा आपरी जाणकारी रै पाण ओ सार काडियो कै सरस्वती ने दृस्दती नदिया रै काठा माथै इज पैलपरात आळी सभ्यता पनपी ही। सिन्धु सभ्यता रै नगरा माय सू सरस्वती रै *काठै माथै गगानगर* जिलै रै *काळीवगा* मे खुदाई सू उघडियोडो नगर घणोइज चाईजतो है। १६४७ मे मुलक पाती-जगियो अर सिन्धु सभ्यता रै समै रा मोहेन-जो-धडो, हडप्पा, चेन्होधडो, भूरकग्धडो बीजा नगर भारत सू फाटीज गिया पण काळीवगा इण खोगाळ ने भरदी।

महाभारत, रामायण अर पुराण आ साख भरै के उण समै मरू जागल अर साल्व जैडा वैदिक 'जन' अठैइज वसियोडा हा। जनपदा रै जुग रा मत्स्य, सीवी, राजन्य अर मारव जैडा जनपद जेपुर, उदैपुर, अलवर ने भरतपुर जिला री ठोड इज हा। ईसा सू दो सदिया पैला मालव इण खेतर मे आपरी रम्मल माण्डी'र जैपुर, अजमेर, टोंक ताई पूग गिया। तीजी सदी मे जावता इणा कुसाणा ने पछाडिया। इणा रै दाई अलवर भरतपुर मे आर्जुनायन'र घोराऊ राजस्थान मे योधैया सुततरता खातर जुद्ध करिया अर रीत-पात ने घणै गरवजोग विणाया। गुप्त वस रै समै अठै चिन्याक गणराज्य मण्डयोडा हा जिणा ने लारै जावता समुद्रगुप्त पग पाछा दिराया।

हर्सवर्द्धन रै पछै सातवी इसाई सदी सू अठै प्रतिहार (पिडियार अर परिहार), चाहमान, सोलकी (चौलुक्य), पवार (परमार), गुहिल'र रास्ट्र-कूट जैडा सैठा राजवसा आप-आप रा अखाडा जमाया। इणा रै बूथै इज इण खेतर ने वारला हमला सू कोरा राखण खातर माथा देवण री रीत पक्कायत सू जमी। पछै राठौड, सीसोदिया, भाटी, कछवाहा, चौहान अर हाडा रजपूत अठा री सेव-खेव करी। १८५७ मे राजस्थानी वीरा री करणी सू अेकर तो अगरेज ई धूज ग्या हा। बीसवी सदी मे प्रजामण्डल रा जूझार घणा अवखिया। १९४७ मे देस रै सुततर हुया अठा रा अठारह रजवाडा— जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, अलवर, जैपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बूदी, कोटा, झालावाड, प्रतापगढ, बासवाडा, डूगरपुर, उदैपुर, सिरोही, किसन-गढ'र टोंक—रै साथै अजमेर ने मिळा २६ जिला री नुवौ राजस्थान बणियौ।

भूगोल अर सुततर रजवाडा रै पाण राजस्थान मे अचूकरो अर घणी सरावण जोग कळावा पनपी। इण रूप मे ओ लकाऊ भारत रै सामा पग रोप सकै। सगळै राजस्थान मे बिखरियोडा पुराणा मिन्दर, किला, गढा, छतरिया, मैल-मळिया कोट-कागरा, हवेलिया, झरोखा अर झील-तळाव सारली सस्क्रति री मोल बतावण खातर भलेई मळवा हुय कीकर ने कीकर अजुनाई अडिया है। आडावळ री भाखरिया रा भाठा अठा री बिणगत ने अलेखा बरसा ताई मेह, आधी, वायरै, तावडै अर धूड धपासै री झाट झेलण जोग लाठाई दीवी।

राजस्थानी स्थापत्य रा पैलपरात रा नामून सिन्ध-नगर काळीबगा सू हाथै लागा। नगर ने घणौ माथौ खपा, सोच-विचार'र थाप्यौ, ईंटा चुणाई

मे वरतीजी, चवडी सडका, सैर रै चोफैर मेंठी कोट, वैरा, साळिया अर चोखा घर उण वेळा ई विणीजता हा। खुदाई सू अेक सागेडै नगर रा ढूढा सामा ग्राया है। प्रागेतिहासिक स्थापत्य सारू ग्राहड मे निकळणिया ढूढा अर वीजी चीजा घणी महताऊ है। भगवानपुरा अर गिनूड सू ई ग्राहड सभ्यता रा चितराम चवडै ग्राया है। राजस्थान मे जनपदा री वेळा रा नामून वैराट, नगर, रैड साम्भर'र नळिया सागर मू चावा हुया है। व्है मकै असोक मौर्य ई राजस्थान मे की स्तूप विणवाया व्है। वैराट रौ विहार'र दभू लेरा इण री साख भरै कै मौर्य स्थापत्य रा की नामून राजस्थान मे ई चुणीज्या। मौर्या रै पछै वीजी-वीजी जातिया अर जनपदा रै स्थापत्य रा कित्ताक नामून कठी कठै-कठै ठाइज्या व्हैला। उवा माय सू की छुट-पुट तौ अजुताई उवा मिळै। रैड मे चुणीज्योडा ईटा रा ढूढा, बीजक भाखरी ग्राळो गोळ मोळ मिन्दर, नगरी रौ गोळ मटोळ थम्बौ इण समै रै स्थापत्य रा इज नामून है। इण समै स्थापत्य माथै धरम री धोस अणूती ही। इणा भगारा सू इज सार कडिज्यो कै वैदिक धरम अर उण रै पौराणिक रूप री अठै घणी चलण ही। गुप्ता रै समै अठै स्थापत्य भळै घणौ निखरियौ, मुकुन्दडा'र नगरी रा मिन्दर इण री साख सारू अजुताई ऊवा है। गुप्ता री वेळा ग्रोसिया, अमभेरा, जगत, कल्याणपुर अर मण्डोर मे स्थापत्य रै कारोगरा ग्राप रा हूनर भाडिया। गुप्ता रै पछै सिरोही, सागानेर, किराडू, नगडा, नीलकठ, दिलवाडा, हर्स-माता, चन्द्रावती, भीमगढ कृरण-विलास रा मिन्दर चुणीज्या। इण मिन्दरा मे नागर अर द्राविड सैलिया रौ भपको दीसै। इणा ने भेळ री वेसर सैली रा नामून कै सका।

८वी सू १२वी सदी रै विचै कित्ताई सठा-सेंठा गढ थापीज्या जिका अजुताई भगार व्है ज्यू ऊबा है। पैलपरात चित्तौडगढ चुणीज्यो जठै पैला मौर्य अर गुहिल, पवार'र सोळकी राजावा चुणाई कराई। अर्बुद, जवालीपुर (जाळोर) अर मण्डोर रा गढ इण वेळा इज विणिया। दुर्गा रै सागैई इण समैं कैई नुवा नगर ई बस्या। इण समैं री अेक चावी करण जोग वात आ रैई कै इण वेळा पुराणै ढूढा री जागा नुवा नगर थापण री रीत जोर पकडियोडी ही। आघाट, विसालपुर, नागदा, जावर, नाडोळ अर आमेर ताई पाछा थापी-ज्योडा नगर गिणीजै।

इण वेळा री अेक खास चोखाई आ है कै अेकण पाडै गढा री चुणाया हूवती। लडण-भिडण अर मरण-मारण रा जतन हूवता तौ वीजै कानी मिन्दर

चुणाईजता अर आगोत्तर माथै मनन् करीजता। विश्णु, सूर्य, सिव, दुर्गा अर सवित रै भात-भात रै रूपा रा अणगिणत गाड रै भावा सू भरियोडा मिन्दर विणिया। किराड़ू, छोटी सादडी, बाडोली, कल्याणपुर, औसिया अर जहाज-पुर रा मिन्दरा री चुणाई इण वेळा इज हुयी। किराड़ू मे सिव मिन्दर अर चित्तौड रौ सूर्य मिन्दर फूटरापै रै पाण जग-चावा है तौ अथुना, औसिया अर नागदा रै मिन्दरा मे 'आत्मोन्नति' रा भाव ठुसीज्योडा है। इण वेळा रा मिन्दर घणा मोटा जगी हूवता थका स्थापत्य री सगळी चोखाया सू टिपाटिप भर्या है। जैनिया रै सगळै मिन्दरा मे इग्यारवी सदी मे ठायोडौ आबू मे विमलसा रौ मिन्दर आपरै फूटरापै रै पाण घणोइज सराईजै। १३वी सदी रौ वास्तुपाल रौ मिन्दर अेडौ रै अेडौ है। बेरना, घुम्टिया, बसाळिया, विचला आगणा अेडी कारीगरी अर सावचेती सू घडीज्या कै देखणिया सरावताई को थाकै नी। भाठै मे इत्ती चुतराई सू घडाई हुयी अर माडणा खुदीज्या कै नास्तिक ऊ नास्तिक नें ई थुथकौ नाखणौ पडै।

तैरवी सू अठारवी सदी रै बिचलै राजस्थान मे पैला करता मारकाट कम मची। बारलै हमला रौ जोखम ई नी जित्तोइज हो। पण तोई मालदेव, कुम्भा, सागा, प्रताप, जसवतसिह अर दुर्गादास जैडा भिडमल इण समैइज हुया। कैई नुवा गढ थापीज्या, गढा मे नगर रा नगर विणीजण ढूका, मैल-माळिया अर स्थापत्य रा अलेखू नामून विणीज्या। कुम्भलगढ, तारागढ, आमेर, सीवाणा, जोधपुर, बीकानेर अर रणथम्बोर जैडा जबर गढ इण वेळा ई जलमिया। जाळोर, आबू अर चित्तौड दुर्ग मे कैई कोट कागरा जुडिया। बूदी, आमेर अर जोधपुर नगरा री नीव इण वेळा इज धरीजी। कुम्भा रै पछै रै स्थापत्य माथै मुगला रा रग घणा चढियोडा रैया। वेल-बूटा, फूल-पाखडिया, भात-भात री झीणी-झीणी जाळिया री माडत सारू चेजारा अर घडाईदार कैठी कित्तीई पाणत र खप्पत करी व्हैला। डेलाण, झरोखा, थम्बा, तोडा, खडपा, पन्छेटिया, गोखडा, छाजा, छवणा, तोरण, कवळिया'र सेमूदै अगवाडै ने भात भात रै माडणा सू जडण री रीत इण बेळा अणुतौ जोर पकडियोडी ही। थडा, देवळा, अर जगी छतरिया ई विणीजण ढूकगी। दिलवाडा, रणकपुर, अेकलिंगजी, आबू, रिसभदेव केसरियाजी, नाथद्वारा, अर परसराम महादेव जैडा नामी मिन्दरा री चणाई इण समै इज हुयी। इणा माय सू घणकरा भाखरा री ऊची टेकरिया माथै चुणीज्या। जैनिया रा सगळा सू घणा तीरथ-धाम राजस्थान मे इज है। जैन धरम पाळणिया रा तौ टोळा'र टोळा गुजरात अर

माळवै जेड़ै पाड़लै मुलका सू अठै आय पूगा। इतिहास लिखारा मानै कै बारलै मुलका मे हमलावरा री जाव वधियो जद जैनी आपरै गीत-पात री रुखाळ मारू अठै रै जूझारा री छीया मे आय लुकिया। पण पैला रै इतिहास सू जुडयोड़ै साधना रो मनन् करिया इण बात मे घणी गाड को लगावैनी। इण मे पैलड़ी खोट तो आ दीसै कै अठै घणकरा मरण-मारण खातर माथा वधियोड़ा, क्षात्र धरम पाळणिया राजा हा जिणा रै अहिंसा गळै उतारणो तो अळगो, नैडोज को फटक सकतो नी। पछै ठेंट सूई राजस्थान मे जैनिया रो जोर रैयो। हमला सू पैलाई जैनी राजस्थान मे घणा हा अर उणा आप रा कैई नामी मिन्दर अठै चुणा लिया हा। जैनी अवसाया मू घणो लाड राखै। जीव रै दोरपै सारू वे अेडी ठोड जोवै जठै लोलै चैर रूखा रो नाव ई नी व्है, पाणी री तगी, लू रा खैखाड़ बूतोळिया'र तावड़ो अणूतो, मोटै सैरा रो टोटो, मानखै रा टोळा कम, घणी अवसाया, साप-बिच्छू अर जैरी जीवा रो जोर डोल ने कैई दोराया रेवै अर अणूतो पचणो पड़ै। पौराणिक धरम पाळणिया ज्यू हिमालै री तराई ने अमोल गिणता ज्यू इज राजस्थान री आप धरतीज जैना मारू तीरथ ज्यू ही। सो दोराया जोवणियै जैना ने राजस्थान सोनै-रूपै रो व्है ज्यू दीसतो अर अेवड रा अेवड धरम री सेव खातर अठी उछरता। सैरा गढा गावडा ने छोड ढाणिया रै कावड ऊ कोसा आगा मरुखेतर रै ठेंट गरभ मे, ऊची टेकरिया माथै अर रोई मे अेडा जबर मिन्दर चुणीजण री बीजी की वजै नी व्है सकै।

तैरवी सू अठारवी सदी रा स्थापत्य रा नामून यू तो अेकूकै ऊ वत्ता है पण कीर्तिस्तम्भ इणा मे सगळा सू भारी है। नव खण्डा रै इण कीर्तिस्तम्भ रै उपरलै दो खण्डा ने छोड बाकी रै साता माथै देवी-देवतावा री इत्ती मूरता टाकी-हथोडै सू जडीजी कै कळा रा कित्ताई पारखी तो इनै मूरता रो आखो म्यूजियम इज गिणै। लारै जावता निरवाळी छब रा राजसमन्द उदैसागर अर पिछोळा जेडा झील-तळाव खिणीज्या। झील-तळावा रै अैन बिचै हथणी री जागा मैल-माळिया चुणीजण री रीत इण वेळाइज पडी।

भात-भात री मूरता ठावण मे राजस्थान ठेंट सू इ धकली पात मे रैयो। थेट प्रागेतिहासिक जुग री मूरता अठै मिळी है। माटी री कैई मूरता काळीबगा सू मिळी अर अेडीज आहड अर गिलूड सू हाथै लागी। पछै तो भात-भात रै देव-देविया री माटी, भाटै अर धाता री कित्तीई मूरता राजस्थान रै खुणै-खुणै सू मिळगी। अे मूरता कै तो घणकरी जैन धरम री अर कै

पछै हिन्दु धरम री है। गुप्ता सू पैला री नोह मे लादोडी साढी तीन गज री यक्ष री मूरत देखण जोग है। रैड, वैराट अर नगर मे मिळणकी मूरता ई गिणावण जैडी है।

महिसासुरमर्दिनी री मूरत तौ देखणकी आख्या ने झपकी ई को खावण दै नी। गुप्ता सू पैला री मूरता गान्धार'र मथुरा दोनुई सैलिया री है। गुप्ता रै समै री मुकन्दडा कृस्णविलास, भीनमाळ, मण्डोर अर पाली सू कैई फूटरी-फूटरी मूरता मिळी है। कामा री विस्णु, कृस्ण अर वलराम, मण्डोर री गोवर्धनधारी कृस्ण री मूरता तौ अैडी जवर है कै उणा रै जोड री बीजी तौ अजुताई सामी आईज कोयनी। रगमहल री सिव-पार्वती री मूरत, साभर ने कल्याणपुर री सैव धरम अर नळियासर री दुर्गा री मूरता ई घणी सराईजै। गुप्ता पछै मूरता घडण रौ हूनर भळै हल्ली तेजी पकडी। भरतपुर, करौली, मेनाल, दवोक अर धोलपुर सू लादोडी मूरता मे भाव अर रस रा गुण थापीज्या। सिणगार, मोह अर जडावट मे किराड् सू मिळी मूरता घणी भौ ताई ओळखीजै। कैई कैई मूरता मे तौ डर, रोद्र अर भूण्ठापणै रै रसा रा चितराम घडीजिया। घणकरी मूरता मे डील री चोखाई अर न्यारै-न्यारै अगा रै फूटरापै रै सागै ई आध्यातम रै भावा ने ई भेळा राखिया है। आबू मे दिलवाडै रै मिन्दर री मूरता देखणियै ने लखावै जाणै घडाईदार रै हाथ मे टाकी हथोडा कोरा फूटरापै ने चावौ करण सारू ई उछळ-कूद मचाई व्हैला। रणकपुर, जोधपुर, लोद्रवा अर जैसलमेर री मूरता मे भरपूर कलाकारी झाडियोडी है। राजस्थान री अे मूरता जगमग करता वे रतन है जिणा रै बूथै माथै भारत री सस्कृति अेडा पळका मारै जिण सू चकरवम्व हूय अन्दाळी खायोडा वारला इण रतना ने उचकावण सारू काला हुयोडा भटकता भचीड खावता फिरै।

राजस्थानी चित्रकळा री चोखाया वखाणता आनन्दकुमार स्वामी, परसी ब्राउन, अेन० सी० मेहता वीजा इण ने चावी करण रा जतन करिया। पैला-पैला तौ मिनख इनै सुगायबौ करिया पर हमै तौ सगळा इण री धाक अगेजली है। अजकालै चित्रकळा रा सगळा पारखी अगेजै कै भारत री सस्कृति री लाठाई अर मालदारी मे राजस्थानी चित्रकळा रौ ई घणौ हाथ है। अेडैइज सेठै खूटा रै पाण तौ आ सस्कृति अजुताई आपरी मरोड रै सागै गरवजोग विणियोडी ऊबी है।

राजस्थानी चितरामकळा रा ठेट जूना नामून तौ चम्बलघाटी री

खोवा, काळीवगा ग्रर ग्राहुड रै मळवा सू मिळै। मटका, मोहरा ग्रर ठावठीकरा माथै मण्डियोडा लीगटा इणा मे भेळा है। चितरामकळा रा नामून बीजी कळावा विचै सोरा ग्रळिया-गळिया व्है सो घणी वूढी चित्रकळा मे तौ रिन्द-रोई मे नाचणियै मोर ग्राळी हूय ऊवी रैई। पागी घणा माथा खपाया, कित्ताई ग्रवन्धिया पण कठैई वावड को लागानी। सो घणै जुनै चितरामा री तौ कोई खोज है ने कोई खवर।

तिब्बती लामा तारानाथ 'बुद्धधरम' नाव री पोथी मे मरुखेतर रो चितरामकळा रौ थोडोक इसारौ कर्‌यौ है। तेरवी सदी सू पैला-पैला पाटण, गुर्जरात्र ग्रर मरु देस मे चित्र उकेरण री रीत ही। जैसलमेर रै जैनग्रन्थ भण्डार मे कल्पसूत्र सैली रा हवाला मिळै है। तेरवी सदी रै राजस्थान ग्रर गुजरात मे चित्र पोथिया री रीत जोरा माथै ही। कालकाचार्यकथा प्रवचनसरोवदर वृतिसार (नेमीचन्द्र री रच्योडी), सवज्ञपदकामनासुत्तचूर्णि, कुमुददेव सूर्यभरत वाहुवल री रच्योडी जैनपटली उत्तराध्ययनसूत्र, न्यायतात्पर्यटीका नेमिनाथचरित, *नीसितचूर्ण बीजी घणी चोखी जैन चित्र पोथिया* है। जैन धरम सू न्यारी वालगोपालस्तुति, दुर्गासप्तसती जैडी चित्र पोथिया रचीजी। घणकरी इण भात री पोथिया गुजरात मे लाधण सू इण जैन सैली रौ नाव गुजरात सैली पडगियौ। ग्रागै ग्रावता जद ग्रायूणै मुलक मे कैई जागा ग्रै पोथिया लाधगी तौ इनै पछिम सैली सू मिनख ग्रोळखण लागा। उण वेळा रौ साहित ग्रपभ्रस साहित वाजतौ सो चित्रकळा री ग्रा सैली कठैई-कठैई ग्रपभ्रस सैली कैइजण ढूकगी।

न्यारा-न्यारा रजवाडा मे जिण गत रा चितराम उकेरीजिया उण भात री चितरामकळा उठै पनपगी। राजस्थान मे बारह भात री चितरामकळावा पळी फळी पण इणा माय सू जोधपुर, बीकानेर, ग्रलवर, जैपुर, किसनगढ, मेवाड ग्रर वूदी री चितरामकळा घणी सराईजी। इण सगळी कळावा ने रग, किनारी, जीव-जिनावरा, डील, गेणा गाठा, गावा-लत्ता ग्रर ग्राख्या री विणगत रै पाण न्यारी ग्रोळख सका। जोधपुर ग्रर बीकानेरी चितरामा मे पीळै पट्ट रग रौ जोर तौ जैपुर रा चितराम लीलै चैर रग मे कुरियोडा, उदैपुर रा रातै चट्ट रग मे तौ किसनगढ रा धोळै घट्ट रग मे, वूदी रा केसरिया, ग्रलवर रा ई लीलै चैर रग मे उकेरीजियोडा। जोधपुरी ग्रर बीकानेरी चितरामा मे ग्राम्बै रौ रुख, जैपुर मे पीपळी, किमनगढ मे केळै, कोटी वूदी मे खजूर ग्रर ग्रलवर मे ई पीपळी कोरीजती। जोधपुर-बीकानेर रै चितरामा मे

वागलौ, चील, ऊट कोरीजता तौ जैपुर-अलवर मे मौर, उदैपुर मे हाथी कोटा-बूदी मे बतख, हिरण अर बघेरौ लारै वेक-ग्राउड मे कोरीजता। जोधपुरी चितरामा मे आख बिदाम जेडी, जैपुर मे मछली जेडी, उदैपुर में हिरण री आख ज्यू, किसनगढ मे कबाण दाई, बदी मे ग्राम्बै रै पत्तै ज्यू अर बीकानेर मे खजन पखेरु जेडी उकेरीजती। इणी तरै चितरामा मे कारी-ज्योडै मिनख लुगाया री डील, नाक, हाट, हिचकी, भोपणा, आगळिया गाबा-लत्ता अर गेणा-गाठा ई न्यारी-न्यारी भात रा कोरीजती। सो जाणकार सारू भात-भात रै चितरामा री ओळख करणी छिन रौ काम।

पैलपात मेवाड मे अजन्ता परम्परा री रग चढियौ अर मेवाडी चितरामकळा फळण फूलण ढूकी। मेवाड सैली री जोरदार छब चितौड रै मैलमाळिया मे मण्डयोडी दीसै। १७वी सदी पूठै मेवाडी चितरामकळा माथै मुगली चित्र सैली री छाप बैठण ढूकगी अर तर-तर आ छाप घणी खुलासै दीसण लागी। इण वेळा मेवाड मे जैडा सातरा चितराम माडीजिया उडा पछै भळै को ठाईज्यानी। मेवाड मे कुरयोडै चितरामा मे पळापळ करतै पीळै-पट्ट अर रातै चुट्ट रग रौ जोर घणोइज रैयौ। ठीग्गणै आग्गै रा मिनख, गोळगट्ट मडौ, तीखी तच नाक अर मिनाक्षी आखिया रा चितराम मेवाड सैली री ओळखाण जोग बाता है। इण चितरामा रै गाबा-लत्ता, गैणा-गाठा अर हेटल्लौ चौकई मुगली चित्रा दाई माडीजतौ।

मेवाड आळो कळाई पैला-पैला री मारवाडी चित्रकळा माथै अजन्ता री छाप घणी लखावै। १५वी सदी ताई मारवाट मेई जैन चित्र पोथिया रचीजगी ही जिका माऊ कैई तौ अजुताई जैन भडारा मे ठावी पडी है। मुगला स् मारवाड रै धणिया रा हेत वधिया जद मुगल चित्रकळा रौ रग टीपै टीपै अठैई चढण लागौ। अठै उतारीज्योडै भागवत रै चित्रा मे कृष्ण अर अर्जुन रा गावा मुगला जैडा है जद कै उणा रै मूडा रै चितराम मे मारवाडी आग्गौ टिपकै। गोपिया रा गाबा-लत्ता तौ मारवाडी है पण उवा ने गैणा मुगली पैराईजगिया। अजीतसिह रै समै चित्र तौ कैठी कित्ताई कोरीजिया पण खखोळी खावती कामणिया, होळी रमती लुगाया अर सिकार रा चितराम फूटरा घणा गिणीजै। विजैसिह'र मानसिह री वेळा भक्ति रै मागैई सिणगार रस रै चितरामा रौ जोर रैयौ। मारवाडी सैली मे गठियोडौ डील अर मूडै रै फूटरापै माथै जोर राखीजतौ। मिनखा रै गलमुच्छा अर ऊची-ऊची पागडिया कोरीजती। मारवाडी चितैरा पैला रातै अर पीळै रग

रा अर १८वीं सदी मे सोने जेड़ै रग रा नाऊ हा।

मारवडी सैली सू अेक नुवी रूप बीकानेरी सैली रै रूप मे फूटी। इण माथै थोड़ोक पजाबी कलम री रगई चढियो। अठै रा धणी मुगला माथै लवाऊ दिस मे घणा अवळिया सो अठै रै चितरामा माथै दिखणी असर ई दीसै।

पैला-पैला बूदी रै चितरामा मे मेवाड़ी सैली री लटकौ आवै। सोळवी सदी रै लारलै पाड़ै राव सुरजाण रै समै अठैई मुगली असर लखावण ढूकै। अठा रा चितरामा मे मिनख री डील तो मेवाड़ी पण नदि-नाळा अर रूखड़ा बूदी रा कोरीजता। कोटा मे बूदी रै लगू-ढगू चित्र इज बिणता।

फूटरापौ भावण री आग ने किसनगढ सैली भपकौ ई को गावण देनी। सामन्तसिह रै समै आ सैली गती मातो हुई। सामन्तसिह नागरीदास नाव स ई चावौ है। नागरीदास माथै वैस्णव धरम री धोम तो जमियोड़ी ही अर मागैई बणीठणी कैईजण आळी अेक लुगाई री रगई अणूती चढियोड़ी। नागरीदास अर बणीठणी राधा-क्रस्ण रै रग में रळियोड़ा हा। सो किसनगढ रै चितरामा में कळा, प्रेम अर भक्ति री भेळापो लखावै। इणा चितरामा में लाम्बै आगै आळा लम्बूतरै मूडै अर तीखी नाक रा मिनख लारली वेळा रा मुगली गाजा ठठायोड़ा माडीजता। घणै डाळा अर पत्ता भू लड़ालूम्बा हुयोड़ा रूख, लारै दीसतो गोदोळा नाव री तळाव, राजदरबार अर मेल-माळिया री राता रै सागैई बणी-ठणी अर नागरीदास रा चितराम कोरीजता। किसनगढ सैली मे कोरीजियोड़ा बणीठणीजी रा चितराम राजस्थानी चित्रकळा रा सातरा अर फूटरापै मे अजोड नामून गिणीजै। इणा चितरामा ने भारत रै बीजै किणी खुणै रै चितरामा री जोड मे ऊभावा तो इक्कीस इज दीसै। नाक मे नथ अर मिनाक्षी आखिया कोरिजियोड़ा चितराम अेड़ी जबर है कै उनै गिणाया बिना राजस्थानी चित्रकळा री लेखौ आधो इज रैय जावै। बणी-ठणी री ओ चितराम चित्रकळा रै पारखिया ने अेड़ो सबावणो लागै कै घणकरा तो उनै लियोनार्डो डा विन्सी रै जग चावै चितराम मोनालिसा री जोड री चितराम अगेजण ने त्यार है। इण समै रा घणकरा चितराम निहालचन्द नाव रै चित्रकार रै ठायोड़ा है।

जयपुर अर अलवर री चित्रकळा माथै ई मुगली रग री जोर रैयौ। नाथद्वारा मे मेवाड़ी भात सू न्यारा चित्र कोरीजता।

इत्ती भात री व्हैता थका ई राजस्थानी चित्रकळा मे अेकठपणै रा

अलेख् भाव साव सामा दीसै । घणकरी भाता मे पळापळ करता रगा सू राग-रागणिया, वारामासा, भागवत, रामायण अर गीत गोविन्द री बाता कोरी-जती । राजस्थानी चित्रकळा री सगळी कूपा अजन्ता सू फूटोडी हूवण सू अे कूपा भारत री चित्रकळा रै सागै जुडगी । घणकरी राजस्थानी सैलिया थकै जावता मुगली गावा लत्ता अर गैणा-गाठा अगेज लिया ।

राजस्थान मे सस्कृत प्राकृत, अपभ्रस, डिंगल, राजस्थानी, हिन्दी अर बीजी भासावा रै वधापै सारू कित्ताई जतन हुया । भणाई अर साहित रा काम अठै रै चावै सेरा मे ठैट सू ई व्हैता आया है । सातवी अर आठवी सदी मे चित्तोड'र भीनमाळ ने भणाई-गुणाई री सातरी ठोडावा मानीजण रा कित्ताई सावून मिळै । चित्तौड मे जिनभट्ट, हरिभद्र, इलाचार्य, वीरसेन, जिनभद्र सूरी जैडा मानीता विद्वाना आपरी पण्डताई सू मानखै ने जगावण जोग कारज साजिया । भीनमाळ मे बृह्मगुप्त, माघ, माहुक, धाइल्ल, मण्डन अर माघ री आल-औलाद मे इज माधव जेडै धुरन्दरा आप री भणाई-गुणाई'र सूझ री धाक जमाई । अजयमेरू, जबालीपुर, त्रिभुवन गिरी, आबू, मेडता चन्द्रावती, मालवनगर'र चाटसू जैडा नगरा भणाई री परम्परावा ने सागेडी जमाया राखी । अठै आधै-आधै सू भणाई रा भूखा आय'र आपरी भूख-तिस भान्गता । चौवाना रै समै तौ विद्वाना रै वासै सारू न्यारी बृह्मपुरी बिणयोडी ही । राजस्थान मे वेद, धरम, साहित, व्याकरण, गणित, वैदगी, ज्योतिसवीजी री भणाई जोरा माथै ही । भणाई री चावी पोसाळा ने राज री छीया मिळ-योडी रैवती । नगर सेठ अर बीजा नामी वाणिया ई आणै-टाणै इण पोसाळा रै पईसा-टक्का सू आडा आवता । मध्यकाल मे जद सगळै देस मे परम्परा सू चालती भणाई की मोळी पडी तौ राजस्थान माथै ई इण रौ असर पडियौ । तोई राजस्थान मे खाटी-मीठी भणाई री पुराणकी रीत पळवौ करी ।

राजस्थान रै साहितकारा मे सातवी सदी मे भीनमाळ मे हूवगिया माघ घणा चावा है । माघ सिसुपालवध नाव री पोथी रची । सस्कृत रा धुरन्दरा रौ कैणौ है कै काळीदास री उपमावा महाकवि भैरवी री 'अर्थ गूढता' अर दडी रौ 'पदलालित्य' अजोड हो । सस्कृत रा सगळा जाणकार इण तीनू चोखाया रौ भेळ माघ रै सिसुपालवध मे बतावै । सो कैइज सकै कै काळीदास, भैरवी'र दडिन रा सगळा गुण भेळा हूय जिण अेक मिनख नै सूपीज्या उण महाकवि माघ रै साहित सिरजण री जागा राजस्थान इज हो । धिन है इण माटी ने जिण सस्कृत साहित रै इण सगळा सू जोग साहितकार ने

पनपण'र इत्ती ऊंचाई ताई पोचण जोग वातावरण निजर करियौ। सिमुपाल-वध रै नव सर्गां मे सस्क्रत साहित रा सगळा ग्राग्वर काम मे लिरीज्या। माघ री जाणकारी ग्रर मालदारी ने नी तौ ग्रजुताई कोई पग सकियौ है ग्रर नी उण ऊंचाई माथै पूगण जित्तौ गाड किणमे ई हूवण री उडीग है।

भीनमाळ ने इज गणित'र ज्योतिस रै जाणकार बृह्मगुप्त ने जलम देण रौ जस है। बृह्मगुप्त ने ग्रार्य भट्ट'र वराहमिहिर री जोड मे ऊगाय सका। उण बृह्मसिद्धान्त, खडखाद्य, ग्रर ध्यानगृह जेडी नामी पोथिया रची। चित्तौड रै हरिभद्रसूरी समराइच्छकथा, धूर्ताख्यान, कथाकोस, मुनिपतिचरित, यसोधर चरित्र, जेडी जबरदस्त पोथिया रची। ६वी सदी मे माघ री ग्राल-ग्रोलाद मे इज माहुक हुवौ जिण हारमेखला नाव री पोथी लिखी जिकौ लारै जावता घणी सराईजी। हरिभद्रसूरी रै चेलै उद्योतम सूरी ७७८ ई० म जवालीपुर मे कुवलयमाल कथा लिखी। इण सू उण समै रै साहित'र सस्क्रति रौ भान तौ व्हैइज सागे ई प्रतिहारा रै इतियास रा कित्ताई ग्रळजा काडण मे ई ग्रा पोथी घणी ग्राडी ग्रावै। घणकरा इतिहास लिखारा तौ इण री साख रै पाण जबालीपुर नें इज प्रतिहारा रै वडेर री ठोड गिणै'र उद्योतम सूरी ने वत्सराज रौ दरवारी बतावै। ६६२ ई० म भीनमाळ मे इज सिद्धर्सीसूरी ग्रापरी पोथी उपमितीभवप्रपचकथा लिखी। जिनेस्वरसूरी लीलावतीकथा'र कथाकोस प्रकरण जेडी पोथिया लिखी। इण जिनेस्वर रै चेलै ग्रभयदेव भगवतीसूत्र री टीका करी। जिनभद्राचार्य सुर-सुन्दरी कथा ग्रर जैनचन्द्रसवेगरगसाला, जिन वल्लभ ग्रापरी सघपट्टक ग्रर पिंडिविसुद्धप्रकरण, जिनदत्तसूरी ग्रापरी उपदेस-निकायनसार ग्रर चरमरी नाव री पोथिया लिखी। मेवाड रै हरिसेण धरम-परीक्षा नाव री पोथी माड'र नाव कमायौ। राजावा म साहित रै मुजब तौ कोरै राजस्थान ईज नी सगळै भारत मे महाराणा कुम्भा री ठौड निरवाळीज है। कुम्भा सगीतराज सगीतमीमासा जेडी महताऊ पोथिया लिखी, चाडी-सतक री व्याख्या करी। गीतगोबिन्द माथै रसिक प्रिया नाव री टीका लिखी जिकौ कुम्भा रै इज बूथै री बात ही। मेवाडी भासा मे ई कुम्भा ग्राप पोथिया रची। कुम्भा रै समै उणरी छत्तर छीया मे सस्क्रत ग्रर प्राकृत भासावा रै सागै ई राजस्थानी रौ ई घणौ बधापौ हुयौ। कुम्भा रै समै रच्योडी पोथिया राजस्थानी रौ पैलडौ रूप मानीज सकै। धणकरा विद्वान तौ पीठवामीसण, मेहडू खगार ग्रर बारहठ हरिसूर ने कुम्भा रा दरवारीज गिणै। कुम्भा री वेळा रै साहित री ग्रेक भळै खास बात ग्रा है कै उण वेळा सिल्प कळा जेडै तकनीकी

विसया माथै पोथिया रचीजी। मडन री नाव इण मे सगळा सू चावौ है। मडन रै निरयोडी प्रामादमडन, राजवल्लभमडन, देवतामूर्तिप्रकरण, वास्तुसार, रूप-मडन, अर वास्तुमडन जैडी पोथिया है। मडन रै छोटै भाई नाथा वास्तुमजरी नाव री पोथी इण वेळाइज रची। उद्धारघोरणी, कलानिधि अर द्वारदीपिका नाव री पोथिया रौ लिखारौ मडन रौ बेटौ गोविन्द इज गिणीजै। सो कुम्भा री छत्तर छीया मे सगीत'र सिल्प कळा जैडा तकनीकी विसया माथैई घणौ साहित लिखीजियौ।

कुम्भा रै पछै मेवाड मे तौ जाणै साहित सिरजण री रीन इज मण्डगी। अमरसिंह री वेळा री सस्कृत री सातरी पोथिया मे अमरसार अर अमर-भूसण घणीज चावी है। राजसिंह ने अमर करण री काम रणछोड भट्ट अमरकाव्य'र राजप्रसस्ति लिख र कर्‌यौ। रणछोड भट्ट राणा री करणी रै सागैई, गावालत्ता, गैणा-गान्ठा, तुलादान, दिवाळी जौहर'र धरम रै अलेखा रीत पात रौ वखाण कर नै आपरी लिखाई रौ सास्कृतिक मोल अणूतोइज वधा दियौ। सतरवी सदी मे इज सदासिव रै २२ सर्गा मे रच्योडै राज-रत्नाकर मे उण वेळा रै मानखै अर रीत पात रौ वखाण है। मेवाड मे इतिहास री अलेखा पोथिया लिखीजी जिका राजस्थानी रीत-पात'र इतिहास सारू तौ अमोल है इज भारत रै इतिहास री कित्तीक लुकियोडी वाता इणा रै पाणइज उगाडीज सकी।

मारवाड ई साहित सिरजण मे मुडदार को रेयोनी। महाराजा गजसिंह चवदै कविया ने लाख पसाव वखसिया। गजसिंह रौ आसरौ मिळिया ई हेमकवि गुण भासा अर केसवदास गुणरूपक जैडी साहित री पोथिया रचण जोग हू मकिया। जसवतसिंह साहितकारा ने तौ लाड-कोड सू राखतौ इज आपोआप सागेडौ लिखारौ हो। आनन्द विलास सिद्धान्तसार, अनुभव प्रकास'र सिद्धान्त बोध आप जसवतसिंह रै रचियोडी मानीजै। सूरत मिश्र नरहरिदास जैडा मानीता कवि'र नैणसी जैडा इतिहास लिखारा जसवतसिंह रै समै इज जग उजास कर्‌यौ। अभयसिंह री वेळा तीन भारी लिखारा हुवा। अेक जगजीवण जिण अभ्योदय लिखियौ, बीजौ सूरजप्रकास रौ रचणहार करणीदान अर तीजौ वीरभाण जिण राज रूपक रौ सिरजण कर्‌यौ। मानसिंह री वेळा तौ साहित रा भील-तळाव ओटै इज हुगिया। नाथ चरित्र कृस्ण विलास, पचवती, मानविचार घणी चावी पोथिया है। बाकीदास री मानज-सोमण्डन अर अैतिहासिक वाता राजस्थानी इतिहास अर रीत-पात रा

भरणाइज है।

पैला जागळ नाव सू चावो बीकानेर ई साहित सिरजण में ओछो को उतरियोनी। राजपूताने री कर्ण कैईजणियो रायसिंह आप महोत्सव अर ज्योतिस रत्नाकर रच्या। गगानन्द मैथिल री कर्णभूसण, ई घणोई चावो है। अनूपसिह आप न्यारै-न्यारै विसया मायै पोथिया रची। अनूप विवेक, काम प्रबोध अर गीत गोविन्द री अनुपोदय टीका घणी सराइजी। मणिराम दीक्षित मद्रराम अनन्त भद्र जैडा मानीता विद्वाना कित्तोई पोथिया लिखी। अनूप-सिंह रै दरबार मे साहजहा रै सगीतकार जनार्दन भट्ट री बेटो भावभट्ट हो जिण सगीत मायै केई रचनावा करी। जोरावरसिंह रै समै वैदकमार, रसिकप्रिया अर कविप्रिया री टीकावा हुई। गजसिंह री वेळा गोपीनाथ 'ग्रन्थराज' लिखी।

हाडोती रा राजा ई साहित री सेव करण मे फोरा को उतरायानी। सूरजमल मिश्रण १८६७ ई० मे वसभास्कर लिख'र बून्दी कोटा रै सागैई सैमूदै राजस्थान रो इतिहास लिखियो। डूगरपुर मे सोळवी सदी रा भट्ट सोमदत्त घणा चावा हुया। यू इज वासवाडा समरसिंह अर कुसालसिंह री वेळा साहित सिरजण हुयो। प्रतापगढ मे प० जयदेव हरिविजय नाटक रच'र प्रतापगढ री नाव उजागर कर्यो। किसनगढ रै लिखारा मे नागरीदास जी आप इज वृजभासा रा जोग कवि मानीजै।

अपरच साहित सिरजण तो अजुताई आखिया आगै है पण अठै घणकरी भणाई मूडे रटीजती। चारण भाटा री कवितावा पीढी दर पीढी घोकीजता-घोकीजता ठा नी कद फुर्र हू जावती सो अठा रै साहित सिरजण री थाह तो कठैई हुइज कोयनी। छोटी-मोटी पोथिया तो अठै गिणती मे ई को आय सकैनी। अेकलै राणा कुम्भा री वेळा कोरै खर्तर गच्छ कै तपागच्छ आळा री पोथिया भणीजण ढूका तो आखी उमर इज गळ जावै, तूण्डो आवैइज कोयनी।

राजस्थानी ख्याता तो खैर निरवाळी हैइज। अे राजस्थान रै सागैई भारत रै इतियास रै कित्तेई मुद्दा नै उजागर करै। सगीत अर सिल्प जेडै हुनरा मायै अलेखा पोथिया अठै रचीजण सू राजस्थान री साहित अमोल अर